मोहरिते सच्चवयणस्स पलिमंथू (ठाणंगसुत्त, ५२९)

अनुसन्धान - ८७

प्राकृतभाषा अने जैनसाहित्य विषयक संपादन, संशोधन, माहिती वगेरेनी पत्रिका

संपादक : विजयशीलचन्द्रसूरि

कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य
नवम जन्मशताब्दी स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि - अमदावाद

December - 2021

मोहरिते सच्चवयणस्स पलिमंथू (ठाणंगसुत्त, ५२९)
'मुखरता सत्यवचननी विघातक छे'

अनुसन्धान

प्राकृतभाषा अने जैनसाहित्य-विषयक
सम्पादन, संशोधन, माहिती वगेरेनी पत्रिका

८७

सम्पादक :
विजयशीलचन्द्रसूरि

श्रीहेमचन्द्राचार्य

कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी
स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि
अहमदाबाद
डिसेम्बर - २०२१

अनुसन्धान ८७

आद्य सम्पादक : **डॉ. हरिवल्लभ भायाणी**

सम्पादक : **विजयशीलचन्द्रसूरि**

सम्पर्क : C/o. **अतुल एच. कापडिया**
A-9, जागृति फ्लेट्स, पालडी
महावीर टावर पाछळ, अमदावाद-३८०००७
M. 99798 52135
E-mail : s.samrat2005@gmail.com

प्रकाशक : **कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि, अहमदाबाद**

प्राप्तिस्थान : (१) **आ. श्रीविजयनेमिसूरि जैन स्वाध्याय मन्दिर**
१२, भगतबाग, जैननगर, नवा शारदामन्दिर रोड,
आणंदजी कल्याणजी पेढीनी बाजुमां,
अमदावाद-३८०००७
M. 99798 52135 (अतुल एच. कापडिया)

(२) **सरस्वती पुस्तक भण्डार**
११२, हाथीखाना, रतनपोल,
अमदावाद-३८०००१
फोन : ०७९-२५३५६६९२

प्रति : २५०

मूल्य : ₹ 200-00

मुद्रक : **क्रिश्ना ग्राफिक्स, किरीट हरजीभाई पटेल**
९६६, नारणपुरा जूना गाम, अमदावाद-३८००१३
(मो. ९८९८६५९९०२)

निवेदन

संशोधन एटले दन्तकथाओ अने यथार्थ इतिहास ए बेने नोखा पाडी आपती प्रक्रिया.

कोई विशिष्ट व्यक्ति पेदा थाय के कोई विलक्षण अने महत्त्वनी घटना घटे, एटले तेनी गुणगाथा वर्णवती साची वार्ताओ साथे थोडीक काल्पनिक के कल्पनाप्रेरित कथाओ पण प्रचलित थाय छे. साची कथाओ अहोभाव जन्मावनारी होय, तो तेना ओठे ओठे घडाती कल्पनाकथाओमां चमत्कारनुं तत्त्व उमेराईने ते श्रद्धा (के अन्ध विश्वास) प्रेरनारी कथाओ बनी जाय. जते दहाडे आ कल्पनाकथाओ लोकहैये एवी तो दृढपणे जडाई जाय के ते साचा बनेला इतिहासनुं रूप धारण करी ले; बल्के तेने ज लोको इतिहास समजी ले छे. आवा इतिहासमां सत्य अने कल्पनाओ – बन्नेनी एवी तो भेळसेळ थई होय छे के कालान्तरे एमांना तथ्यांश अने काल्पनिक अंश–बेने जुदा पाडवा ए मुश्केल काम बनी रहे छे. आ मुश्केल कार्यने सफलतापूर्वक करी आपे तेनुं नाम संशोधन. अलबत्त, आवुं संशोधन पण परम्परागत जनमानस स्वीकारी ले एवुं हंमेशां नथी बनतुं. केटलीक वातो लोको स्वीकारी ले छे, तो केटलांक संशोधनो, ऐतिहासिक रीते साचां होय तो पण, लोको तेने स्वीकारता नथी; पेली कल्पनाप्रेरी रूढ मान्यताने ज वळगी रहे छे.

उदाहरणो पण जोईए आनां.

उपाध्याय श्रीयशोविजयजी तेमना गुरू पं. श्रीनयविजयजी साथे काशी गयेला, न्यायशास्त्रनुं अध्ययन करवा माटे; आ एक बनेली घटना छे. आ उपरथी एक एवी दन्तकथा रचाई के "विनुलाल (विनयविजय) तथा जसुलाल (यशोविजय) काशी गया; त्यांना पण्डितो जैन साधुने भणाववानी ना कहेतां होवाथी आवां छद्मनामे तेओ त्यां जईने भणी आव्या." अहीं जोई शकाय छे के 'नय विजय'नुं 'विनयविजय' थई गयुं (पात्र बदलाई गयुं), अने काशीना पण्डितो द्वारा जैन साधु माटेनो निषेध व्यक्त करवा माटे छद्मनाम (वेष पण)नी कल्पना थई.

आ दन्तकथा अद्यावधि चाली; अने हजी पण जूनवाणी मानस मां ते कथा ते ज रूपमां सचवाई पण छे. पण ज्यारे 'सुजसवेली भास' नामक ऐतिहासिकं कृति मळी आवी, अने श्रीपुण्यविजयजी तथा पं. सुखलालजीए तेना आधारे शोधीने स्थापित कर्युं के 'नय वि. अने यशोवि. काशी गयेला; ते पण मुनिना नाम-वेषमां ज', त्यारे पेली कथा काल्पनिक होवानी जाण थई. पछी ते दन्तकथानो प्रचार महदंशे अटक्यो.

तो एक अन्य उदाहरणमां- 'कल्याणमन्दिर' नामक संस्कृत स्तोत्र जैनोमां खूब प्रचलित छे; तेना रचयिता १२मी सदीना दिगम्बर जैनाचार्य कुमुदचन्द्र छे, ए इतिहास-सिद्ध हकीकत छे. परन्तु जैनोमां ते एटलुं बधुं लोकप्रिय छे के श्वेताम्बरोए ते स्तोत्रने सिद्धसेन दिवाकर सूरिनी रचना मानीने स्वीकारी लीधुं छे. हवे ''कुमुदचन्द्र'नुं नामाचरण स्तोत्रमां छे ज, तेनो शो उकेल? तो लोकमानसे कल्पना करी के 'सिद्धसेन दिवाकर'नुं पूर्व नाम 'कुमुदचन्द्र' हतुं.

अहीं केटलां तथ्यो उवेखायां छे अने केटली कल्पनाओने तथ्यात्मक मनाई छे, ते समजवा जोग छे :- १. दिगम्बर साधुनो श्वेताम्बर तरीके स्वीकार; २. १२मा सैकानी व्यक्तिने हजार वर्ष पाछळ लई जवाया; ३. सिद्धसेन दिवाकरनुं जे नाम नथी ते नामनी तेमना माटे कल्पना; ४. जे रचना जेनी छे तेनी न होवानी मान्यता, अने जेनी खरेखर नथी तेनी ज होवानी कल्पना.

ढांकीसाहेब समेत विविध संशोधकोए, बाह्यान्तर अनेक प्रमाणोथी आ तथ्य साबित कर्युं ज छे, छतां परम्परागत जनमानस आ संसोधनने नहि, पण दन्तकथाने ज प्रमाण गणे छे.

परन्त तेथी कांई संशोधन खोटुं न ठरे, ने दन्तकथा इतिहास न ज बने. मूळ वात एटली ज के संशोधन ए इतिहासमां भळी गयेली दन्तकथाओने जुदी तारवी आपीने शुद्ध इतिहासनी स्थापना करवानी महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया छे. जो संशोधक आ के ते पक्षमां के सम्प्रदायवादमां तणाई न जाय तो तेना हाथे यथार्थ इतिहास प्राप्त थवानी पूरी शक्यता रहे छे. अस्तु.

शी.

अनुक्रमणिका

पं. श्रीशीलशेखरगणिविरचित समवसरणस्तव	**मुनि शीलचन्द्रविजय** **मुनि निर्ग्रन्थचन्द्रविजय**	१
स्तोत्रविधा – २	**सं. उपा. भुवनचन्द्र**	७
शेठ मोतीशानो रास	**सं. गणि सुयशचन्द्रविजय** **गणि सुजसचन्द्रविजय**	१७
पंडितश्रीउत्तमविजयजीगणिविरचित स्वोपज्ञ बालावबोधसहित संयमश्रेणि गर्भित श्री महावीर जिनस्तवन	**सं. मुनि निर्ग्रन्थचन्द्रविजय**	३८
ध्यानविचारादि विचारसङ्ग्रह ।	**सं. सा. मैत्रीयशाश्री-देवयशाश्री**	६७
चार लघु रचनाओ	**सं. विजयशीलचन्द्रसूरि**	८६
आपघड्या संशोधक!	**कुमारपाळ देसाई**	९९
विहंगावलोकन	**उ. भुवनचन्द्र**	१०५
बे प्रकीर्ण रचनाओ	**शी.**	१०९

अवरणचित्र-परिचय

इलाचीपुत्र ए जैन परम्परानुं एक सुख्यात पात्र छे. ते श्रीमन्त श्रेष्ठीपुत्र होवा छतां एक नटडी पाछळ घेलो बन्यो हतो, अने तेने माटे गृहत्याग करी ते नट-परिवार साथे रह्यो हतो. नटनी शरत हती के अमारी जेम नटविद्या आवडे तो कन्या मळे. ते शीख्यो. तेनी नटकला वखणाई. एक वार राजसभामां ते पोतानी कला दर्शावतो हतो, त्यारे तेणे जोयुं के राजानी बूरी नजर पोतानी प्रिया पर छे, अने तेथी ते नटने दाद आपतो नथी. तेने एम छे के नट थाके, पडे, मृत्यु पामे, तो आ स्त्री मने मळे. इलाची खिन्न थयो. एवामां तेनी नजर पासेना घरमां एक रूपवती स्त्री एक मुनिने मोदक वहोरावती हती, ने मुनिनी नजर नीची-नमेली ज हती. आ जोतां तेने चोट लागी, ने दोरडा पर ज वैराग्यभावे वासित थतां अने वासनाना भाव नष्ट थतां केवलज्ञान थयुं. ए कथाने वर्णवतुं आ भींतचित्र कपडवंजना एक देरासरमां छे.

पं. श्रीशीलशेखरगणिविरचित
समवसरणस्तव

– मुनि शीलचन्द्रविजय
मुनि निर्ग्रन्थचन्द्रविजय
(डहेलावाला)

तीर्थन्कर देवो माटे देवो द्वारा निर्माण पामतुं स्थापत्य एटले समवसरण। आ समवसरण सम्बन्धी रचनाओ बहु अल्प जोवा मळे छे। ते पैकीनी एक प्रान्जल रचना एटले प्रस्तुत कृति । अत्यार सुधी आ कृतिअे अज्ञातकर्तृक छे एम मनातुं हतुं । पण ज्यारे तपास करावी, हस्तप्रतो मंगावी, जोयुं त्यारे ख्याल आव्यो के आ तो अज्ञातकर्तृक नथी । आ कृतिनां कर्ता पं. शीलशेखरगणि छे. । श्री समवसरण साहित्यसंग्रह (सम्पा. मुनि धर्मतिलक वि.) अने शास्त्रसन्देशमाला (सम्पा. मुनि विनयरक्षित वि.)मां पूर्वाचार्य विरचित अथवा अज्ञातकर्तृक नामे प्रकाशित छे। तेमां क्यांक क्यांक अशुद्धिओ पण हती । एनुं हस्तप्रतनां आधारे सम्मार्जन करी अहीं पुनः प्रकाशित करवानो प्रयास थयो छे ।

आ समवसरणस्तवना ३४ श्लोक छे । ३३ श्लोक उपजाति छन्दमां अने ३४मो श्लोक शार्दूलविक्रीडित छन्दमां छे । समवसरणनी रचना कया कया देवो करे, केवी रीते करे, त्रण गढ, अष्ट प्रातिहार्य, द्वारपाल, १२ पर्षदा वगेरे अनेक विषयोनी सुन्दर छणावट अहीं थवा पामी छे ।

एक विशेष वात ११मां पद्यमां करवामां आवी छे के 'आ समवसरण प्रत्येक जिनेश्वरोनां पोत-पोताना हाथ प्रमाण मापवाळुं जाणवुं । अन्यथा आ बधा मापनी संगति नहीं थाय ।' आवी वात अन्यत्र प्रायः जोवा मळी नथी.[१] ।

अन्तिम पद्यमां प्रभुवीरने प्रार्थना करतां कवि समापन करे छे के ''आ समवसरण स्तवनी सम्यग् रचना करतां मारा वडे भावनी निर्मलताथी जे पुण्य समुपार्जन करायुं तेनाथी आ सकल भव्यजीवोनो समूह आपना शासनमां भक्तिमान् थईने अने सेंकडो कल्याणोने पामीने उत्कृष्ट अेवा निर्वाणनुं आलम्बन पामो'' ।

---

१. आ समवसरणनां माप वगेरे विषयोने समजवा श्रुतसंविभाग-१७ लेखांक – २६७ समवसरण स्तव अन्तर्गत केटलांक माप विशे विचारणा अने श्रुतसंविभाग-२० पत्रचर्चा – १७४ अवश्य पठनीय छे.

आ कृतिना कर्ता माटे 'जैन साहित्य का बृहद् इतिहास' भाग-५मां आम लखायुं छे के – ''शीलशेखरगणिने संस्कृतमें ३२ पद्यो में छन्दोद्वात्रिंशिका नामक एक छोटीसी परन्तु उपयोगी रचना की है इसमें महत्त्व के छन्दों के लक्षण बताये गये हैं ।

अन्त में इस प्रकार उल्लेख है : छन्दोद्वात्रिंशिका समाप्ता । कृतिः पण्डितपुरन्दराणां शीलशेखरगणिविबुधपुङ्गवानामिति ।

शीलशेखरगणि कब हुए और उनकी दूसरी रचनाएँ कौनसी थी, यह अभी ज्ञात नहीं है ।''

आ रीते कर्तानां सम्बन्धमां कोई जाणकारी न मळवाथी निराशा थई त्यारे अनुसन्धाननो ७७मो अङ्क हाथमां आव्यो । अेमां प्रथम कृति ज आ कर्तानी छे। तेना परिचयमां उपा. विमलकीर्तिविजयजी गणि (हाल आचार्य) लखे छे के ''आ रचनाना कर्ता वाचनाचार्य शीलशेखरगणि छे । तेओ श्रीदेवसुन्दरसूरि महाराजना शिष्य हता । तेमनो सत्तासमय १४मां शतकनो उत्तरार्ध छे । तेमणे अनेक स्तोत्रोनी रचना करी छे.'' ।

आटली माहिती मळ्या पछी पण ए अनेक स्तोत्रो क्यांथी मळे केवी रीते मळे अे खोजवानुं बाकी हतुं । जे हस्तप्रत उपरथी आ समवसरण स्तवनुं लिप्यन्तर थयुं हतुं ते हस्तप्रतमां स्तव सिवायनी बधी पंक्तिओ वांचतां लाग्युं के आ कृतिओ पण पं. शीलशेखरगणिनी ज होवी जोईअे । तरत ज कोबा पृच्छा करावतां – पत्र लखतां आ पत्रो जेमां हतां ते हस्तप्रतनां सम्पूर्ण पत्रो मळ्यां । तेने जोतां जोतां अनेक अनेक स्तोत्रो – स्तवनो संप्राप्त थयां छे, जेनुं हवे पछी धीरे धीरे प्रकाशन थतुं रहेशे... तेमां स्तोत्रनां अन्ते हस्तप्रतनां उपरनां हांसियामां आवो उल्लेख छे के– 'पं. शीलशेखरगणीनां विबुधपदात्प्राक् 'शीलयशाः' इति नामासीत्', जे विशेष नोंधपात्र छे । आ समवसरण स्तवनां लिप्यन्तर, शुद्धिपत्रक इत्यादिनो पूर्ण परिश्रम सा. श्री तत्त्वार्थमालाश्रीजीअे कर्यो छे ते माटे धन्यवाद । आ कृतिनी हस्तप्रत (झेरोक्ष) पाठववा बदल आ. श्री कैलाशसागर सूरि ज्ञानमन्दिर कोबाना संचालक गणने पण धन्यवाद ।

*

पं. शीलशेखर गणिकृतं
समवसरण स्तवनम् ॥

सत्केवलज्ञानमहाप्रभाभिः प्रकाशिताशेषजगत्स्वरूपम् ।
स्तवीमि तं वीरजिनं सुरौघा यद्देशनासद्म विचक्रुरेवम् ॥१॥
आयोजनं भूमितलस्य सम्मार्जनं व्यधुर्वायुकुमारदेवाः ।
तस्यैव गन्धोदकवर्षणेन, रजःप्रशान्तिं विदधुश्च मेघाः ॥२॥
सरत्नमाणिक्यशिलाभिरिद्धं, विधाय तत्राचलपीठबन्धम् ।
किरन्ति पुष्पाणि विचित्रवर्णान्यस्योपरि व्यञ्ज(न्त)रराजवर्गाः ॥३॥
वैमानिका ज्योतिषिकाश्च तत्र सद्भक्तिभाजो भवनाधिपाश्च ।
वप्रत्रयं रत्नसुवर्णरूप्यमयं विचक्रुर्द्युतिभासिताशम् ॥४॥
आभ्यन्तरे रत्नमये विशाले शाले विरेजुः कपिशीर्षकाणि ।
सुरैः प्रक्लृप्तानि मणीमयानि, सद्दर्पणाः किं ननु धर्मलक्ष्म्याः ॥५॥
विमध्यमे रत्नमयानि तानि हैमानि चामूनि बहिःस्थवप्रे ।
गव्यूतमेकं धनुषां शतानि षडेव तेषामियमन्तरुर्वी ॥६॥
बाहुल्यमेषां धनुषां त्रयस्त्रिंशदेकहस्तोङ्गुलकानि चाष्टौ ।
लसच्चतुर्द्वारविराजितानां तथोच्चता पञ्चधनुःशतानि ॥७॥
भूमेः सहस्राणि दशैव गत्वा सोपानकानां प्रथमोऽत्र वप्रः ।
धनूंषि पञ्चाशदतः समा भूः सोपानकानां हि ततो युतार्द्धे ॥८॥
द्वितीयवप्रोऽत्र तदन्तरेऽभूद्, विधिस्तु पूर्वोदित एव सर्वः ।
ततस्तृतीयोपि बभूव वप्रस्तदन्तरं वा मणिपीठबन्धात् ॥९॥
इत्थं सहस्रा दश पञ्च पञ्च, क्रमेण सालत्रयसङ्गतानाम् ।
सोपानकानां प्रमितिस्त्वमीषां, करैकमानोन्नतिविस्ताराभ्याम् ॥१०॥
प्रमाणमेतत् सकलं विबोध्यं, निजैर्निजैरेव करैर्जिनानाम् ।
देहादिवैचित्र्यत एव तेषां न चान्यथा सङ्गतिमङ्गतीदम् ॥११॥
भूमीतलादूर्ध्वमथाद्धर्युक्त- गव्यूतयुग्मं परितोऽधिरुह्य ।
तृतीयवप्रे बहुमध्यदेशे ज्योतिर्जटालं मणीपीठमासीत् ॥१२॥
विष्कम्भ[त]श्चापशतद्वयं तदौन्नत्यतः श्रीजिनदेहमानम् ।
विरेजुरस्योपरि चारुसिंहासनानि चत्वारि मणीमयानि ॥१३॥

मणीमयच्छन्दकसङ्गतानि चाशोकवृक्षं परितः स्थितानि ।
छत्रत्रयेणोर्ध्वगतेन चन्द्रप्रभासमानद्युतिना युतानि ॥१४॥
सुपर्वसञ्चारितपङ्कजेषु न्यासं दधानः क्रमपङ्कजानाम् ।
सिंहासनं स्वामिवरोथ भेजे पूर्वामुखं पूर्वगिरिं यथांशुः ॥१५॥
ततो व्यधीयन्त च शेषदिक्षु सद्व्यन्तरैस्तत् प्रतिरूपकाणि ।
चतुर्मुखस्तैर्भगवान् विरेजे चतुर्विधं धर्ममिवोपदेष्टुम् ॥१६॥
तत्पार्श्वयोर्यक्षवरा बभूवुः करे धरन्तो वरचामराणि ।
अभ्रंलिहाः स्वामिपुरो विरेजुर्महाध्वजा रत्नमयोच्चदण्डाः ॥१७॥
पुरो जिनेन्द्रस्य च धर्मचक्रचतुष्टयी चारुरुचिर्बभासे ।
प्रख्यापयन्ती भविनां मनस्सु सध(द्ध)र्मचक्रित्वमपूर्वमस्य ॥१८॥
आग्नेयिकामुख्यविदिक्षु तिस्रः, प्रत्येकमस्थुश्च सभाः क्रमेण ।
सुसाधवः कल्पसुराङ्गनाश्च, साध्व्यश्च धर्मश्रवणैकनिष्णाः ॥१९॥
ज्योतिःपतीनां भवनाधिपानां सद्व्यन्तराणां च विलासवत्यः ।
त्रयोपि ते देववरास्ततोपि, वैमानिका मर्त्यवराः स्त्रियश्च ॥२०॥
तिर्यग्वराः सिंहमृगाहिबभ्रु(भ्रू) - मुख्या द्वितीये शमिनोथ वप्रे ।
संत्यक्तवैरा भगवद्वचांसि पपुः कणेहत्य[1] कृतोर्ध्ववक्त्राः ॥२१॥
यानानि वप्रेप्यभवंस्तृतीये नियन्त्रणा नो विकथाभयं न ।
न मत्सरस्तत्र परस्परेणा-भवज्जिनेन्द्रस्य कटे[2]प्रभावः ॥२२॥
आसन् प्रतिद्वारमिहावलम्बि-ध्वजानि चञ्चन्मणितोरणानि ।
पञ्चालिका मङ्गलकानि चाष्टौ सत्पूर्णकुम्भा वरधूपघट्यः ॥२३॥
माणिक्यवप्रे प्रतिहाररूपः सौधर्मनाथो वनजाधिपश्च ।
द्वारेऽवतस्ते[स्थे] भवनाधिपोथ ज्योतिःपतिस्ते तु[3] विचित्रवर्णाः ॥२४॥
सौवर्णवप्रे विजया जया च, जिताभिधानाप्यपराजिता च ।
द्वारस्थिताः शस्त्रकरास्तथैता दौवारिकत्वं विदधुर्जिनस्य ॥२५॥
वप्रे बहिस्तुम्बुरुनामदेवः खट्वाङ्गनामा पुरुषोस्थिमाली ।
एते प्रतिद्वारमुपात्तदण्डाः क्रमाज्जटामण्डितमौलयोऽस्थुः ॥२६॥

---

१. यावत् तृप्तिः । २. आश्चर्ये । ३. व्यंतर ।

मणीमयच्छन्दक एक आसीदीशानकोणे जिनविश्रमाय ।
माणिक्यवप्रस्य बहिः सुरौघैर्विनिर्मितः किं नु निजैर्महोभिः ॥२७॥
सद्देशनासद्मनि वृत्तरूपे बहिःस्थवप्रस्य किल प्रदेशे ।
द्वे द्वे भवेतां वरपुष्करिण्यौ, कोणेषु चैका चतुरस्रके स्यात् ॥२८॥
गायन्ति नृत्यन्ति च देवसङ्घा जिनेन्द्रसंदर्शनतोऽतिहृष्टाः ।
प्रमोदमन्तःस्थमशक्नुवन्तो धर्तुं विमुञ्चन्ति च सिंहनादान् ॥२९॥
इन्द्रादिकः कोपि महर्द्धिकोथ समेति देवो यदि भक्तियुक्तः ।
सर्वं तदैकः कुरुते स यद्वा भक्तेः प्रभुत्वस्य च किं न साध्यम् ॥३०॥
अजातपूर्वं किल यत्र यत्र, महर्द्धिकः कोपि समेति देवः ।
इदं पुनस्तत्र भवेदवश्यं, सुप्रातिहार्याणि निरन्तरं स्युः ॥३१॥
जगच्चमत्कारकरैश्चतुस्त्रिंशताभिरामातिशयैः समग्रः(ग्रैः) ।
निर्वाणमार्गं प्रथयन् जनानां चिरं जगत्यां जयताज्जिनेन्द्रः ॥३२॥
स सर्वभाषानुगया जिनेन्द्रः सद्भाषया योजनविस्तरिण्या ।
सम्प्रीणयामास समस्तलोकं कोकं यथाऽहर्पतिरस्तशोकम् ॥३३॥
इत्थं श्रीजिनराजवीर! भवतः सम्यग् विधाय स्तवं
यत्पुण्यं समुपार्जितं किल मया भावस्य नैर्मल्यतः ।
तेनायं सकलोपि भव्यनिवहस्त्वच्छासने भक्तिमान्
भूत्वा भद्रशतान्यवाप्य च परामालम्बतां निर्वृतिम् ॥३४॥

॥ इति श्री समवसरणस्तवनं पं. शीलशेखरगणिकृतम् ॥

शुद्धिपत्रक

(आधार : शास्त्रसन्देशमाला)

मुद्रित पाठ	हस्तप्रत पाठ	शुद्ध पाठ
सद्यनि चक्रु	सद्य विचक्रु	बंने
बन्धनम्	बन्धम्	बन्धम्
व्यञ्जर	व्यन्तर	व्यन्तर
राजवर्या	राजवर्गा	बंने
ज्यौतिषिका	ज्योतिषिका	,,
बहिस्थ	बहिःस्थ	,,
ततोऽयुतार्द्धे	ततो युतार्द्धे	,,
तदन्तरेऽभूद्	तदन्तरेभूद्	,,
आग्नेयका	आग्नेयिका	,,
भुवना	भवना	,,
मुख्याः प्रशान्ता द्वितीयेऽथ वप्रे	मुख्या द्वितीये शमिनोथ वप्रे	,,
वप्रे तृतीये बभूवु	वप्रेप्यभवंस्तृतीये	,,
स्योत्कटप्रभावः	स्य कटप्रभावः	स्य कटप्रभावः
वतस्थे	वतस्ते	वतस्थे
भुवनाधिपो	भवनाधिपो	बंने
तुम्बर	तुम्बुरु	तुम्बुरु
पुरुषोऽस्ति	पुरुषोस्थि	पुरुषोऽस्ति
मुदात्त	मुपात्त	मुदात्त
जटा	जडा	जटा
मणिमय	मणीमय	मणिमय
एव	एक	एक
बहिस्थ	बहिःस्थ	बंने
मनासवन्तो	मशक्नुवन्तो	मशक्नुवन्तो
अजातपूर्वः	अजातपूर्वम्	अजातपूर्वम्
समग्रैः	समग्रः	समग्रैः
परामालम्ब्यतां	परामालम्बतां	परामालम्बतां

स्तोत्रविधा – २

– सं. उपा. भुवनचन्द्र

जैन ज्ञानभण्डारोमां स्तोत्र-स्तुति-स्तवनोनो जाणे अखूट भण्डार भर्यो छे. रचयिता आचार्य/मुनि/श्रावक कविओए स्तोत्रादिमां भक्तिभाव तो ठालव्यो ज छे, तेनी साथे उच्च विद्वत्ता / कवित्व / भङ्गिमाथी ए रचनाओने अलङ्कृत पण करी छे. स्तोत्रसाहित्यमां विविध विधाओने स्थान मळ्युं छे.

प्राचीन स्तोत्रोमां संस्कृत / प्राकृत / अपभ्रंश वगेरे भाषाओ प्रयोजाई छे. तेमां पण संस्कृत भाषानुं पोत/बंधारण बलवान होवा साथे नमनीय (लचीलुं) पण छे (जे कदाच अन्य कोई भाषानुं नथी). आथी कविओने शब्दलीला करवानो मोको मळे छे. अहीं स्तोत्रनी अनेक विधाओने संकलित करवानो प्रयास कर्यो छे.

अहीं त्रण स्तोत्र प्रस्तुत छे. 'हारबन्ध जिनस्तवन' एक प्रकीर्णपत्रमांथी मळ्युं छे. पत्र पर क्रमाङ्क ४ छे तेथी ए मोटी प्रतिनो भाग छे ए नक्की छे, परन्तु आ पत्रमां बे कृतिओ पूरेपूरी स्वतन्त्र रूपे लखाई छे. अन्ते भग्नपृष्टि० ए श्लोक तथा इति भद्रं, छ वगेरे समाप्तिसूचक सूत्रोथी छेल्ली पंक्ति अन्त सुधी पूर्ण करी छे. हारबन्ध०नी साथे गुर्वावली छे.

पत्रनी एक पूंठिमां २० पंक्तिओ छे. वच्चे चोरस खाली भाग छे. आ पद्धति ताडपत्र कालनी छे जे कागळ आव्या पछी पण लहिया / ग्रन्थकर्ताओए लांबा समय सुधी चालु राखी हती. वळी आ पत्रनी लिपि पण ताडपत्रकालनी नजीकनी जणाय छे. आ बधा उपरथी प्रतिनो लेखनकाल पंदरमी सदीथी पूर्वनो छे एम अटकळी शकाय. कुलमण्डनसूरिनो काल निश्चित थयो ज हशे, परन्तु ए तपासवानां साधन अत्यारे उपलब्ध नथी. प्रति सुन्दराक्षरी तथा शुद्ध छे.

आ प्रतिमां हारबन्ध० स्तवननी साथे गुर्वावली पण छे. आमां देवेन्द्रसूरिथी प्रारम्भ थयो छे, जेमां ज्ञानसागरसूरिनी पाटे कुलमण्डनसूरिनुं नाम छे. गुर्वावलीना कर्ता अभयवल्लभ गणी छे, ते ज्ञानसागरसूरिना शिष्य जणाय छे.

हारबन्धस्तवननी एक प्रति मांडवी (कच्छ)ना खरतरगच्छसंघना भण्डारमांथी मळी छे (क्र. १०४/१९८९). आ प्रति पण एक पत्रनी छे. पुष्पिका आम छे :

इति श्रीपञ्चतीर्थीयजिनानां हारबन्धस्तवनावली लिखिता श्रीदेवसुन्दरसूरि-शिष्येण कृता ।

आना परथी कुलमण्डनसूरि देवसुन्दरसूरिना शिष्य होवानुं फलित थाय छे. कृतिनी अंदर प्रशस्तिमां 'देवसुन्दरसूरिना चरणकमलना सेवक' एवो उल्लेख छे. कुलमण्डनसूरि ज्ञानसागरसूरि पछी पाट पर आव्या छे.

मांडवीवाळी प्रतिमां पांच स्तवन अलग करीने लख्या छे, श्लोक क्रमाङ्क जो के सळंग ज आप्या छे. हस्तप्रतमां स्तवनो जुदा पाड्या नथी. नाममां सामान्य फर्क छे. हारबन्ध शब्द बन्नेमां छे परन्तु हारबन्धनी रचना दर्शावी नथी.

अहीं संकलित अन्य बे स्तोत्र : शान्तिनाथ स्तव तथा वासुपूज्य स्तव - बन्ने शब्दालङ्कारथी खचित, उच्चकोटिना कवित्वथी युक्त रचनाओ छे. त्रण पत्रनी एक प्रतिमांथी मळी छे. बीजी रचना अपूर्ण छे, तेथी लागे छे के मूल प्रतिमां घणां पत्रो हशे, जेमांथी प्रथमनां त्रण छूटा पडी गया छे. २० x ६.५ सेमीना कदनां पत्रो छे. ताडपत्र कालनी पद्धतिए पत्रनी वच्चे चोरस खाली भाग छे, जेमां छिद्र पण छे. लिपि पण तापडत्र कालनी निकटनी छे. लिपि / लेखनपद्धति लेखनकलाना नमूना जेवी छे. सन्धि, अवग्रह, पदच्छेदनां चिह्नो, विरामचिह्नो तथा टिप्पणसूचक चिह्नो बहु सारी रीते आप्यां छे. हांसियामां टिप्पणो खूब व्यवस्थित रीते आप्यां छे. टिप्पणोना लीधे बन्ने स्तोत्र सुग्राह्य बन्या छे. टिप्पणोमां मूल कृतिना प्रतीको अमे ऊतार्यां छे, टिप्पणोमां आपेलां नथी.

कविनी विद्वत्ता चमके छे. कर्तानुं नाम मळ्युं नथी.

*

हारबन्धपञ्चजिनस्तवनम्

(आदिनाथस्तवन)

गरीयोगुणश्रेण्यरीणं प्रवीणं, परार्थे जगन्नाथधर्मे धुरीणम् ।
धराधारमादिप्रभो ! रङ्गभारं, स्तुवे त्वां बुधध्येय ! धौतारिवारम् ॥१॥
जवेनार्जवेनास्तमायाप्रमेया-मलज्ञान ! जन्मादिहीन ! प्रदेयाः ।
नमन्नैकनाकिन्नमन्दप्रमोदं, ममानङ्गनं मुक्तिलक्ष्मीविनोदम् ॥२॥
श्रीमन्नाभेयानन्दकन्दे प्रमोदं, सज्ज्ञानादिश्रीराश्रयं संप्रपेदे ।
वल्लीवारामं त्वां विभो ! सुप्रभावं, निर्वाणे भावद्वेषि वन्ध्ये यियासुं ॥३॥
दयोदारसंसारतीरस्थितारं, छितारम्भदम्भो (?) विभो ! वैरिवारम् ।
सुरासेव्य ! मे देव ! भिन्दन्निषीद, ध्रुवानन्दसुस्थे हृदि त्वं प्रसीद ॥४॥

(शान्तिनाथस्तवन)

रसाधार यातारते तारकान्ते, रजोभारसंहारका वैरशान्ते ।
सुधासार तापौघता सेयतेऽहं (?), प्रभावैर्महान्तं स्तुवे त्वामितेहम् ॥५॥
क्रमादुत्तमत्ते(क्षे)मधामन्नकामं, महामोहक्रव्यादकालं प्रकामम् ।
कदा त्वामहं विश्वराजत्वराजं, भजेयं विकल्पापहं ज्ञानभाजम् ॥६॥
भजन्ते सुरेशाः सयोषा विशेषा-स्तथा त्वामृजुप्राज्ञलोका अशेषाः ।
सृतं मे सुभोगैरतोऽष्टप्रकृष्ट - द्विषच्छेदसृष्टयै श्रये त्वामकष्टम् ॥७॥
परा येन गीस्तेनतीचारपञ्चा-श्रवासिन्(?) प्रपन्ना प्रपञ्चप्रपञ्चाः ।
रिरंसारसेऽस्मिंस्तमोहासमोहा-पहाः स्युर्नरि ज्ञानपुण्ये प्ररोहाः ॥८॥

(नेमिनाथ स्तवन)

सना नेमिमानौम्यकामं निकामं, परब्रह्मसंसाधकब्रह्मकामम् ।
सरङ्गं श्रितानां समस्तं प्रशस्तं प्रसादेन संजायते यस्य शस्तम् ॥९॥
वन्दन्ते त्वां धीरताया अगारं, रङ्गद्गङ्गागौरकीर्तेऽपहासम् ।
संहारायाधीश पापस्य तज्ज्ञा, ज्ञातज्ञेयानन्तचिद्भाकदम्बम् ॥१०॥
रन्कं हीनं दीनमेतं कृताशं, रक्ष स्वामिन् मानसे त्वां धरन्तम् ।
कष्टच्छेदे दक्ष मां विश्वनेता, तायिन्नन्तवैरवद्भ्यो वराकम् ॥११॥
रम्यः श्रेयःश्रीरसाबद्धरङ्गो, रङ्गद्भाग्याभोग तं रक्षकं त्वाम् ।
मोहश्यामारम्भभानो भजेयं, रक्षेरेतं तेन रक्षैककामम् ॥१२॥

तरीतुं भवाम्भोधिमेतं दुरन्तं, तरण्डायितं तात मन्ये लसन्तम् ।
मिषातीतमेकं तवैव प्रभावं, प्रभावन्ध्यमिथ्योर्मिमाथिस्वभावम् ॥१३॥

(पार्श्वनाथस्तवन)

यमीशं शमीशा रिरंसानिरासा निशंसं श्रयन्तीष्टनिर्वाणवासाः ।
रसादस्ति वामेय तं हारिदेहा रि(इ)ह त्वां वरज्ञान नन्तुं ममेहा ॥१४॥
रणादौ मुदा येन ते विश्वपावि, स्मृतं नाम रक्षाकरं विघ्नलावि ।
भदन्तस्य विश्वानि कीर्तिः पिपर्त्ति, प्रदत्तारिभङ्गं च तं श्रीरियर्ति ॥१५॥
निरीहेन येनापराजेय भेजे भवानीश नित्यं वतंसः स रेजे ।
हृताज्ञान ! सत्पार्षदादि प्रवादि-व्रजे बुद्धिहृद्योऽस्तवैशेषिकादिः ॥१६॥
भयालीनसिंहा भयेऽलोभमायं, भवन्तं जुषन्ते भदन्तं भवायम् ।
अलीकापहापेतलोपं श्रयन्ते, मतं ज्ञानतेजोयुता आश्रयन्ते ॥१७॥

(महावीरस्तवन)

जना ये विनीता अनीर्तिं सुनीर्तिं, भवन्तं यजन्ते पराभूतभीर्तिं ।
सुखं वर्धमानप्रभो ! भग्नलोभं, लभन्ते वसुभ्राजिते भूरिशोभम् ॥१८॥
गभीराशयाऽसारसंसारवासा रसः(?) पारगं तारताराङ्गभास ।
नमन्मानवानन्दसन्दर्भकन्दं, श्रये त्वामिनं दीनतप्तावमन्दम् ॥१९॥
तनुस्वप्रसादाशनैः सद्वतंस, द्रुतं सर्वतश्चूर्णमीशारिरंस ।
ममानादिकर्माष्टकग्रन्थिमुग्रं, समग्रं शमग्रन्थभेदैरुदग्रम् ॥२०॥
शिवाशैर्भवान् भव्यभावेन देवे-श्वरैर्यः शशिश्वेतकीर्त्ते सिषेवे ।
दिशाधीश ! मे मोहवीराः सवीरा-व्ययानन्ददिग्धा धियो धर्मधीराः ॥२१॥

(प्रशस्ति)

गणधर**जयानन्दः श्रीदेवसुन्दर**सुन्दरः,
क्रमकजजुषा सृष्टं पंचा रिहा समसंस्तवम् ।
सततमिव यः सारं हारं बिभर्त्ति निजे हृदि,
भजति सुभगं सानन्दं तं समग्रशिवेन्दिरा ॥२२॥
गर्जदूर्जितगजं न समीहे, भङ्गभोगभरमिष्टद किन्तु ।
राहि मे शुभव(म)नूनमनन्तं, तं दयैकपर पारग बोधिम् ॥२३॥

इति हारबन्धपञ्चजिनस्तवनं श्रीकुलमण्डनसूरिकृतम् ॥

शान्तिनाथस्तव

विश्वसेनिमभिनौमि मानतो, मानतोषविषयेष्वनाकुलम् ।
नाऽकुलंधि वचनं वसुप्रभं, सुप्रभञ्जनमनङ्गमाघवे ॥१॥

टि. मानतो = मानः पूज्य(:), तन्निमित्त(:)। नाकुलंधिवचनं = नाकुं (न आकुं?) अभिप्रायं लङ्घते इत्येवंशीलं वचनं यस्य स तथा, तम् । वसुप्रभं = वसु स्वर्णं, तद्वत् प्रभा यस्य, तं। सुप्रभंजनं = महावातं । अनङ्गमाघवे = अनङ्गजलदे ।

माघवेशपरिचर्यवर्णने वर्णनेतुरतुले तव प्रभो !
वप्रभोग ! विमुखाऽनधीश्वरा धीश्वरा अपि कथं पुमानयं ॥२॥

टि. माघवेश = हे पूजकजनकल्पपादप ! अनधीश्वरा = अधि अधिका ईश्वरा अधीश्वरा, नाधीश्वरा अनधीश्वराः, असमर्था इत्यर्थः ।

मानयं नृसुरशाल !, वास्तवे वा स्तवे तव कृतादरा गिरा ।
रागिरागहर ! मे विशेषिता शेषिताश्रव सुसेवया ऽनया ॥३॥

टि. वास्तवे = परमार्थभूते । शेषिताश्रव = शेषिताः क्षयं गता आश्रवा पापस्थानानि यस्य, तस्य सम्बोधनम् ।

या नयाश्रयपदं सु(शु)भावहा, भावहावपवनैरकम्पित !
कं पितः ! प्रतनुतेऽगिनामतो, नामतो जयति ते गिरासकौ ॥४॥

टि. सु(शु)भावहा = श्रेयस्करा । भावहावपवनैः = स्त्रीणां चित्तोद्भवो भावो, मुखविकारस्तु हावः, तावेव पवनौ वातौ, ताभ्यामकम्पितः, तस्य सम्बोधनम् । नामतो = प्रणामतः ।

रासकौमुदविधो कलावती, लीवतीव्रनरकाद्यसातकृत् ।
सातकृज्जयति गीः कविप्रिया, विप्रियापहृतिदक्ष नाथ ते ॥५॥

टि. रासकौमुदविधो = रासा निनादाः, त एव कौमुदं कुमुदसमूहः, तस्मिन् विधुः शशी, तस्य सम्बोधनम् । लाव० = लावः छेदनं, तेन तीव्राणि यानि नरकाद्यसातानि, तानि किरति विक्ष(क्षि)पति या सा तथा । विप्रिया० = विप्रियं व्यलीकं, तस्यापहृतिः अपहारः, तस्यां दक्षः, तस्य सम्बोधनं ।

नाथते शिवकनी सुसम्मदा सम्मदावश ! विभो ! कृपापदम् ।
पापदम्भविकलं तव क्रमाऽवक्रमानसकरं जनव्रजं ॥६॥

टि. सम्मदावश = सं सम्यक् मदा जात्यादयः, तेषां अवशो नायत्तः, तस्य सम्बोधनम् ।

सुसम्मदा = सुष्ठुरतिशयेन सम्मदो हर्षो यस्याः सा तथा । नाथते = याचते, अभिलषति इत्यर्थः । क्रमाऽवक्र० = त्वत्पादसरलचित्तकरं अद्वैतासेवकं इत्यर्थः ।

न व्रजन्ति सुधियोऽपि वैभवं वै भवन्तमुपवर्णितुं गवि ।
तुङ्गविस्तृतयशोभरावनी-राव ! नीचमतयः क्व मादृशाः ॥७॥

टि. वैभवं = प्रागल्भ्यम् । तुङ्गवि० तुङ्ग उन्नतः, विस्तीर्णः सर्वत्र प्रसृतो यशोभरो यस्य, तस्य सम्बोधनम् । अवनीराव = अवन्यां रावः शब्दो यस्य, प्रधानत्वेन ।

मा दृशा भवतु मेऽन्यदर्शनं दर्शनं रचय दभ्रु केवलम् ।
केवलं तव विभो निभालनं भालनन्ददमृतांशुबन्धुर ! ॥८॥

टि. अन्यदर्शनं = अन्यवस्तूनां दर्शनं । दर्शनं = सम्यक्त्वम् । केवलं = केवलहेतुत्वात् केवलं । भालनन्दद्० = भालमेव नन्दद् वर्धमानो यो, सो अमृतांशुः, तेन बन्धुरः ।

बन्धुरस्ति जगतां भवानतोऽवाऽनतोपकृतिपारिजात मां
जातमांहसमपास्य भूरिशो भूरिशोभिततनो भवादिन ! ॥९॥

टि. आंहसं = अंहसानि । अव = रक्ष । इन = सं. । भूरिः स्वर्णं, तद्वत् शोभितं तनुर्यस्य, तस्य सम्बोधनम् ।

वादिनः प्रमुदिता सुभासुरं, भासुरं भुवि वचो निशम्यते ।
शम्यतेश्वर सु(शु)चिप्रमा न केऽमानकेवलं(?) भवन्ति कोविदाः ॥१०॥

टि. प्रमुदिता० = प्रमुदिता आ समन्तात् सभायां सुरा यस्मात् । शुचिप्रमा = शुचिः निर्मला प्रमा येषां ते शुचिप्रमाः । शम्यते० = शमे साधुः शम्यः, तस्य ता लक्ष्मीः, तस्य ईश्वरस्तस्य सम्बोधनम् ।

को विदापि कलयत्यनारतं नारतन्त्र परिवर्ण्यमारसम् ।
मारसङ्गतिहरं भवान्तकं वान्तकन्दल ! महं जिनेश ते ॥११॥

टि. अनारतं = निरन्तरम् । नारतन्त्र० = नराणां समूहो नारं, प्रस्तावाद् गणधरसमूहः, तेन तन्त्रे आगमे परिवर्ण्यं, प्रशंसनीयं । आरसं = आरं शत्रुसमूहः, तं स्यति तनूकरोति, तम् । विदापि = ज्ञानेनापि । महं = महोत्सवं केवलज्ञानादिकमित्यर्थः ।

नेशते वसुमतीप्रकाशकं काशकम्बुरजनीशसन्निभम् ।
सन्निभं दलयदाशु शंशितुं शंसि तुन्दिलधियो यशस्तव ॥१२॥

टि. नेशते = न समर्थीभवति । तुन्दिलधियो - बुद्धिमन्त इत्यर्थः । सन्निभं - सतां व्याजः, तं सन्निभम् ।

शस्तवज्र ! विषमेषुपर्वते, पर्व ! ते मनसि कस्य कौतुकम् ।
कौ तु कं न तनुते तनूमतां, नूमतां मलविलोपजीवनम् ॥१३॥

टि. कौतुकं - कुतूहलम् । कौ - पृथ्व्याम् । कं - ज्ञानं । तनूमतां - प्राणिनाम् । नूमतां - नमनं नूः, स्तुतिरित्यर्थः । सा विद्यते येषां ते नूमतः, तेषां नूमतां तनूमताम् । मलविलोप० - मलः पापं, तस्य विलोपः, तत्र जीवनं जलम् ।

जीव ! नन्द ! जगति त्वमानभो मानभोगमदमत्सरामद ! ।
रामदत्तिशुभगावहा रिपो हारि पोत ! भवसिन्धुतारणे ॥१४॥

टि. मानभोग० = एतान् द्यति खण्डयति, तस्य सम्बोधनम् । रामदत्ति० - प्रधानदानेन शुभगमावहतीति । हारि - मनोहरं ।

तारणेभरथपूस्तुरङ्गमा- रङ्गमानस ! यशो विभासितम् ।
भासितं तव जयत्परं जना रन्जना विरचने विशारदं ॥१५॥

टि. तारणे० = ता लक्ष्मीः, रणं संग्रामः, इभा गजाः, रथाः स्यन्दनाः, पूः पुरी, तुरङ्गमा अश्वाः, तेषु अरङ्गं मानसं यस्य, तस्य सम्बोधनम् । भासितं - कान्तिः ।

सारदन्तसुनितम्बिनीचया नीचया चटुलयाऽक्षमालया ।
मालयास्तव मनो मनोहरं नो हरन्ति हतपुष्परोपक ! ॥१६॥

टि. सारा दन्ता यासां ताः सारदन्ताः, सुदन्त्य इत्यर्थः, ताश्च सुनितम्बिनीचयाः, नारीगणाः । नीचया = नम्रया । चटुलया वक्रया । अक्ष० नेत्रपरम्परया । हत० विनाशितकुसुमशर ! सम्बोधनम् ।

रोपकस्त्वमिह धर्मपद्धतेः, पद्धतेद्धमदनः कृपालयः ।
पालय प्रबल मोहराजतो, राजतो मम तवाज्ञयानिशम् ॥१७॥

टि. रोपकः = स्थापयिता । धर्मपद्धतेः = धर्ममार्गस्य । पद्धतेद्ध० = पद्भ्यां हतो मदनो येन । पालय = पाहि ।

यानि शङ्करसुखानि तानि मे तानि मेरुतुलितान्यकान्तया ।
कान्तया तव दृशा प्रसन्नया, सन्नया करुणया सनाथया ॥१८॥

टि. अकान्तया = अकं अज्ञानं, तस्यान्तो यस्याः सकाशात्, तया । सन्नया - सतां नयो यस्याः सकाशात्, सा तया (?) ।

नाथ ! यातवचनैस्त्वमीलितो, मीलितोऽहमिह मोहमुद्रया ।
मुद्र ! याचकसुरांह्रिपाकृतेऽपाकृतेतिविदते ततोऽव माम् ॥१९॥

टि. यातवचनैः = यातानि प्राप्तानि यानि वचनानि, तैः । मुद्र - मुदं राति ददाति । याचक० - याचकेषु सुरांह्रिपवदाकृतिः यस्य, तस्य सम्बोधनम् । अपाकृते० - अपाकृता ईतिवितिः येन, तस्य सम्बोधनम् ।

इति स्तुतिरियं सुराधिपतिभूमिपालासुरा-
वनम्यपदपद्म ! ते ललितकीर्तिसम्पद्यते ।
द्विरुक्तशिखिसंमिताक्षरमयी मया निर्मिता,
महोदयरमां तनु त्वमिन ! मे मनोभूतनुम् ॥२०॥

टि. ललिता मनोज्ञा कीर्तिसम्पत् मता या यस्य स तथा, तस्य सं० ।

श्री शान्तिनाथस्तवः

* * *

वासुपूज्यस्वामिस्तवः

देवदेवनरदेवदानवै-र्वंद्य बंद्यहितभावभेदकम् ।
वर्ण्यवर्णनमहं तनोमि ते, नौमि ते वासुपूज्य वसुपूज्यसम्भव!(?) ॥१॥

टि. बंदिश्च अहितभावश्च, तयोर्भेदकं, तस्य सम्बोधनम् ।

सत्कलाभर ! निशान्ततायिनं, सत्कलाभर ! निशान्ततायिनम् ।
त्वां नमामि यदहं जिनेश ते, नूनमक्षररमाकटाक्षितैः ॥२॥

टि. सत्कला० = सच्च तत् कं च ज्ञानं, तस्य लाभं राति, तस्य सम्बोधनं । निशान्तता०- नितरां शान्ततां याति, एवंशीलः, तम् । अक्षर० = मुक्तिकमला ।

विस्मयाकुलसनायकामर-श्रेणिसेव्यपदयुग्मदैवत !
विस्मयाकुलसनायकामर ! द्वादशाप्त ! भव सिद्धये सताम् ॥३॥

टि. विस्मया० = विगतः स्मयो येषां ते विस्मयाः, ते च ते आकवश्च अभिप्रायाश्च, तेषां लसनं उल्लसनं, तस्य यो लाभः, तं कामं अतिशयेन राति ददाति स विस्मयाकुलसनायकामरः, तस्य सम्बोधनम् । द्वादशाप्त ! = हे द्वादशम जिन !

सारमेयविदुरं गवि श्रुतं, तीर्थनाथ ! तव शुद्धबुद्धयः ।
सिद्धिकारि हतमत्तचित्तभू-सारमेय ! विदुरङ्गविश्रुतम् ॥४॥

टि. सारं प्रधानं च मेयविदुरं च वस्तुपरिच्छेदकं, तत् सारमेयविदुरम् । शुद्ध० = शुद्धा बुद्धिर्येषां ते । हतमत्त० = विनाशितमत्तमन्मथकुर्कुर, सम्बोधनम् । विदुः = वदन्ति । अङ्ग०

- अङ्गैः द्वादशाङ्गैर्विश्रुतम् विख्यातम् ।

त्वं जयोदरश(स)रः सरोरुह ! देहिनामशिवहारिसम्पदम् ।
देहि नाम शिवहारिशन्पदं, हेमकन्दलदलाङ्गदीधिते! ॥५॥

टि. अशिव० = अशिवहारिणी या सम्पद् सा, तथा ताम् । देहिनां - जीवानां । शिवहारि० = शिवस्य मोक्षस्य, हारि मनोहरं, यत् शं सुखं, तस्य पदं स्थानम् । नाम = कोमलामन्त्रणे ।

शुद्धमानससरोजसम्पुटे पद्मरागसमलोहिताङ्क !।
वासुपूज्य वस योगिनामना-पद्मरागसमलो हिताङ्कः ॥६॥

टि. पद्मरागसमं लोहितं अङ्गं यस्य स, तथा, तस्य सम्बोधनम् । आपद्० = आपच्च मरश्च मरणं, आगसं अपराधसमूहः, मला रागादयः, ते न विद्यन्ते यस्य स तथा । हिताङ्कः = हितानि अङ्गानि यस्य स तथा ।

सिद्धिसौधमधिरूढ ! मूढधी-ध्वान्तमर्यमवदग्निनां भवान् ।
सर्वदारुणदसारसावसः(शः), सर्वदारुणदशारसाऽवशः ॥७॥

टि. असारायाः साया (?) अवशः अनायत्तः । सर्वदारुण० = सर्वेषां दारुणा दशा यस्मात् तत् सर्वदारुणदशं, एवंविधं यद् आरं अरिसमूहः कामादिः, तत् स्यति तनूकरोति स तथा, तस्य सम्बोधनम् । अवशः - न विद्यन्ते वशाः स्त्रियो यस्य सः अवशः । अरुणत् - रुरोध ।

भावनामय ! जयाङ्गजामना भावनामजयाङ्गजामना ।
भावनामय जयाङ्गजा ! ऽमना-भावनामय जयाङ्गजामना ॥८॥

टि. भवानां समूहः भावं, तस्य नामो नमनं, तं यातीति, प्राप्नोति भावनामयः । अङ्गजामना = अन्गजेषु पुत्रेषु न मनो यस्य स तथा । अना = न ना अना, सिद्धिगतत्वात् वेदत्रयातीतं । अमनाः = नविद्यते मनो यस्य सोऽमनाः । सिद्धानां मनोहीनत्वात् । अङ्गजा = अङ्गेभ्यो जाता अङ्गजा, तां(?) । भावनामय - भावनया संसारानित्यवासनया निवृत्तः । भावनाम = भावेन तत्त्ववृत्त्या नामो नमनं यस्मिन् स तथा, तस्य सं० । गजामनाभावन = गजस्य हस्तिनो अमनं गमनं, तेन आभा सादृश्यं यस्य, एवंविधमवनं गमनं यस्य तस्य सम्बोधनम् ।

कोपमानयति पाकशासन-व्रात सेवितवचोक्षमोजसा ।
व्रातसेवि तव चोक्षमोजसाऽकोपमान ! यतिपाऽकशासन ! ॥९॥

टि. पाकशासन = इन्द्रः । व्रातसेवि - व्रतानां समूहो व्रातं, तत् सेवते सिञ्चति इत्येवंशीलं, तत् व्रातसेवि । यतिपाकशासनं = हे यतिप ! अज्ञानकमलाखण्डक !। चोक्षं = निर्मलमित्यर्थः । ओजसा = बलेन । अकोपमान = हे कोपमानरहित !

नन्द ! नाम वसुपूज्य ! गोविभो नन्दनाऽम वसुपूज्यगोविभो(:) ।
कांऽतकाय रुचिरस्तयाचितः, कान्तकायरुचिरस्तया चितः ॥१०॥

टि. वसुपूज्य = वसुभि स्त्रै(:) पूज्यः पूजनीयः । गोभिर्विभा कान्तिर्यस्य स गोविभः । तया चितः = तया कमलया चितो(तः) । अस्तयाचितः = अस्तं क्षिप्तं याचितं याच्ञा येन स तथा त्रिभुवनवांछितदायकत्वात्तस्य । कांत० ! = कं सुखं अन्ते समीपे यस्य स कान्तः, तस्य सम्बोधनम् । महानन्दप्राप्तत्वात् । कं ज्ञानं, तस्य आयः लाभः, तेन रुचिरः । कान्तकायरुचिः = कान्ता मनोहरा कायरुचिर्यस्य स, तथा ।

विश्वकामद जयासुताऽरण व्याधिकोपकदनादरोचित ।
विश्वकामद जया सुतारण व्याधिकोपकद नादरोचितं ॥११॥

टि. विश्वकामद = विश्वस्य कामान् मनोरथान् ददातीति तस्य सं० । व्याधिकोप० व्याधिश्च कोपश्च तयोः कदनं, तत्रादरः, तत्रोचितः योग्यः, तस्य सं० । विश्वकामद = विश्वकामान् द्यति खण्डयति विश्वकामदः, सम्बो० । अरणः = रणरहितः । व्याधिकः = विगता आधयो यस्य स तथा । अपकन्द = अपकं अपज्ञानं, तं द्यति, अपकद । नादरोचित = नादेन शब्देन रोचित ।

स प्रभावनिभ-दन्तकन्धर श्रीजयाङ्गज नतासुरामर !।
सर्ववन्द्य ! समपात्र मेदुर-ज्ञानतां किर कलाविदां वर! ॥१२॥

टि. सह प्रभावेन वर्तते सप्रभावः । निभदन्त० = नि नितरां भातीति निभं । दन्ताश्च कन्धरे च दन्तकन्धरं यस्य स तथा । सम्बोधनम् । श्रीजया० = श्रिया जयो येषां तानि तथा, एवं विधानि अङ्गानि द्वादशाङ्गानि यस्य स, तस्य सं० । स(श)मपात्र = उपशमनिधिः । किर = हर ।

स प्रभाऽवनिभदन्त कन्धर ! श्रीजयाङ्ग जनतासु रा...

टि. सप्रभ = सकान्ते । अवनिभदन्त ! = पूज्य । कन्धर = ज्ञानं धरतीति । राम = जनतासु लोकेषु रामं प्रधानं, मनोमतं राति ददाति इति, तस्य सं० ।

(अपूर्ण)

जैन देरासर, नानी खाखर-३७०४३५
जि. कच्छ, गुजरात

शेठ मोतीशानो रास

– सं. गणि सुयशचन्द्रविजय
गणि सुजसचन्द्रविजय

कृतिपरिचय

२०मी शताब्दीना उत्तरार्धनी, जैनशासननी एक पुण्यवन्त प्रतिभा एटले ज शेठ मोतीशाह । प्रस्तुत कृति तेमना चरित्र पर तेमांय विशेषे तेमणे बनावेली टूंकना ऐतिहासिक वर्णनने आलेखती दस्तावेजी कृति छे । कृतिकारे अहीं विविध रागो तथा देशीओनी १७ ढाळोमां शेठना टूंकनिर्माणना मनोरथथी मांडी तेनी प्रतिष्ठानी, तेना महोत्सवनी, तेमां पधारेला गुरुभगवन्तादिकनी तथा ते टूंकनी साथे प्रतिष्ठित थयेल अन्य जिनप्रासादोनी सुन्दर वर्णना रजू करी प्रान्ते ते जिनालयोमां प्रतिष्ठित प्रतिमाओनी संख्या वर्णवी कृतिनुं समापन कर्युं छे ।

कृतिनी रचना चैत्य-प्रतिष्ठाना तुरन्तना ज वर्षे थई होई तथा कृतिना – ''तेहना गुण अमिं जोइनिं गाया'' ए पद मुजब कृतिकारे जाते जोई ने ते प्रसंगनी वर्णना प्रयोजी होई ते वर्णना वधु चोक्कस तथा आधारभूत होवानुं कही शकाय। जो के कृतिगत विशेष विगतो माटे पण्डित वीरविजय रचित ''मोतीशानी टूंकना अंजनशलाकाना ढाळीयां'' साथे आने सरखावी शकाय ।

वाचकोना ध्यानार्थे कृतिगत केटलीक महत्त्वपूर्ण नोंधो तारवीने अहीं मूकीए छीए, जेना परथी कृतिनी ऐतिहासिकता समजी शकाशे ।

(१) त्यारे पालीताणामां गोहिल वंशना कांधाजीनुं राज्य हतुं तथा तेमना आदेशथी त्यांनो कारभार शेठ हेमाभाई चलावता हता (?) ।

(२) शेठ हेमाभाईने शत्रुंजय पर जिनालय निर्माण करवानुं पूछी शेठ मोतीशाह सं. १८८५ मां पालीताणा जग्या जोवा गया ।

(३) जिनालयनुं निर्माण कुन्तासरनी खीण पूरी करवानुं नक्की करी शेठे सं. १८८६ मां ते खीण पूरावनो प्रारम्भ कर्यो तथा तेनी देखरेखनुं काम वीरचन्द, रीखव, मोदी (?), वरता शाह तेमज झवेर ए पांच वाणोतरने सोंप्युं ।

(४) सहेर (मुम्बई?)मां शेठ मोतीशाहे धर्मशाळा बंधावी ।

(५) कुन्तासरनी खीण पूरवा शेठ अमरचन्दे मुम्बईथी घाटी(मजूरो)नो समुदाय

मोकल्यो, जेमणे भेगा थई गिरिराज पर सौ प्रथम कुण्डनुं निर्माण कर्युं ।

(६) खीण पूराया पछी मूळनायक प्रभुना चैत्यनिर्माणनुं कार्य शेठ मोतीशाहे रामजी नामना शिल्पीने सोंप्युं । तेणे सं. १८८८ पोष वद ०)) (अमास)ना ते जिनालयनुं खातमुहूर्त कर्युं ।

(७) शेठ मोतीशाहना चैत्य साथे अन्य १३ श्रेष्ठीओ वडे चैत्य बनाववानो प्रारम्भ करायो ।

(८) नूतन जिनबिम्बोना निर्माणनी व्यवस्था माटे शेठ मोतीशाहे पाटणना पोरवाड श्रेष्ठी पारेख देवचन्दने पालीताणा मोकल्या । तेमणे सं. १८९१मां जिनबिम्बोनुं निर्माण शरु कराव्युं ।

(९) मुम्बईना श्रेष्ठी कल्याण तथा कुंवरबाईना पुत्र शेठ बालाशाहने तेमनी काकी-माजी (?) रांमकुंवरबाईए पोतानी सघळी सम्पत्ति आपी सुकृतमां वापरवा जणाव्युं ।

(१०) शेठ बालाशाहे पत्नी जडावबाईना सूचनथी शत्रुंजय पर टूंक बनाववानी पोतानी भावना मोतीशाहने जणावी, तेमनी टूंकनी पूर्व दिशामां सं. १८९१ मां नवा चैत्यनुं निर्माण शरु कराव्युं । जेनी व्यवस्था तेमणे देवचन्द तथा लक्ष्मीचन्द ए बे भाईओने सोंपी ।

(११) जिनालयनुं निर्माण पूरुं थवा आव्युं त्यारे तेना प्रतिष्ठामुहूर्त माटे शेठ मोतीशाहे मुनि रूपविजयजीने पूछावता तेमणे प्रतिष्ठा माटे सं. १८९१नुं मुहूर्त श्रेष्ठ कह्युं, ज्यारे आनन्दशेखरे (?) सं. १८९२नुं मुहूर्त उत्तम कह्युं । जो के ए सिवायनुं त्रीजुं पण एक मुहूर्त प्रतिमा निर्माण कार्य बाकी होई सं. १८९३ नुं आव्युं। जोगानुजोग सं. १८९२ना भादरवा सुद १ना शेठ मोतीशाह देवगत थता सं. १८९३नुं महा सुद १०नुं मुहूर्त प्रतिष्ठा माटे निश्चित करायुं ।

(१२) प्रतिष्ठा-महोत्सवना मांडवा बांधवा शेठ खीमचन्दे मुम्बईथी पारसी कारीगरो बोलाव्या ।

(१३) आणन्दजी कल्याणजी (पेढी?)नी गादी के जे त्यारे पारेख दीपचन्द संभाळता हता तेओ सामैयुं लई संघवी खीमचन्द शाहने तेडवा सामा गया ।

(१४) प्रतिष्ठा-महोत्सवमां आववा माटे सं. १८९३ना पोष वद १ना निकळेलो संघ (मुंबईथी?) मुकाम करतो करतो पालिताणा पहोंच्यो त्यारे ते संघमां वीरचंद वगेरे अन्य जिनालय-निर्मापक श्रावको पण साथे जोडायेला हता ।

(१५) प्रासाद प्रतिष्ठा प्रसंगे निश्रा प्रदान करवा खरतरगच्छना जिनमहेन्द्रसूरिजी तथा तपागच्छ तेमज सागरगच्छना श्रीपूज्यो पधार्या, तो विधि कराववा गलो सा. (श्रावक ?) पधार्या । अहीं कविए तपागच्छादि गच्छोना आचार्योनां नामो टांक्यां नथी ।

(१६) आ प्रतिष्ठा-विधानक्रममां सौ प्रथम जलयात्राविधान करायुं । त्यार पछी अनुक्रमे ५६ दिक्कुमरी महोत्सव, इन्द्रमहोत्सव, निशालगळणुं वगेरे पांच (कल्याणक ?) ओच्छव पूर्वक ५००० प्रतिमानुं अंजनशलाकाविधान करायुं ।

(१७) मोतीशाहने देहरे-गभारामां आदिनाथ, नमि, विनमि सहित कुल २२ प्रतिमा, रंगमण्डपमां ६ प्रतिमा, शेठ-शेठाणीनी प्रतिमा, जिनालयमां पहेले माळे चौमुखजी, बीजे माळे ५२ प्रतिमा, त्रीजे माळे १० प्रतिमा, मूळ जिनालयने फरती १२८ देरीओमां थई १८६ प्रतिमा, रायण वृक्षतळे प्रभुनां पगलां तथा नाग-मोरनो पट्ट तेमज पुण्डरीक स्वामीना जिनालयमां १२० प्रतिमा स्थपाई होवानी विगत कविए अहीं टांकी छे ।

ते ज रीते त्यां रहेलां अन्य १५ चैत्योनी विगत टांकता कविए अनुक्रमे शेठ प्रतापलालने देहरे चौमुखजी मूळनायक तथा अन्य ४४ प्रतिमा, शेठ अमरचन्दने देहरे २३ प्रतिमा, फुलचन्दशाहने देहरे जिनप्रतिमा, शेठ देवचन्द पारेखने देहरे २८ प्रतिमा, शेठ सरूपशाहने देहरे १२ प्रतिमा, शेठ जेठाशाहने देहरे सहस्त्रकूट तथा अन्य १९ प्रतिमा, शेठ खुशालशाहने देहरे १९ प्रतिमा, शेठ सवाईशाहने देहरे १२ प्रतिमा, शेठ प्रेमचन्द रंगजीने देहरे १२ प्रतिमा, श्राविका गुलाबबाईने देहरे ७ प्रतिमा, शेठ हठीभाईने देहरे २३ प्रतिमा, नानजी चीनाईने देहरे १७ प्रतिमा, शेठ वीरचन्द शाहने देहरे १२ प्रतिमा, शेठ देवचन्द कल्याणजीने देहरे १७ प्रतिमा तथा चक्रेश्वरी मातानी प्रतिमा तेमज बालाभाईने देहरे २८ प्रतिमा तथा जिनालयने फरती ५२ देरीओमां थई १४० प्रतिमा होवानी विगत टांकी छे ।

(१८) प्रतिष्ठा माटे पहोंचेला संघमां सवा लाख माणस हतुं । तेनी इन्द्रमाळ शेठ खीमचन्दे महा वद ५ना रविवारे पहेरी ।

(१९) प्रसंग पूरो थता सर्व जनसमुदाये थोडा दिवस रोकाई फागुण सुद ९ना दिवसे स्वस्थाने पाछा फरवानी शरुआत करी ।

कृतिकार परिचय :

प्रस्तुत कृति शामजी (श्यामजी) विप्रनी रचना छे । कृतिनां अन्त्य पद्योमां

तेमणे पोतानो परिचय आलेखता पोताने पालीताणा गामना, मोढ ज्ञातिना चतुर्वेदी ब्राह्मण गणाव्या छे । वळी विशेषमां पोते राजगुरु (अटक के उपनामथी) तरीके प्रख्यात होवानी वात पण तेमणे अहीं टांकी छे ।

कृतिकारनी रचनाशैली अंगे विचारीए तो कृतिमां सारी एवी दस्तावेजी सामग्री होवा छतां कृति रसाळतानी दृष्टिए सहेज नबळी होय तेवुं लागे छे । वळी कृतिनुं आलेखन पण मोडुं थयुं होई लहियानी असावधानीने कारणे थयेली भूलो पण कृतिवांचनमां असुविधा सर्जे छे । कृतिनी अन्य हस्तप्रत मळे अथवा कृतिकारनी अन्य कृति मळे तो कृतिकारनी रचनाशैली अंगे विशेष जाणकारी मेळवी शकाय ।

प्रान्ते सम्पादनार्थे कृतिनी हस्तप्रत-नकल आपवा बदल श्रीलालभाई दलपतभाई विद्यामन्दिरना व्यवस्थापकोनो खूब खूब आभार ।

*

शेठ मोतीशानो रास

दुहा :- सासनदेवि विनवुं, कर जोडि करुं परणाम ।
अविचल वांणि आपजो, पुरो हियानि हाम ॥१॥
साची शासना तुंय सो, तुझ समान्य नहि कोय ।
मात्तम **कुंतासर**तणुं, गुण गावा इछा मोय ॥२॥
शक्ति तुझ परतापथी, जेह तुझ उपाय ।
मोतिसा जे कारज करे, लक्ष्मी सो घणुं साय ॥३॥
जे नर जुगमां जीतियो, जिनि भज्या जिनराय ।
गुण-गाथा जे सांभले, जेहनो बहु छे महिमाय ॥४॥

॥ ढाल-१ ॥ क्रीडा करि घरि आविओ - ए देशी ॥

घोहल राज करे जिहां, **पालिताणुं** नगरीनुं नाम रे ।
कांधोजी राजा कहिइं, सुंप्युं **हिंमाभाइ**नि काम रे ॥१॥ घोहल...
हकम हिंमाभाइनो, सहु लोकनि सुख रे ।
जैनपुरि सोह्यां(हा)मणि, गाममांहि नहि कोयनि दुख रे ॥२॥ घोहल...
एहवे समें मोतिसा आविया, हिंमो(मा)भाइ हरख्या मन्न रे ।
वात वगत जुगति करि, मुख्य बोल्या वचन रे ॥३॥ घोहल...

वलतुं मोतिसाइं पुछिउं, हिंमाभाइ करवुं किंम रे ।
जे होय तमारा मनमां, पइसा खरचों तिंम रे ॥४॥ घोहल...
संवत अढार पंच्यासिए (१८८५), मोतिसा जात्राइं जाय रे ।
पहिलि ढाल इंम **सांमजी** कहें, मनवंछित फल थाय रे ॥५॥ घोहल...

दुहा- **रांम पोर** नरखि [करी], नर्यणि **कुंतासर** जोय ।
मोतिसा के पइसा खरचिइं, मनवंछित फल होय ॥१॥
श्रीसिद्धाचल सास्वतो, प्राइं ए गिरिराज ।
साधु अनंता सिद्धि वर्या, भवजल तरवा झाझ ॥२॥

॥ ढाल-२ ॥ चौपइनी देशी ॥

रामपोर नरखों सहु, कुंतासरनुं मातम कहुं ।
कुंतासरनो गालो जेह, कोयथी पुर्यो न जाए एह ॥१॥
माजन सर्व विमासण करें, धन प्रभु इंम वांणि उचरें ।
अनेक संघ तिहां कनि आविया, कुंतासर कोयिं न पुराविया ॥२॥
पुरव उत्तरनुं माजन जेह, मनमां विचार करें एह ।
दक्षिण पश्चिमना श्रावक कहेवाय, कुंतासर कोयथि पुर्यो नवि जाय ॥३॥
आदिनाथना सेवक कहेंवाय, मोतिसानो छें महिमाय ।
मोतिसा मनमां विचार ज करें, **ऋषभदेव**नुं ध्यांन ज धरें ॥४॥
आपणें पइसानो नहि पार, द्रव्य खरचिइं लाख ब(बि)-च्यार ।
मोतिसाना मनमां हांम, वांणुतरुनिं सुंप्युं कांम ॥५॥
विरचंद रिषव केंवाय, **मोदि**नो बहु छें महीमाय ।
वरतासा.ना रूडा परणांम, मजूर तेडावि आपें दांम ॥६॥
जवेंरनिं भलांमण दिधि, चलावों कांम थायें सिधि ।
ए पांचे उपर कृपा घणि, सोभा वखांणुं मोतिसातणि ॥७॥
बीजा वांणोतर छें कांइं घणा, चलावें कांम नहि कोय मणा ।
संवत अढार छ्यासिया(१८८६)मांहिं, कुंतासर पुराव्या(वा) मांड्युं ज्यांहिं ॥८॥
द्रव्य जिणि खरच्युं घणुं, पुंन्य वखांणुं मोतिसातणुं ।
मुंबइ बंदरमां जेहनो वास, लोक करे सहु एहनि आस ॥९॥
अमीचंद कुल लिधों अवतार, जस घणों निं वलि दातार ।
जसरूपबाई पुत्रतणो, महिमा बे बांधवनो घणो ॥१०॥

निंमचंद भ्रात रूडा परणांम, द्रव्य खरच्यानि मोतिसानिं घणुं हांम ।
मोतिसानो पुत्र **खीमचंद** कहेंवाय, प्रथविमां जेहनो महिमाय ॥११॥
दीवालिबाई उदर अवतर्या, तिरथ सघला विधिं कर्या ।
साहिब सरिखा आवी करें सलांम, सेठ साहुकार मोतिसा नांम ॥१२॥
सहेरमां पइसा खरच्या घणा, सोभें धर्मशाला नहि कोय मणा ।
कांकरा वीणतां लागें वार, एणि रितिं द्रव्य खरचें अपार ॥१३॥
राजानिं पइसा आप्या घणा, सोभें सुत अमिचंदतणा ।
मागणजननिं आप्या दांन, कविजननां वधार्यां मांन ॥१४॥
कुंतासर पुराव्यानुं पाड्युं नांम, मजुरीथकि नवि थाय कांम ।
मुंबइ बंदिरि खेपिओ गयो, समाचार सर्वे कयो (ह्यो) ॥१५॥
कागल आप्यो **अमरचंद** हाथ, मेल्यो घाटिनो सर्वे साथ ।
एह वखांण एटलें रह्यां, हवे वखांण तिरथनां कह्यां ॥१६॥
माजन सर्वे तिहांथि चालिया, जात्रा करवा मोटि टुंकमां गया ।
बिजि ढाल श्रवणिं सुंणि, कहें **सामजी** गुण गाजो गुणि ॥१७॥

दूहो- महिमा मोतिसातणो, कुंतासर मांड्यां कांम ।
मजुरी(रा) आवि बहु मल्या, सहुनिं घणि छें हांम ॥१॥

॥ ढाल-३ ॥ चोपइनी देशी ॥

घाटि ते सर्वे आव्या, सहुनें मन घणुं भाव्या ।
कडिया कारिगर बहु, भलि परिं काम करे सहु ॥१॥
एक कुंड किधों सोभाए, नरखिनिं मनडुं मोहाए ।
दीसे टांकुं ते बहु सारूं, सहुनिं लागें छे प्यारुं ॥२॥
एणि रितिं कुंतासर पुराय, द्रव्य घणुं घणुं खरचाय ।
सलपि रांमजिनिं तेडाव्यो, मोतिसाने मन घणुं भाव्यो ॥३॥
रूडां देहरांनां कांम किजें, द्रव्य जोईइं ते मागिनिं लिजें ।
एक भुंयरूं ते सारूं करजो, हीयें हर्ष घणो घणो धरजो ॥४॥
आव्यो सलपिनो सघलों साथ, गजसुतर लाव्या हाथ ।
संवत अढार अठ्यासियो (१८८८) कहेंवाय,
मुलनायक-प्राशाद आरंभ थाय ॥५॥

पोष मास कृस्नपक्ष जेह, प्रतिपदा बुधवार तेह ।
ते दिवसिं खातमुरत कीधां, रूडो दन दांन बहु दि(दी)धां ॥६॥
देस-देसथि मजुरी आवें, गुण पुन्यवंतना गावें ।
त्रीजी ढालनी कहि सोभाय, कहें **सांमजी** साचों महिमाय ॥७॥

दुहा- सोभा सारी बहु बनि, नीत नवां जे कारज थाय ।
कुंतासर कांम चालतां, हियें हर्ष न माय ॥१॥
त्रि(त्र)योदश श्रावक आवि करि, मुख्य(ख) कर्यां वखांण ।
चतुर्दश प्रासाद कीजीइं, सहुनुं रहें परमांण ॥२॥
अमरचंद हठिचंद कहिइं, **फुलचंद नांनजी** कहेंवाय ।
परतापलाल विरचंद श्रावक, **सा. कर्मचंद** सुहाय ॥३॥
सवाइ प्रिमचंद देवचंद कल्यांण, पारेख देवचंद नांम ।
सरूपचंद देवचंद निमचंद, उत्तम करवा कांम ॥४॥
मोतिसानिं पूछियुं, तुमि सांभलो साहिब ।
अमनिं आगन्या दिजइ, हर्ष वाध्यो घणो अब ॥५॥
धन्य धन्य मोतिसा कहें, श्रावक तमारो भाव ।
देहरां आरंभ सुखिं करों, लीयो भवनो लाव ॥६।

॥ ढाल-४ ॥ झवेंरी साचों अकबर साहजी रे० – ए देशी ॥

कांम थया प्रासादनां रे, हर्षि गाय(या) गीत रे ।
पुन्यवंत पइसा खरचें रे, सुख पामें नित नित रे ॥१॥
देखो दुनियां सुख सोयलुं रे, पुन्य करो सहु कोय रे ।
मनवंछित फल होय रे, नजरिं नरखी जोय रे ॥२॥ देखो... (ए आंकणि)
जीवदयाने कारणें रे, अढलिक आपें अन्न रे ।
देस देसथि मजुरी आवें रे, जय जय बोले वचन(न्न) रे ॥२॥ देखो...
जैनशासन सोहामणो रे, जीव प्रतिबोध पावें रे ।
प्रासाद नयणिं नरखि रे, अघ सघलां जावें रे ॥३॥ देखो...
ए गिरिवर सोभंतो रे, मोक्षतणुं छें धांम रे ।
टुंक मोतिसानो बहु बन्यो रे, हुंसि पुरी हांम रे ॥४॥ देखो...
दिदारूं देहरा दीपतां रे, सियां कहुं वखांण रे ।
चोथी ढाल **सांमजी** कहे रे, होय पुन्यवंतनां परमांण रे ॥५॥ देखो...

दुहा- **पाटण**मां पोतें वसें, पारेख देवचंद नांम ।
पोरवाड श्रावक ए कइ(ही)इं, जे उत्तम करें कांम ॥१॥
मोतिसाइं कागल लखियो, पाटण प्रतिं एक ।
देवचंद पारेख जिहां रहें, विधि जांणें विवेक ॥२॥
कागल वांचि ततक्षिणि, ततपर साबदा थाय ।
मुंबइ बंदरिं आविया, सेठ पासिं जाय ॥३॥
सिद्धाचल जावो तुमो(मे?), बिंबना आरंभो कांम ।
जिनपडिमा जिन सारिखि, जिणेसर जेहनां नांम ॥४॥
[श्री]सिद्धाचल आविया, रूडा जेहना परीणांम ।
सलपी तेडावि सांमटा, बिंबना मांड्यां कांम ॥५॥

॥ ढाल-५ ॥ राग - जयतसरि ॥ चतुर सनेहि मोहना - ए देशी ॥

सलपी ते सांमटा आविया, जांणें सास्त्रविवेक रे ।
रात दिवस इहां रहें, एहनिं एहवि टेक रे ॥१॥ सलपी...
बिंबनि सोभा बहु बनी, भवि दरिसणिं जईइं रे ।
आराधिइं अरिहंतनिं, भवसायर तरिइं रे ॥२॥ सलपी...
जैननि जुगति जोया जेवी, समकितपणुं राखों रे ।
रोग सोग दूरिं टलें, अमृतरस चाखों रे ॥३॥ सलपी...
संवत अढार एकाणुंए (१८९१), बिंब ततक्षण कीधा रे ।
चढति कला एहनि, दांम सलपिनिं दीधा रे ॥४॥ सलपी...
बिंबनि ओपमा अति घणि, कहतां न पांमुं पार रे ।
पांचमि ढाल **सामजि** कहें, तरवा भव-संसार रे ॥५॥ सलपी...

दुहा - **बालोसाइं** मन विचारीयुं, ए द्रव्य घणो खरचाय ।
आपण द्रव्य खरचीइं, एहें[नो] घणो महिमाय ॥१॥
मुंबइ बंदरमां वास जेहनो, उत्तम करें कांम ।
सुत **कल्यांणजि**नो सोभें, बालोसा जे नांम ॥२॥

॥ ढाल-६ ॥ प्रथम-मच्छा-रूप धरिनिं, वाल्या च्यारे वेद वाला० ए देशी ॥

काकी माजी बालोसाना, **रांमकुंमरबाइ** जेह वाला ।
द्रव्य सघलुं बालोसानिं आप्युं, पुन्य-अर्थिं खरचो तेह मोरा वाला ॥१॥

उत्तम पुत्र **कुंवरबाइ**नो, बालोसा कहेंवाय वाला ।
एक दिन बेठा मेडिइं रे, रातिजगो ते थाय मोरा वाला ॥२॥
सेठ सेठांणि बिहु जणा रे, कर्या छे परियाण वाला ।
आपणे पइसा खरच्यानि इछा, इंम बोल्या मुख्य(ख) वाण मोरा वाला ॥३॥
जडावबाइ सेठनिं कहे छे, चालों सिद्धाचल जईइं वाला ।
टुंक एक उत्तम बनावि, आतम-उजल थईइं मोरा वाला ॥४॥
बालोसा पुछ्वानिं गया, मोतिसा कहो ते कि(की)जे वाला ।
अमारे पइसा खरच्यानि इछा, साहिब आगन्या दीजे मोरा वाला ॥५॥
वलतुं मोतिसाइं मन विचार्युं, एहनुं कारज सारुं वाला ।
सिद्धाचल जाओ तुमि, ए तीरथ तारु मोरा वाला ॥६॥
ए गिरिवर महिमा मोटो, सिया कहुं वखाण वाला ।
अमारो टुंक पुरवदिसि, एहथी पछिम जांण मोरा वाला ॥७॥
बालोसा सिद्धाचल आव्या, हीयें घणो हांम वाला ।
वांणोतर पोताना तेडावि, तेहनि सुंप्युं कांम मोरा वाला ॥८॥
देवचंद लखमीचंद बाघो(बांधो) कहिइं, ए वांणोतर कहेवाय वाला ।
बालोसाइं तेहनिं कह्युं, करो पइसा खरच्यानो उपाय मोरा वाला ॥९॥
कडिया कारिगर सलपिनो साथ, मजुरी मलिया बहु वाला ।
टुंकनो तो आरंभ किधो, हरख्यां मजुरी सहु मोरा वाला ॥१०॥
संवत अढार एकाणुंए (१८९१), माघ महिनें मुरत किध वाला ।
सुकल पक्षनिं त्रयोदसि, चंद्र-वारिं दांन दिधुं मोरा वाला ॥११॥
छट्ठी ढाल **सांमजिइं** कहि, हिए हर्ष न माय वाला ।
टुंकनुं तो कांम ज मांड्युं, जय जय शबद थाय मोरा वाला ॥१२॥

दुहा- मोतिसाइं कहाव्युं जि(ति?)हां, मुनि **रूपविजयजी** ज्यांहिं ।
प्रतिष्ठानुं मुहूर्त जोइ, लखी मोकलजो आंहिं ॥१॥
मुनि रूपविजइं लखिउं, मोतिसा प्रतिं इंम ।
संवत अढार एकाणवें (**१८९१**), करो प्रतिष्ठा जिम ॥२॥
मोतिसाना मनमां, घणो थयो छे भाव ।
खिमचंद नामिं महूर्त जोइ, लहीइं बहु लाव ॥३॥

संवत अढार बाणवे(१८९२), **आणंदसिखर** बोल्या वचन ।
प्रतिष्ठानो विलंब न किजिइ, ए दिवस रूडो दिन ॥४॥
बिंबना काम छे घणां, ए महुर्त केम सधाय ।
संवत अढार त्राणवे(१८९३), प्रतिष्ठामुहूर्त सुहाय ॥५॥
प्रथम दरजि तेडाविया, रचों डेरानी बहु भात ।
उंचा तंबु ताणस्यें(स्यों?), जात्राइं आवें संघ साथ ॥६॥
सुवर्ण उंट भरी करी, करवा आवें जुहार ।
मोतिसाना मोलमां, कांई घाट घडें सोनार ॥७॥
आउखुं आवतुं जांणिउ, सहुनिं भलामण दी(की?)ध ।
हस्याब करि द्रव्यनो, खिमचंदनें हाथिं दीध ॥८॥
खीमचंदनिं सिखामण देइ, भलिं भजो भगवंत ।
मोतिसा स(स्व)धांम सधाविया, नांम लेइ अरिहंत ॥९॥
संवत अढार त्रा(बा)णवें (१८९३(२)), रूडो भाद्र[व] मास ।
मोतिसा देवंगत थया, सहु लोक थयां उदास ॥१०॥
सुकल पक्षनिं प्रतिपदा, रविवारनो जोग ।
मोतिसा देवांगत थया, सहु सजनने मन सोग ॥११॥
पुन्यिवंतिं पुन्य किधां घणां, तेवां ते पांम्यां सुख ।
स्वरग मृतु(त्यु) पातालमां, नहि तेहनिं कांइं दुख ॥१२॥

॥ ढाल-७मी ॥

मोतिसा देवांगत थया रे, रुदन करें सहु सजन ।
मुंबइ बंदरमां ए दिवसिं रे, उदास लोकनां मन ॥१॥
देखों दुनियां दैवनुं रे, कारण कल्युं नवि जाय ।
कल्यामां आवें नहि रें, ... ॥* (ए आंचली)
मुख रोवें सहु एहनिं रे, रुदयामां नर नार ।
ए आ दइवस्युं थयुं रे, इम बोलें वारमवार ॥२॥ देखो...
देस प्रदेसिं जांणिउं रे, मोतिसाइं किधों काल ।
सांभलिनिं सोक घणो रे, रोयां वृद्ध जोव(वा)न निं बाल ॥४॥ देखो...

---

* अहीं पद्यमां एक पद खुटतुं होय तेवुं लागे छे ।

ग(गु)रु गनानिनिं पुछिउं रे, ए कारज किम थाय ।
आद अनाद इम नीपजें रे, ते किम मिथ्या कहेंवाय ॥५॥ देखो...
मृत्युकारज करि सेठनुं रे, खिमचंद थाप्या पाट ।
सातमी ढाल **सामजी** कहें रे, संघनो बनावो ठाठ ॥५॥ देखो...

दुहा- खिमचंद साहि मनमां, जुगति कर्यो विचार ।
संघनी सोभा कीजिइं, इंम बोल्या निरधार ॥१॥
प्रतिष्ठानुं मुहूर्त जोइ, रूडो दिवस द(ध)न ।
संघ कंकोतरी मोकली, हर्ष धरिनिं मन ॥२॥
संवत अढार त्राणवे (१८९३), माघ महिनामांहिं ।
जात्राइं सहु आवजो, सिद्धाचल छें ज्यांहिं ॥३॥
पुरव दक्षण पश्चिम दिसिं, उतर दे(दि)स कहेंवाय ।
तिहां कंकोतरी मोकलि, सेठ खिमचंदसाय ॥४॥

॥ ढाल-८मी ॥ गणेश पाट बेसाडिया - ए देशी ॥

मुंबइ बंदरथी मोकल्या, **पारसि** कारिगर जांण ।
मांडवी सोभा रचजो, इंम खिमचंद बोल्या वांण ॥१॥
मंडप रच्यो सोभतो, कारिगरिं तिणि वार ।
सोभा तेहनी सी कहुं, दीसंति कांइं सार ॥२॥
विमलाचलगिरि तलेटिइं, रूडि रचना रचाय ।
भवि[जण] नयणिं नरखजो, आ भवनां पाप पलाय ॥३॥
भुमि-सुध सुधि करि, पिठकानुं परिमांण ।
अंजनसिलाका तिहां कनिं थास्ये, इंम लोक करे वखांण ॥४॥
एक मंडप अंजनसलाका काजें, बिजो मंडप जोय ।
देस देसथी लोक जोवा आविया, नरखिनिं मनडुं मोय ॥५॥
स्याग सीसमना थांभला, सुतारि लेई घड्या ।
लीला वांस अणाविया, कारिगरि-जड्या ॥६॥
भावनगर बिंदरथी आविया, **वोहरा**नुं हवे कांम ।
चिहुं दिसि काच ढालिया, रूडुं सोभें छें धांम ॥७॥
लीला राता रंग सोभता, बिंबानि बहु भात ।
चंद्रवानी सोभा जांणि, दीसें ते जुजुइ जात ॥८॥

चित्र चितारें चितर्यां, बहु दिसें उजास ।
दीपक चिहुं फिर सोभता, विधे विधे प्रकास ॥९॥
आठमि ढाल **सांमजिइं** कहि, जोइनिं रसाल ।
संघनि सोभा सोह्या(हा)मणि, नित नित मंगलमाल ॥१०॥

दुहा- आगिं संघवि आविया, मोतिसा-सुत खिमचंद ।
केडिं संघ आवस्ये, प्रतिष्ठा करवा जिणंद ॥१॥
आणंदजी कल्यांणजीनि गादीइं, पारेख दिपचंद कहेंवाय ।
संघवि आवतां जांणिया, ततपर सामइउं थाय ॥२॥

॥ ढाल-९मी ॥ संजम रंग लागो रे - ए देशी ॥

दीपचंद पारेखिं तेडाविया रे, सहु माजन ततखेव, जोवा जईइं रे ।
साहमिउं सारुं किजिइं रे, आवे खिमचंदसा तेव, जोवा जईइ रे ॥१॥
वाजित्र वाजां वाजियां रे, नगारां सरणाइं, जोवा ... ।
दीपचंद पारेखनिं उछरंग घणो रे, लोक हरख्या मनमांइ, जोवा... ॥२॥
माजन तिहांथि मलपता रे, आविया पुर बार, जोवा... ।
खिमचंदसा नर्यणिं नरख्या रे, हेंतिं कीधा जुहार, जोवा... ॥३॥
अमरचंद भेला सहि रे, विमल जेहनुं नांम, जोवा... ।
ए संघवि साथिं आविया रे, करवा प्रतिष्ठा कांम, जोवा... ॥४॥
च्यार साहेब सोभता रे, संघवि पासिं जांण, जोवा... ।
गांम लोकनिं हर्ष घणो रे, जय जय बोलें वांण, जोवा... ॥५॥
देहरे दरसण किजिइं रे, सहेंरमां सघलो साथ, जोवा... ।
खीमचंदसानि खंत घणि रे, पुजवा आदिनाथ, जोवा... ॥६॥
तिहां कनि तंबु सोभतां रे, रूडां कीधां मकांम, जोवा... ।
नवमी ढाल **सांमजि** कहें रे, सुध राखी परणांम, जोवा... ॥७॥

दुहा- संवत अढार त्राणवो (१८९३), पोष मास जेह ।
कृस्नपक्ष प्रतिपदा कहिइं, रविवारिं तेह ॥१॥
ते दीनथी संघ आववा, करे मकाम मकाम ।
संवत अढार त्राणवें (१८९३), माघ महिने हाम ॥२॥
शुकलपक्ष दसमि [तिथि], बुधवारि जोय ।
अंजनसलाका करस्यें, इम लोक हरषीत होय ॥३॥

॥ ढाल-१० ॥ राय कहें रांणि प्रतिं सुणो कांमनी० ए देशी ॥

चिहुं दिसथि संघ आवियो पुन्यवंताजि, जात्राइं सहु साथ गुणवंताजि ।
गुणिजन गुण गावतां पुन्यवंताजि, बहु सोभे विविध भात गुणवंताजि ॥१॥
पुर बाहर डेरा किधला पुन्य..., आव्या साधु साधवि सहु गुण... ।
उंचा तंबु तांणिया पुन्य..., मिल्या श्रावक श्राविका बहु गुण... ॥२॥
वाजीत्र वाजां वाजियां पुन्य..., छत्रीस वाजांना सबद थाय गुण... ।
चतुर्विध संघ सोभतों पुन्य..., तिहां प्रभुना गुण गाय गुण... ॥३॥
वीरचंदसा ते आविया पुन्य..., सवाइनि मनि रंग गुण... ।
हठिभाइ हरखिं करी पुन्य..., हिमोभाइ लाव्या संग गुण... ॥४॥
सिधाचल[इ] आविया पुन्य..., चिनाइ नानजि नांम गुण... ।
बालोसा आवी करी पुन्य..., बहु खरचें दांम गुण... ॥५॥
ए गिरिवर उपर भाव घणो पुन्य..., आव्या फुलचंदसाना पुत्र गुण... ।
सिद्धखेत्र सत्य जांणि पुन्य..., करिइं जात्रा पवित्र गुण... ॥६॥
व्रतधारि श्रावक सोभें पुन्य..., जेनुं जात्रा उपर मन गुण... ।
देव दरसण किजिइं पुन्य..., मुख बोलें वचन गुण... ॥७॥
नारिइं सिणगार सजिया पुन्य..., सोवनकलस हाथ गुण... ।
गजी बेठा गाजता पुन्य..., केइ पालानो साथ गुण... ॥८॥
रथिं बेठां रलियामणा पुन्य..., तुरंगि वाध्यो रंग गुण... ।
सुखासण सुख पामिया पुन्य..., इणि रिति सोभे संघ गुण... ॥९॥
सुभट सपाइ सहु मल्या पुन्य..., रढीयाला रजपुत गुण... ।
दसमी ढाल **सांमजि** कहे पुन्य..., सोभे मोतिसानो सुत गुण... ॥१०॥

दुहा- संघनी सोभा वरणवी, सरवाले सवा लाख ।
गुण तेहना गावतां, सी सेलडी सी द्राख ॥१॥
खरतरगच्छना श्रावक, संघवि खिमचंद नाम ।
सुत मोतिसातणा, करें अंजनसलाका कांम ॥२॥

॥ ढाल-११ ॥ देशी - गरबानी ॥

खरतरगछना श्रीपुज्य, **जिनमहेंद्रसूरि** जेहजी रे ।
संघवि खिंमचंदि पुजा करि, गुरु जांणि तेह रे ॥१॥

प्रभुनिं पुजोजी रे, जिनेसर पडिमा जोय (आंकणी)
खरतरगछ **तपगछ**ना श्रीपुज्य, **सागरगछ**ना जांणजी रे ।
संघ सहु जोवानिं मलियो, बोलें जय जय वांण रे ॥२॥ प्रभु...
वीसलनगरथी आविया, **गलोसा** गुणवंतजी रे ।
संघवि खिमचंदि तेडाव्या, विधि करवा भगवंत रे ॥३॥ प्रभु...
सोले सिणगार नारिइं सज्या, सुवर्णकलस हाथजी रे ।
जुगति जल-यात्रा कीधी, सोभे सघलो साथ रे ॥४॥ प्रभु...
साधु साधवी श्रावक श्राविका, इंद्रध्वजा बिराजेंजी रे ।
विध विधनां वाजिंतर वाजें, भेरि भुंगला छाजे रे ॥५॥ प्रभु...
छपन-कुंमारिका चोसठ इंद्र, निशालगरणुं ज्यांहिंजी रे ।
पंच ओछविं पुजन किधुं, मंडपि आवि त्यांहि रे ॥६॥ प्रभु...
पांच हजार पडिमानी पुजा करी, दरसण देवनां कीधांजी रे ।
इग्यारमि ढाल **सामजिइं** कही, संवछरि-दांन दीधां रे ॥७॥ प्रभु...

दुहा- सांमिवछल किधां तिहां, भोजन दीधां अपार ।
प्रतिष्ठा करि जिनराजनि, सहु बोलें जय-जयकार ॥१॥ प्रभु...
संवत अढार त्राणवो (**१८९३**), मास माघ कहेवाय ।
कृस्नपक्ष तिथि द्वितिया, बुधवार सुहाय ॥२॥
देहरे प्रतिमा थापिउं, बेसार्या जिनराज ।
संघ सकल आणंदीयो, सिध्यां सघलां काज ॥३॥

॥ ढाल-१२मी ॥ श्रीयुगमंधरनिं कहेजो - ए देशी ॥

चालो सहु जात्राइं जइइं, काजु कांम कुंतासर कहिइं (आंचली)
ए गिरिवर महिमा छे घणो, मुख वरणव कहें तेह तणो ।
भवि गुण-गाथा स्तवन भणो ॥१॥ चालो...
रांमपोल निरखिनिं प्रांणि, साहमुं कुंतासर जांणि ।
जय जय सहु बोलोनिं वांणि ॥२॥ चालो...
मोतिसा टुंक अछे सारो, सहुनिं लागे छे प्यारो ।
कठण पांचमो आरो ॥३॥ चालो...

मोतिटुंक नवो टुंक निहाली, बिजा टुंक नयणिं भालि ।
बिराजें सासन रखवाली ॥४॥ चालो...
मोतिसाइं देहरो कीधो, दांन बहु सुपात्रिं दीधो ।
हीये हरखी लाहो घणो लीधो ॥५॥ चालो...
अमिचंद कुल(ले) छे दीवो, ए तो कोडाकोड वरस जीवो ।
ओपमाइं अमृतरस पीवो ॥६॥ चालो...
प्रभुजिनि परदक्षणा दीजइ, खमास[म]णां त्रण लीजे ।
चइत्यवंदन भावि कीजे ॥७॥ चालो...
रिषवदेव प्रतिमा छें सारि, बारमि ढाल लागें प्यारि ।
सांमजी जाय बलहारि ॥८॥ चालो...

दुहा- रिषभदेव निरखीइं, धरीइं मन शुभ ध्यांन ।
हवे प्रतिमा वरणविइं, मनसुं आंणि ग्यांन ॥१॥

॥ ढाल-१३मी ॥ तेरी बिबिकुं ले गए गुलाम मियां खडा देखते हे - ए देशी ॥

टुकमि टुंक बनाय किं, टुंक ए बिराजते,
रिषभ जिनेसर बेंठाय, टुंक ए बिराजते ।
मेरे मनमोहन लाल, टुंक ए विराजते,
अनिहां प्यारे लाल, टुंक ए विराजते
मोतिसाने देहरें जइइं, दरसन करते ।
मरुदेवानंदन जोइ, पुजा बनावते, अनिहां*... ॥१॥
सुनंदाको कंत, सत्य करि जांणिइं ।
सुमंगला-साहिब, रिषभ वखांणिइं, अनिहां... ॥२॥
काउसगिया नमि विनमि, उभा ध्यांनज धरें ।
बाविस प्रतिमा देख, मुखिं गुण उचरे, अनिहां... ॥३॥
मुल गभारेंथी बाहर, मंडपिं तिहां आविइं ।
षट् प्रतिमा नरखी जोय, मनमिं मोहिइं, अनिहां... ॥४॥
सेठ सेठांणि पुन्यवंत, पांचमें आरे थयां ।
मोतिसा मुरत निहाल, रुदयमां गहगह्या, अनिहां... ॥५॥

---

* "अनिहां० प्यारे० टुंक० मेरे०" आ पद आंचलीनुं छे ।

देहरा उपर दरसन, बे चोंमुख विराजता ।
बावन प्रतिमा जांण, बीजे माल भावता, अनिहां... ॥६॥
त्रीजे मालिं जइ दस, जिनेसर पेखिया ।
त्रीयोदस ढाल कही, **सांमजिइं** रिषभ वखांणिया, अनिहां... ॥७॥

दुहो- परदक्षणा दिजिइं, शुध राखि परणांम ।
सर्वे जिणेसर पुजीइं, हीयें आंणि हांम ॥१॥

॥ ढाल-१४मी ॥ धन धन जिनवांणि - ए देशी ॥

एकसो अठ्यावीस देहरी विराजें, एकसो छ्यासि प्रतिमा छाजे रे, ए तिरथ वंदुं ।
रायण रूडिनिं रचना बहु, प्रभुनां पगलां नरखो सहु रे, ए तीरथ वंदुं ॥१॥
नाग-मोरनो वरणव करुं, अरिहंत प्रभुनुं ध्यांनज धरुं रे, ए... ।
सामा पुंडरिक बिराजें च्यार, एकवीस प्रतिमा निरधार रे, ए... ॥२॥
प्रतापलालने देहरे जइइं, चोंमुख नरखी लइइं, ए... ।
चमालिस प्रतिमां सोइइं, निजरिं नरखि जोइइं, ए... ॥३॥
अमरचंदनुं प्रासाद रूडुं, कोय मन न राखो कुडुं रे, ए... ।
त्रेवीस प्रतिमानी सोभाय, पुजी पाप पलाय रे, ए... ॥४॥
फुलचंदस्या(सा)नुं देहरुं आव्युं, सहुनें मन भाव्युं रे, ए... ।
देवचंद पारेखनुं जिनमंदिर जोइ, मन रह्यां घणुं मोइ (ही?) रे, ए... ॥५॥
वाणोतर बेचरनिं जांणि, देवचंद पारेख बोल्या वांणि रे, ए... ।
सार संभाल देहरानि करजो, अहोनिस ध्यांन ज धरजो रे, ए... ॥६॥
अठ्यावीस प्रतिमानी पूजा करो, सिवसुखनुं ध्यांन ज धरो रे, ए... ।
सरुपसानुं देहरुं ताजुं, बार प्रतिमा दीसें काजु रे, ए... ॥७॥
देहरामां बार बिराजें जिणंद, देहरुं कइ(र)इं सा. **क्रमचंद** रे, ए...
जेठासाना **सहसकुट** जांणि, सहस चोविस प्रतिमा वखांणी रे, ए... ॥८॥
बीजि ओगणिस प्रतिमानुं धाम, सहसकुट देहरांनुं नांम रे, ए...
खुसालसानुं देहरुं प्रमाणी(ण), ओगणिस प्रतिमा नरखों प्रांणि रे, ए... ॥९॥
तीरथ करतां सर्व दुख जावें, सीवपुरिनां सुख पावें रे, ए... ।
चउदमि ढाल **सांमजिइं** कही, प्रतिमा गणि जात्राइं जहि(ई) रे, ए... ॥१०॥

दुहो- मनमां हर्ष अति घणों, जिणेसर वंदवा जेह ।
पुजातणो लाहो लिजिइं, मनवंछित फल तेह ॥१॥

॥ ढाल-१५मी ॥ अंतरजामि सुण अलवेसर० - ए देशी ॥

सवाईसाने देहरे जइइं, बार प्रतिमा निरखीजे रे ।
प्रीमचंद रंगजीनुं देहरुं आव्युं, त्रेवीस प्रतिमा हरखीजे ॥१॥
सेवक ध्यांन धरें माहाराज, अमनिं प्रभु दरसण आलो
आलो आलोनिं माहाराज... (आंचली)
गुलाबबाईनें देहरे आव्या, सात प्रतिमा बिराजें रे ।
नांनजि चिनाइनुं देहरुं कइइं, सतर प्रतिमा छाजें ॥२॥ सेवक...
हठीभाइइं हरख धारिनिं, प्राशा(सा)द एक किधुं रे ।
देहरामांहिं प्रतिमा त्रेवीस, काज सघलुं सिध्धुं ॥३॥ सेवक...
विरचंदसाने देहरे आवि, बार प्रतिमा निरखो रे ।
देवचंद कल्याणनुं देहरुं एहवुं, सतर प्रतिमा जोइ हरखो ॥४॥ सेवक...
चकेसरी माताइं आवि, पाप सघलां खोयां रे ।
बालासाने टुंकि आवि, प्रभु नरखी मन मोयां ॥५॥ सेवक...
बालास्या(सा)ना देहरामांहिं, अठ्याविस प्रतिमा एवी रे ।
सोभा तेहनी सी वखांणुं, दीसें जोया जेवी ॥६॥ सेवक...
देहरा फरति बावन देरी, एकसो दस प्रतिमा दी(दी)सें रे ।
ए गिरिवर उपर तिर्थ घणा ने, जोइ जोइ मनडुं दीसें ॥७॥ सेवक...
आगल पाछल तिर्थ घणा ते, कहेंतां न पामुं पारा रे ।
मोति टुंकनी प्रतिमा वर्णवी, धन्य धन्य भाग्य हमारा ॥८॥ सेवक...
मोतिस्या(सा)ना रासनी, इंम ढाल पनरमी किधि(कीधी) रे ।
कहें **सांमजि** ए पुन्यवंत प्रांणि, काज थया सर्व सीधी ॥९॥ सेवक...

दुहो- रास मोतिसातणो, जे सांभलें आणंद ।
पुन्यवंति प्राशा(सा)द करावियां, देहरामांहिं थाप्या जिणंद ॥१॥

॥ ढाल-१६ ॥ राग-धन्यासि ॥

तुठो तुठो रे [तुठो तुठो रे], मुज साहिब जगनो तुठो... ए देशी ॥

गायो गायो रे **विमलाचलगिरि** गुण गायो,
प्राशा(सा)द जिणेसर किधां, पुन्य अधिक बंधायो ।
तेहना गुण नर नारि गाजो, कीजें सिवसुख उपायो रे ॥१॥ विमला...
मोतिसा पालीताणें आवि, कुंतासर पुरायो ।
द्रव्य जिणिं घणुं घणुं खरच्युं, सिद्धाचल टुंक बनायो रे ॥२॥ विमला...
अंजनसलाका अमिं करस्युं, ए मनसुब धरायो ।
एवें समें मोतिसाइं, देवां(व)गती सुख पायो रे ॥३॥ विमला...
खिमचंदसाइं मनि विचारि, अंजनसलाका करायो ।
संघनि सोभा बहु बनावि, जिनेसर पूजा रचायो रे ॥४॥ विमला...
इंद्रमाला पोतें पेंरी, खिमचंदसा सवायो ।
संवत अढार त्राणुंआ (१८९३) मांहिं, माघ मासकृष्ण पक्ष आयो रे ॥५॥ विमला...
पंचमि दिन सनिवारिं, जात्राइं संघ सर्वे जायो ।
संघवि संघवण इंद्रमाल पेरी, प्रभुनां दरसण पायो रे ॥६॥ विमला...
मोतिसानो रास कर्यो, भवि[क]नि मन भायो ।
कहें **सांमजी** ए रास गावंतां, भावि पुन्य बंधायो रे ॥७॥ विमला...

॥ ढाल-१७ ॥ राग-धन्यासरी ॥

सिद्धखेतर सत्य जांणि, जिहां वसें पुन्य प्रांणिजी ।
देस-देसथी जात्राइं आवें, संघ सर्वे प्रमांणिजी ॥१॥
रिषभदेवनी पुजा रचावें, नित नित ओछव थावेंजी ।
सोरठ देश सोह्यां(हा)मणो, तिहां **जैनपुरी** सोहावेंजी ॥२॥ सिद्ध...
मोतिसा पालिताणें आवि, कुंतासर पुराव्योजी ।
द्रव्य जिणिं घणुं घणुं खरच्युं, विमलाचल टुंक बनाव्योजी ॥३॥ सिद्ध...
मोतिसा-सुत खिमचंद कइइं, संघ लेइनिं आव्याजी ।
विधे विधे अंजनसलाका करि, जिनेसर मोतिइं वधाव्याजी ॥४॥ सिद्ध...
सवा लाखनुं प्रमाण कहीइं, संघनी सोभा एहविजी ।
इंम सहुइं नजरिं दीठी, सोभा जोया जेवीजी ॥५॥ सिद्ध...

तेहना गुण अमिं जोइनिं गाया, लागें मिठि वांणिजी ।
संवत अढार त्राणुंवा(**१८९३**)मांहिं, स्युं कहुं वखांणिजी ॥६॥ सिद्ध...
फाल्गुन मास(से) सुक्ल पक्ष(क्षे), नवमी बुध सुहायजी ।
ते दिवसि पुन्यवंत प्राणि, सहु सहुनें गाम जायजी ॥७॥ सिद्ध...
मोतिसाइं द्रव्य खरच्युं, अमिं जोइनिं पाम्या आणंदजी ।
साधुनि संगतिं धर्मनि ओलखि, करिइं दरसण जिणंदजी ॥८॥ सिद्ध...
बुधि प्रमांणें रास ज कह्यो, कोइ दोस म देस्यो कविजनजी ।
पुन्यवंतिं जे द्रव्य ज खरच्युं, अमिं भाव धर्यो घणुं मनजी ॥९॥ सिद्ध...
संवत अढार चोराणुवा(**१८९४**)मां, रासनि जोड किधिजी ।
श्रावण मास(से) क्रस्न पक्ष(क्षे), त्रियोदसि काज थयुं सिधिजी ॥१०॥ सिद्ध...
चंद्रवार(रे) सत्य जांणि, जिनसासन गुण गावेंजी ।
पालिताणा गांममां रहे, विप्र **सांमजि**ने मन भावेंजी ॥११॥ सिद्ध...
चातुर्वेदी मोढ ज्ञाति, **राजगुर** कहावेंजी ।
रत्न ओलखी करमां लीधुं, सासन सोभा सोभावेंजी ॥१२॥ सिद्ध...

॥ इति श्रीमोतिसानो रास संपूर्णम् ॥

शब्दकोश

गाथा क्र.	चरण क्र.	शब्द	अर्थ
दूहा-२	१	शासना	अधिष्ठात्री
२	२	समान्य	सम अन्य (बीजुं)
२	३	मातम	माहात्म्य
२	४	मोय	मारी
३	२	उपाय	पामी
३	४	साय	सहाय
ढा-१,१	१	घोहल	गोहिल
२	१	हकम	आदेश
३	३	वगत	विगत
३	४	जुगतिं	युक्तिपूर्वक
४	४	पइसा	पैसा
दुहा-२	२	प्राइं	प्रायः
२	४	झाझ	जहाज
ढा.२,१	३	गालो	खीण
२	१	माजन	महाजन

गाथा क्र.	चरण क्र.	शब्द	अर्थ
२	२	विमासण	चिंता
२	३	तिहांकनि	त्यां
२	४	कोयिं	कोईए
५	३	हांम	हिंमत
५	४	वांणुतरुनिं	गुमास्ता
६	१	केंवाय	कहेवाय
६	३	परणांम	परिणाम-भाव
८	२	मणा	अछत
१२	२	विधिं	विधिपूर्वक
१५	३	खेपिओ	दूत
१६	२	घाटि	मजूर
१६	२	साथ	समुदाय
दूहो-१	३	मजूरी	मजूर
ढा. ३,२	३	टांकुं	पाणीनी टांकी
३	३	सलपि	शिल्पी
५	२	गज	लंबाई भरवानुं माप
५	२	सुतर	दोरडां*
६	२	प्रतिपदा	एकम
दुहा-२	२	मुख्य(ख)	सामे
६	४	लाव	लाहवो
ढा. ४,१	२	सोयलुं	सरळ
२	२	अढलिक	घणुं
५	१	दिदारुं	सुंदर (?)
५	२	सिया	शा
दुहा-३	२	ततपर	एकचित्तथी
३	२	साबदा	सज्ज
ढा.५,१	४	टेक	नियम
३	१	जोया जेवी	सुंदर

गाथा क्र.	चरण क्र.	शब्द	अर्थ
ढा.६,२	३	मेडिइं	माळ
	४	रातिजगो	उत्सव प्रसंगे रात्रे थतुं जागरण
९	१	बांधो	भाई
दुहा-६	२	डेरा	तंबु
७	३	मोल	?(महेल)
८	३	हस्याब	हिसाब
९	३	स्वधाम	स्वर्गलोक
११	३	देवांगत	देवगत
ढा.७,१	३	कल्यामां	जाणवामां
२	३	वस्युं	(वसमुं?)
३	४	जोव(वा)न	युवान
४	१	गनानि	ज्ञानी
ढा.८,१	३	मांडवी	मंडप
४	१	सुधि	सारी रीते
५	४	मोय	मोहाय
६	१	स्याग	साग
८	३	चंद्रवानी	चंदरवानी
८	४	जुजुइ	जुदीजुदी
९	२	चितारे	चित्रकारे
१२	४	सामइउ	सामैयु
दुहा-१	केडि	केडि	पाछळ
ढा.९,१	४	तैव	त्यारे
२	३	उछरंग	उमंग
३	१	मलपता	उमंगपूर्वक चालता
ढा.९,७	४	मकांम	मुकाम
दुहा-१	३	त्राणवो	त्राणुंमो

* गजसुतर - गजसूत्र, शिल्पीनुं माप लेवानुं साधन ।

गाथा क्र.	चरण क्र.	शब्द	अर्थ
ढा.१०,२	१	किधला	कीधा
२	३	तांणिया	बांध्या
३	२	वाजियां	वाग्या
८	४	पाला	पगपाळा सैनिक
१०	१	सपाइ	सैनिक
१०	२	रढीयाला	सुंदर
ढा.११,५	४	भेरि	शरणाईना प्रकारनुं मुखवाद्य
५	४	भुंगल	एक वाद्य विशेष
४	४	भालि	जुवो
६	३	ओपमाइं	उपमाथी
ढा.१४,२	१	वरणव	वर्णन
७	४	काजु	सारी(?)
१०	४	गणि	गणी
१०	४	जही(ई)	जईने
ढा.१५,१	३	आलो	आपो
५	४	मोया	मोह्या
ढा.१६,३	२	मनसुब	मनसूबो
ढा.१७,१	१	सिद्धखेतर	सिद्धक्षेत्र

पंडितश्रीउत्तमविजयजीगणिविरचित स्वोपज्ञ बालावबोधसहित संयमश्रेणि गर्भित श्री महावीर जिनस्तवन[१]

– सं. मुनि निर्ग्रन्थचन्द्रविजय
(डहेलावाला)

शास्त्रोना दुर्गम पदार्थोने समझवा प्राकृतजन माटे खूब कठिन साबित थता होय छे । आथी ते पदार्थोने सरळ तथा रसाळ शैलीमां पीरसवा माटे मध्यकालीन साहित्यमां अनेक स्तवन, सज्झाय आदि कृतिओ रचाती हती । प्रस्तुत संयमश्रेणि गर्भित श्रीमहावीरजिनस्तवन ए तेवी ज एक रचना छे ।

रचनाकार - आ स्तवनना कर्ता पं. श्रीउत्तमविजयजी छे । तेओ पं. श्री सत्यविजयजी गणिनी परम्परामां थयेला पं. श्रीजिनविजयजीना शिष्य छे । तेओ कर्मप्रकृति, पंचसंग्रह आदि ग्रन्थोना प्रखर ज्ञाता हता । तेओनो सामान्य परिचय आ प्रमाणे जोवा मळे छे –

संसारी नाम = पूंजाशा — पितानुं नाम = लालचंद
मातानुं नाम = माणेकबाई — जन्मस्थळ = शामळानी पोळ, अमदावाद
विद्यागुरु = देवचन्द्रजी — जन्मसंवत् = १७६०
दीक्षासमय = वैशाख सुद-६, १७९६ — कालधर्म = महा सुद-८, १८२७

(जैन गुर्जर कविओ, भाग-६)

विषय :

बार कषायनो अभाव थतां सर्वविरतिरूप छट्ठुं गुणस्थाक प्राप्त थाय छे । तेना आदिस्थानमां सर्वजघन्य स्थानको होय छे । त्यारबाद अनुक्रमे षट्स्थान रूपे वृद्धि पामे छे ।

१. अनन्त भाग वृद्धि — २. असंख्य भाग वृद्धि
३. संख्यात भाग वृद्धि — ४. संख्यातगुण वृद्धि
५. असंख्यगुण वृद्धि — ६. अनन्तगुण वृद्धि

आमां वृद्धि अनन्तभाग अने अनन्तगुण सर्व जीवराशिथी, असंख्यभाग तथा

१. आ ग्रन्थ श्रीसत्यविजय ग्रन्थमाला नं. १, शेठ बालाभाई मूलचंद रीची रोड, अमदावाद द्वारा शताधिक वर्ष पूर्वे प्रकाशित थयो हतो.

असंख्यगुण असंख्यातलोकाकाशप्रदेशथी अने संख्यातभाग तथा संख्यातगुण सर्वोत्कृष्ट संख्याए जाणवी ।

आवां षट्स्थान समाप्त थये छते उपराउपरी असंख्याती वार आ षट्स्थान उत्पन्न थाय छे । उपदेशमालाना साक्षिपाठ द्वारा तेओ जणावे छे के आवा चारित्रगुणनां स्थानकोमां स्थित साधु ज वंदनीय छे, अन्य भजनाए वंद्य जाणवा ।

द्वितीय ढाल – आ छए स्थानोनी जग्याए असत्कल्पनाए अनुक्रमे मींडा, एकडा, बगडा, त्रगडा, चोगडा अने पांचडानी स्थापना करवामां आवी छे । अने तेना आधारे यन्त्ररचना तैयार थई शके छे । जेनी स्थापना पंचसङ्ग्रह भाग–२ आदि अनेक स्थानोमां बतावामां आवी छे ।

संयमश्रेणिनुं आरोहण करता अनुक्रमे क्षपकश्रेणिए चडी, शुक्ल – ध्यान पामी, घातिकर्मनो क्षय करी यथाख्यातचारित्र, केवलज्ञान अने केवलदर्शनरूप रत्नत्रयी–प्राप्ति सुधीनुं विस्तृत वर्णन करी ढाळनी समाप्ति कराई छे ।

तृतीय ढाल – त्रीजी ढाळमां षट्स्थानवृद्धिनी छ रीते मार्गणा कराई छे.

१. अनन्तरमार्गणा – एक कण्डक प्रमाण
२. एकान्तर मार्गणा – एक कण्डकनो वर्ग + एक कण्डक प्रमाण
३. द्विकान्तर मार्गणा – एक कण्डक घन + बे कण्डक वर्ग + एक कण्डक प्रमाण
४. त्रिकान्तर मार्गणा – कण्डकवर्गवर्ग + ३ कण्डकघन + ३ कण्डकवर्ग + १ कण्डक प्रमाण
५. चतुरन्तर मार्गणा – ८ कण्डकवर्गवर्ग + ६ कण्डकघन + ४ कण्डकवर्ग + १ कण्डक प्रमाण
६. पर्यवसान मार्गणा – पर्यवसान एटले अन्तिम(छेडा)नी मार्गणा

असंख्यातभाग वृद्धिना प्रथम स्थानकथी पूर्वमां अनन्तभागवृद्धिना एक कण्डकप्रमाण स्थान गयां छे तेनी विचारणा ते अनन्तरमार्गणा कहेवाय छे । ए ज रीते संख्यातभागवृद्धिना प्रथम स्थानकनी पहेला अनन्तभागवृद्धिना कण्डकनो वर्ग + १ कण्डक प्रमाण स्थान गया छे तेनी विचारणा ते एकान्तर मार्गणा थई । एम आगळ पण समजवुं ।

आवां संयमस्थानकोने प्राप्त करी मुनिभगवन्त कोईक कारणोसर नीचे पडे छे अने कालान्तरे पुनः चडी मोक्षसुखने पामे छे ।

ढाळने अन्ते षट्स्थानगत अल्पबहुत्वनो विचार थयो छे । जेमां सौथी थोडां

स्थानक अनन्तगुणवृद्धिनां कह्यां छे । तत्पश्चाद् पश्चानुपूर्वीए असंख्यातगुणवृद्धि आदि स्थानको असंख्यातगुणाधिक जाणवां ।

कलशवर्णन :

जेम शिखर उपर कलशनी स्थापना शिखरने शोभासम्पन्न बनावे छे तेम ढालीयावाला स्तवनोमां पण कलश ए स्तवनने पूर्णता बक्षवा द्वारा अखंड - बनावे छे । अथवा एम पण विचारी शकाय के कविसम्प्रदायनी आ रीतनी शैली होय के कलशनी रचना द्वारा ए पोतानी गुरुपरम्परानां गौरवने तेमज आ स्तवन वगेरेनी रचना द्वारा माणेला निजानन्दने कलशमां ठालवी चिरंजीवी बनावी शके । जे होय ते, एनाथी वाचकने तो लाभ ज थाय छे । प्रत्येक ढालने अन्ते रचयिताए पोतानी गुरुपरम्परा संक्षेपथी तो स्पष्ट करी ज छे, छतांय कलशमां ए गुरुपरम्परानुं दर्शन विस्तारथी मले छे । साथे साथे साल-संवतनी स्पष्टता, स्तवन रचनानुं स्थल, स्तवन रचनामां कोई निमित्त वगेरे बाबतो पण कलशमां दृष्टिगोचर थती होय छे ।

कलशनी कडी-१मां त्रणेय ढालमां चर्चायेला विषयोथी मनुष्य जन्मनुं फल प्राप्त थयु छे एम जणाव्युं । कडी २ थी ७मां ज्ञान अने क्रिया ए बन्नेय नी उपादेयता सिद्ध करवामां आवी छे । बन्नेमांथी जो एकनो पण अभाव थाय तो मोक्षनो मेळ न पडे ए वात सरस रीते समजावी छे । कडी-८मां आ स्तवन जेमनुं छे ते प्रभुने मात-पितानां नामस्मरण द्वारा याद करवामां आव्या छे । कडी-९मां १७९९मां वर्षे अक्षयतृतीयाना शुभदिने आ स्तवन पर कलश चढाव्यो छे, अर्थात् स्तवननी रचना परिपूर्ण थई छे एम स्पष्टता करी छे । अने छेल्ले कडी-१० अने ११मां गुरुपरम्परा अने कया नगरमां कया प्रभुना प्रसादथी आ स्तवनग्रन्थ संपन्न थयो ते बतावी कलश पूर्ण कर्यो छे ।

स्तवनना कर्ताए स्तवननी रचना करती वेलाए विचार्युं हशे के आ षट्स्थान गर्भित संयमश्रेणिनी वातोने सरल रीते स्पष्ट करवा एकलुं स्तवन पर्याप्त नहीं थाय एटले साथे साथे स्वोपज्ञ टबानी पण रचना करी दीधी छे । बालावबोध स्वयं ज एटलो स्पष्ट छे के एनी विशेष कोई स्पष्टता करवानी जरूर जणाती नथी। तेओश्रीनुं अध्यापन-कौशल्य पण अद्भुत हशे एम आ टबा परथी अनुमान थाय छे।

रचनासमय :

आ कृतिनी रचना वैशाख सुद-३, १७९९मां थई छे जे कळशनी नवमी गाथाथी स्पष्ट जणाइ आवे छे । तेओश्रीए दीक्षा पछीना त्रीजा वर्षमां ज आ कृतिनी रचना करी छे जे तेओनी विद्वत्तानुं द्योतक छे ।

हस्तप्रत परिचय :

(१) V संज्ञक प्रत = आ प्रत वडाचौटा संवेगी जैन ज्ञानभण्डार, सुरत द्वारा प्राप्त थई छे। प्रत आसो वद-९, संवत् १८०० शुक्रवारे पादरा गाममां लखाई छे। तेना कुल मळीने १२ पाना छे। अक्षरो मोटा अने स्वच्छ छे।

(२) K संज्ञक प्रत = आ प्रत कैलाशसागरसूरि ज्ञानमन्दिर, कोबा द्वारा प्राप्त थई छे। प्रत चैत्र सुद-११ संवत्-१८०९मां गुरुवारे सुरत नगरमां लखाई छे। तेनां कुल १३ पानां छे। तेना अक्षरो नाना परन्तु सुवाच्य छे.

प्रतो आपवा बदल तत्तत्संस्थाना• सर्व सभ्योने अन्तरथी धन्यवाद।

*

॥ ई० ॥ ॐ[१] श्री गणेशाय नमः ।

[२]*॥ श्रीक्षिमाविजयगणि गुरुभ्यो नमः ॥*

॥ प्रथम गोवाला तणें भवेंजी - ए देशी ॥

॥ प्रथम ढाल ॥

केवलज्ञान दिवाकरुंजी, सिद्ध-बुद्ध सुखदाय ।
आतमसंपदा[३] भोगवेजी, वर्धमान जिनराय ॥१॥
गुणोदधि शाश(स)ननायक वीर,
मेरु महीधर धीर ।गु०॥ आंकणी

[४]श्लोकः श्रीवर्धमानजिनं नत्वा, वर्धमानगुणास्पदम् ।
स्वोपज्ञसंयमश्रेणिस्तवस्यार्थो वितन्यते ॥१॥

समस्तज्ञानावरणीयकर्मना क्षय थकी उपनुं जे केवलज्ञान तद्‌रूप सूर्य छइ । सिद्ध० क० क्षायकभावें सकलगुणनिष्पन्न छइ । बुद्ध० क० सकलवस्तुस्वभावनो जाण छइ । सुखदाय० क० उपगारीपणें सर्वसुखनो दातार छइ । आत्मसंपदा अनंतगुणपर्यायरूप स्याद्वादपणें प्रणमती तेहने भोगवे छइ [५]इत्यर्थः । एहवो वर्धमानस्वामी चोवीसमो तीर्थंकर जिन० क० सामान्य केवलीमां राजा सरिखो छइ. १.

गुणनो समुद्र गुणरूप रत्ननो उत्पत्तिस्थान छइ । वर्तमान शासननो अधिपति एहवो श्रीवीर परमेश्वर छइ । उपसर्ग-परिसह आवे अडग रह्या माटे मेरुपर्वतनी परे धीर छे । एतले त्रिविध नमस्कारमांहि इष्ट-समुचित नमस्कार कीधो ॥गुणो०॥

---

१. K श्री गणे० ।

२. *....* चिह्नान्तर्गतः पाठः न K. ।

३. V -संपद

४. ''सकलपण्डितचक्रचक्रवर्त्तिः पं. श्री५ खिमाविजय गणि शिष्य-मुष्य-पंडितपरषदभामिनीभालतिलक पं. श्री ३ जिनविजयगणि गुरुभ्यो नमः । सिद्धि-बुद्धिविधायिने श्रीमद् गौतमस्वामिने नमः । श्री सरस्वत्यै नमः ।'' इत्येतद् V. संज्ञक प्रतौअधिकं दृश्यते ।

५. छइ । V

अनुक्रमें संयम फरसतोजी, पाम्यो क्षायिकभाव ।
संयमश्रेणि फूलडेंजी, पुजुं पद निष्पाव ॥२॥ गु० ॥

अनुक्रमे उत्तरोत्तर प्रधानसंयमस्थानक फरसतो ॥ यदुक्तं **दशाश्रुतस्कंधे**-

''तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं [६+]अणुत्तरेणं दंसणेणं[+] अणुत्तरेणं चरित्तेणं अणुत्तरेणं आलएणं अणुत्तरेणं विहारेणं अणुत्तरेणं वीरिएणं अणुत्तरेणं अज्जवेणं अणुत्तरेणं मद्दवेणं'' (अ. ८/सू. ११९)

इत्यादिक मोहनी[य]कर्म क्षय करी उत्कृष्ट संयमस्थानकरूप खीणमोहगुणस्थान पाम्यो एहवा श्री वर्धमानस्वामीना संयमश्रेणिरूप भावफुलें करीनइं पुं० क० अर्चु छुं । पद० [७]कहेता० चरणकमल । निष्पा० क० पापरहित ॥२॥ गु० ॥

वाचक जसविजयें रच्योजी, संखेपे सज्झाय ।
विस्तर जिनगुण गावताजी, जीहा पावन थाय ॥३॥ गु० ॥

न्यायवादी शिरोरत्न महोपाध्याय श्रीजसोविजयगणीए रच्यो छइ । संखेपे तिक्षणबुद्धिगम्य संयमश्रेणिनो सज्झाय तो पिण विस्तररुचिनइं अर्थइं विस्तारें संयमस्थानगर्भित जिनेश्वरना गुण गावतां जिह्वा[८] तथा जन्म पवित्र थाय। उत्तमजीवनें ए मनोरथ ज होइ । यदुक्तं –

''चिरसंचियपावपणासणीए, भवसयसहस्समहणीए ।
[९]चोवीसजिनविणिगये । कह्या । ए बोल तुमें दिहा ।
(वंदित्तुसूत्र-४६)

एतलेइं मंगल[१०] – अभिधेयादिक कह्या ॥३॥ गु० ॥

बार कषाय खय-उपसमेजी, सर्वविरति गुणठाण ।
तेहना आदिम ठाणमांजी, पर्यवनुं परिमाण ॥४॥ गु० ॥

आदिम बार कषायनें खयोपशमें एतलें उदय आव्या दलिकनें क्षयें,

६. +....+ चिह्नान्तर्गतः पाठः K नास्ति ।
७. पद० चर० V.
८. जिभा K ।
९. चउवीसजिणविणिग्गयकहाइ, वोलंतु मे मे दिअहा ॥ इति शुद्धः पाठः ।
१०. मंगलीक V.

उदय नथी आव्या तेहनें उपशमें प्रदेशउदयने वेदइ एहवी अवस्ठा(स्था)इं वर्तता उपनो, अविरति बारनइं अभावें सर्वविरतिरूप जे छठ्ठो गुणस्थानक तेहना आदिम ठाणमां कहेतां सर्वजघन्य स्थानकमां एतलें प्रथम स्थान मध्ये, पर्यव क० निर्विभाग भाग एतलें केवलीप्रज्ञायें पिण जेहना बे अंस न थाय एहवा चारित्रना अंस तेहनुं प्रमाण-संख्या कहे छइ ॥४॥ गु० ॥

सर्वाकाशप्रदेशथीजी, अनंतगुणा अविभाग ।
बृहत्कल्पना भाष्यमांजी, भाखे तुं महाभाग ॥५॥ गु० ॥

सर्व आकाश० क० लोक-अलोकना आकाशप्रदेश जेत[ला]में अनंते छइ तेहथी अनं० क० अनंतगुणा अविभाग छइ । बृहत्कल्पना भाष्यमध्ये हे महाभाग - हे महापूज्य ! तुं कहे छै ॥ यदुक्तं –

ते कत्ती(त्ति)आ पएसा, सव्वागासस्स मग्गणा होइ ।
ते जत्तिआ पएसा, अविभाग तओ अणंतगुणा ॥१॥

(बृहत्कल्प भा-४५१२)

ते अविभाग सर्वोत्कृष्ट देशविरति विशुद्ध स्थानकना निर्विभाग भागथी सर्वजीव अनंतरूप गुणकारें अनंतगुणां जाणवा । ग्रन्थान्तरे - असत् कल्पनाइं उत्कृष्ट देशविरति विशुद्ध स्थानना अविभाग दश सहस्र १०,००० कल्पीइं । अनें सर्वजीव अनंत छे तेनें शत १०० रूप कल्पीइं । ते परस्पर गुणतां दश[११] लाख थाइ १०,००,००० । एतला अविभाग प्रथम संयमस्थानकमां छइ ॥५॥ गु० ॥

भाग अनंते आदिथीजी, बीजें ठाणें रे वृद्धि ।
इम अनन्त भागुत्तरेजी, थानिकनी होय सिद्धि ॥६॥ गु० ॥

पहेला संयम स्थानकथी अनन्तमें भागइं एतलें प्रथम संयमस्थानकमां जेतला अविभाग छइ ते सर्व जीवनें विहिंची (वहेची) आपता एक जीवनें भागें जेतला संयमना अविभाग आवें तेतला वधइ । बीजा संयमस्थानमांहें वृद्धि होइ । इम बीजा संयमस्थानथी तीजामां, तीजाथी चोथामां यथोत्तर अनंतभाग वृद्धि हुइ । तिम आगलि पिण संयमस्थानकनी निष्पत्ति जाणवी । ते केतलां होय ते आगल कहे छे[१२] ॥६॥ गु० ॥

११. गुणतां लाख थाइ १,००,००० V. । १२. ते कहे छे आगल प्रेथ K. ।

अंगुलभाग असंखमांजी, जे आकाश प्रदेश ।
तेतां थानिक नीपजेजी, कंडक तास निवेश ॥७॥ गु० ॥

अंगुलमात्र आकाशखे(क्षे)त्र तेहनो असंख्यातमो भाग तेहमां जेतला आकाशप्रदेश छइ, तेतला अनन्तभागवृद्धिना संयमस्थानक नीपजइ, एतलें नीपजावीइं । आगम-परिभाषाइं एतला स्थानकनो समुदाय तेहनें कंडकनी स्थापना जाणवी । एतलें एतलें कंडक कहिइ । उक्तं च –

"कंडकं एत्थ भणइ, अंगुलभागो असंखिज्जो ॥७॥ गु० ॥
(पंचसंग्रह – बन्धनकरण – ३५)

बीजें कंडकठाणमांजी, आदि असंख अंस जाण ।
तदनंतर नंतभागमांजी, थानक कंडक माण ॥८॥ गु० ॥

हवे अनंतभाग वृद्धि कंडकने अनंतर असंख्यातभाग वृद्धिनुं कंडक मंडाय, ते बीजा कंडकना आदि स्थानिकमां, अनंतभागवृद्धिना चरमस्थानकथी असंख्यातमें भागे वृद्धि जाणी एतले प्रथम कंडकना चरमस्थानकमां जेतला अविभाग छइ, ते असंख्य लोकाकाशना प्रदेशने वेहची आपीइ, एक प्रदेशनें भागे जेतला अविभाग आवें तेतलो असंख्यातमो भाग वधइ । तेहने अनंतर अनंतभाग वृद्धिना थानिक कंडकप्रमाण थाय । ते किम ? असंख्यातभाग वृद्धिना प्रथमठाणथीं अनंतमो भाग वधे एहवुं प्रथम तेनो अनंतमो भाग वृद्धिरूप बीजूं इम यथोत्तरें कंडकप्रमाण हुइ ॥८॥ गु० ॥

इम आगल पिण पाछिला स्थानिकथी आगिला स्थानमां भागवृद्धि तथा गुणवृद्धि पोतानी बुधे जाणवी ।

इम अनंतभागवृद्धिनेजीं, कंडक कंडक मध्य ।
ठाण असंख अंस वृद्धिनाजी, कंडक माने लद्ध ॥९॥ गु० ॥

इम अनंतभागवृद्धिना कंडकप्रमाण स्थानक अनइं असंख्यातभागवृद्धिनुं एक स्थानक ए रीतें अनंतभागवृद्धि कंडक-कंडकने विचालें असंख्य भागवृद्धिनुं एक एक स्थानक करता असंख्यातभागवृद्धिना स्थानिक केतला हुइ ते कहे छइ । कंडकप्रमाणे लाधा एतले एक कंडकप्रमाण थया एतलें षट्वृद्धिमांहि असंखभागवृद्धिरूप बीजी वृद्धि पूरी थई ॥९॥ गु० ॥

ते आगें नंतभागमांजी, थानिक कंडक मात ।
तदनंतर संखभागनुंजी, थानिक एक विख्यात ॥१०॥ गु० ॥

ते असंखभागवृद्धि कंडकनां चरम स्थानिकनें आगल अनंतर अनंत भाग वृद्धिना स्थानिक कंडक मात्र थाय एतलें कंडक प्रमाण करीइं । तिवार पछी संख्यातभागवृद्धिनुं एक स्थानिक प्रसिद्ध हुइ । एतलें पश्चात्य कंडकना चरम स्थानिकमां जेतला अविभाग छइ, ते उत्कृष्ट संख्यातपद साथे भाग देता एकने भागे जेतला आवें तेतला वधइ । इम आगल पण स्वबुधई जाणवुं ।''

ते उपर द्वयवृद्धिनाजी, जेता ठाण अतीत ।
ते कीधे संख्यभागनुंजी, बीजुं ठाण पवित्र ॥११॥ गु० ॥

ते संख्यातभागवृद्धिना प्रथमस्थानकनें उपरें बे वृद्धिना स्थानिक जेतला अतिक्रम्या छइ, एतले पूर्वे अनंतभागवृद्धि असंख्यभागवृद्धिना जेतला स्थानिक गया छें, ते सघलां प्रथम संख्यातभाग वृद्धि स्थानकनें आगल कीजीइं । ते कीधा पछी संख्यातभागवृद्धिनुं बीजुं स्थानक पवित्र संयम परिणामरूप आवें ॥११॥ गु० ॥

इम वृद्धिद्वय अंतरेजी, कंडक माने रे ईठ ।
अंश संख्यातें वृद्धिनाजी, थांनिक जिनवर पूठ ॥१२॥ गु० ॥

इम आगिल पिण बे बे वृद्धिना स्थानिकने विचाले एक एक संख्यातभागवृद्धिनुं स्थानिक करता कंडक प्रमाणे नीपजें । हे इष्ट = हे प्राणवल्लभ ! ते संख्यातभागवृद्धिना स्थानिक हे जिनवर = हे [१३]वीतराग ! ते(तें) फरस्या ॥१२॥ गु० ॥

वलि पूरवद्वय वृद्धिनाजी, थानिक सर्व करेह ।
आगल गुण संख्यातनुंजी, थानिक एक धरेह ॥१३॥ गु० ॥

वली संख्यातभागवृद्धि कंडकना चरमस्थानिकनें आगल पूर्वली बे वृद्धिना जेतला स्थानिक गया छइ तेतला सर्व स्थानिक करवां एतलें कीजीइं । तेने आगल संख्यातभागवृद्धिनुं कंडक पुरु थयुं ते माटे तेनइं ठामइं संख्यात गुण वृद्धिनुं एक संयमस्थानिक धरिए - तलें धरीइं थापीइं । एतलें पाछल

१३. श्रीवी०' K. ।

अनंतभागवृद्धिनुं कंडक गयुं छइ । तेना चरम स्थानिकमां जेतला अविभाग छे, ते उत्कृष्ट संख्यातगुणा कीजें । करता जेतला अविभाग थाय तेतला अविभाग प्रथम संख्यातगुणवृद्धि स्थानिकमां वधइ । इम आगल पिण स्वबुधे जाणवुं ॥१३॥ गु० ॥

इम त्रिकवृद्धि अंतरेंजी, गुण संख्यातना ठाण ।
कंडकमाने नीपजेजी, जाणे तु वरनाण ॥१४॥ गु० ॥

इम त्रिकवृद्धिनें विचालें एतलें अनंतभागवृद्धि १ असंखभागवृद्धि २ संख्यातभागवृद्धि [३] ए त्रण त्रण वृद्धिना स्थानिकनें विचालें एक एक संख्यातु गुणनुं स्थानिक करीइं । इम करता संख्यात गुणवृद्धिना स्थानिक कंडकप्रमाण नीपजइ । एतले षट्वृद्धिमांहि चोथी संख्यातगुणवृद्धि पूरी थई । संयमस्थानिक चारित्रपरिणामरूप अरूपी छइ । ते माटे हे सर्वज्ञ ! ते सर्व तुं जाणें छइ ॥१४॥ गु० ॥

पुनरपि त्रिक वृद्धितणाजी, पूरी थानिक सर्व ।
असंख्यात गुण वृद्धिनुंजी, थानिक एक अगर्व ॥१५॥ गु० ॥

संख्यातगुणवृद्धि कंडकना चरम स्थानिकथी आगल वली त्रण वृद्धिना एतलें अनंतभागवृद्धि १ असंख्यातभागवृद्धि २ संख्यातभागवृद्धिना ३ स्थानिक जेतला पूर्वे गया छइं ते सर्व संयमस्थानिक पूरीने – नीपजावीनें पछइ असंख्यातगुणवृद्धिनुं – "एतलें पश्चात्य अनंतर संयमस्थानिकमां जेतला अविभाग छइ ते असंख्यलोकाकाशप्रदेशप्रमाण गुणा करता जेतला थाय तेतला प्रथम असंख्यगुणवृद्धिस्थानमां अविभाग वधइ" । संयमस्थानिक एक आवे हे अगर्व ॥१५॥ गु० ॥

चउरंतर चउरंतरेजी, थानिक कंडक मेय ।
असंख्यात गुण वृद्धिनाजी, पंडित वीर्य वरेय ॥१६॥ गु० ॥

आगल पिण च्यार च्यार वृद्धिनें विचालें एक [१४]एक असंख्यातगुण वृद्धिनुं स्थानक नीपजें । इम नीपजावता कंडकमात्र थाय । असंख्यातगुण वृद्धिना संयमस्थानिक एतले असंख्यातगुणवृद्धिना प्रथम स्थान पछी अनंतभागवृद्धि

---

१४. विचालें एक असं० V. ।

१ असंख्यभागवृद्धि २ संख्यातभागवृद्धि ३ संख्यातगुण वृद्धि ४ एवं च्यार वृद्धिना स्थान कर्या पछी असंख्यगुणवृद्धिनुं बीजूं स्थान आवे । ए रीते च्यार च्यार वृद्धि विचाले एक एक स्थानक करता कंडकमात्र थाय । एतले षट्वृद्धिमांहि असंख्य गुणवृद्धिरूप पांचमी वृद्धि पूरी थई । ए सर्व संयमस्थान रूप आत्मगुण हे वीर परमेश्वर ! तुमें पंडितवीर्ये करीने वर्या - पाम्या एतला वास्ती तुम्यो वंद्य-पूज्य-स्तुत्य छो । तुमने स्तवता एहवा गुण पामीइं ॥१६॥

उपर वली चउवृद्धिनाजी, फरसें थानिक सार ।
तदनंतर नंतगुणनुंजी, थानिक एक उदार ॥१७॥ गु० ॥

असंखगुणवृद्धि कंडकना चरमस्थानकनें उपर वली च्यार वृद्धिना एतले अनंतभागवृद्धि १ असंख्यभागवृद्धि २ संख्यातभागवृद्धि ३ संख्यातगुणवृद्धि ४ ए च्यार वृद्धिना [१४A]एम सर्वथानिक फरसे । हे सार ! हे जगत् उत्कृष्ट ! तिवार पछी आंतरारहित अनंतगुणवृद्धिनुं एक प्रथम स्थानक मोटु आवे एतले पश्चात्य अनंतर संयमस्थानिकमां जेतला अविभाग छइ ते सर्वजीवरूप अनंत साथे अनंतगुणा करता जेतला अविभाग थाय तेतला अनंतगुणवृद्धिना [१४B]प्रथम स्थानिकमां अविभाग वधइ ॥१७॥ गु० ॥

पंच पंच वुड्ढि विचेजी, ठाण एक एक जोय ।
इम अनंतगुणवुड्ढिनाजी, कंडकमाने होय ॥१८॥ गु० ॥

अनंतगुणवृद्धिना प्रथमस्थानक पछी अनंतर अनंतभागवृद्धि १ असंख्यभागवृद्धि २ संख्यातभागवृद्धि ३ संख्यातगुणवृद्धि ४ असंख्यातगुणवृद्धि ५ एवं पांच वृद्धि रूप सर्व संयमस्थानिक उपने । त्यार पछी एक अनंतगुणनुं बीजूं संयमस्थानिक आवे । ए रीते पांच पांच वृद्धिनें विचे एक एक अनंत गुणवृद्धिनुं स्थानिक नीपजें । ते ज्ञानदृष्टे जुओ । इम करता अनंतगुणवृद्धिना संयमस्थानक केतला होइ ते कहे छे । कंडकप्रमाणे होय ते अंगुलना असंख्यातमा भागमां जेतला आकाशप्रदेश छइ ते प्रमाण जाणवा ॥१८॥ गु० ॥

उपर वली पंच वृद्धिनाजी, फरसें संयम ठाण ।
प्रवचन अनुसारे कह्युंजी, षट स्थानिक परिमाण ॥१९॥ गु० ॥

१४A. ०ना सर्व V । १४B. संयम. V ।

अनंतगुणवृद्धि कंडकना चरमस्थानिकनें उपर वली मूल थकी पांच वृद्धिना सर्व संयमस्थानिक फरसें पिण पांच वृद्धि कर्या पछी प्रसंगे आव्युं अनंतगुण वृद्धिनुं स्थानिक ते न करवुं । जे माटे षट्स्थानिक पूरुं थयुं ते माटे । प्रवचन अ० कहेता कल्पभाष्य तथा प्रवचनसारोद्धारनी टीकानें अनुसारें कह्युं । षट्स्थानिकनुं परिमाण परूपणा । एतावता स्वमतिकल्पनाइं नथी कह्युं ॥२०॥ गु० ॥

असंख लोकाकाशनाजी, प्रदेशने परिमाण ।
एक षट थानिक उपरेंजी, उठें वली षटठाण ॥२०॥ गु० ॥

एक चौद राज प्रमाण लोक छे । एहवा असंख्याता लोक अलोकमां कल्पीइं । तेहना जेतला आकाशप्रदेशनो समुह तेतला प्रदेशने परिणामइं । उक्तं च –

छ ठाणग अवसाणे, अन्नं छठाणयं पुणो अन्नं ।
एवमसंखा लोग्ग(गा), छठाणाणं मुणेयव्वा ॥१॥ [ ]

एक प्रथम मूल षट्स्थानिकनें उपरि उपरि वली बीजा षट्स्थानिक उपजे । एतावता असंख्यातीवार उपरा-उपरी षटस्थानिक थाय इति ॥२०॥ गु० ॥

एह संयमगुणठाणमांजी, जे वरते मुनि सोय ।
वंद्य अपर भजनापणेंजी, भाष्य-कल्पमां जोय ॥२१॥ गु० ॥

एह संयम गुणठाण० क० चारित्रगुणना स्थानिकमां एतले छट्ठा गुणठाणना आदिस्थानिकथी मांडी यथाख्यात चारित्ररूप चरमस्थान पर्यंत तेहमां जे मुनिराज वरते छइ, ते वांदवा योग्य, पिण वेष मात्रनो प्रयोजन नही । उक्तं च –

वेसो वि अप्पमाणो, असंयमपएसु वट्टमाणस्स ।
किं परिअत्तियवेसं, विसं न मारेइ खज्जन्तं ॥१॥
(उपदेशमाला - २११)

इति । अपर० क० बीजा संयमश्रेणिथी बाह्य ते भजनाइं वंदनीक एतावता कारणें वंदवायोग्य कारण विना नहि । ए अर्थ बृहत्कल्पभाष्यमां जोयो । उक्तं च –

संयमठाणठियाणं, किइकम्मं ब(बा)हिराण भइयव्वं ।

(बृहत्कल्पभाष्य-४५१५)

इति ॥२१॥ गु० ॥

षटस्थानिक संयमतणाजी, कहतां स्तवतां रे वीर ।
खिमाविजय जिन भक्तथीजी, उत्तम लहे भवतीर ॥२२॥ गु० ॥

षटस्थानिक नाम अनंतभागवृद्धि १ असंखभागवृद्धि २ संख्यातभागवृद्धि ३ संख्यातगुणवृद्धि ४ असंख्यातगुणवृद्धि ५ अनंतगुणवृद्धि ६ । इहा भाग तथा गुण कुण संख्याइ ते जाणवाने अर्थे आगमगाथा –

सव्वजिएहिं अनंतं भागं च, गुणं असंखलोगेहिं ।
जाण असंख संखं, संखिज्जेणं च जिट्ठेणं ॥१॥

(गुरुतत्त्वविनिश्चय - १/१४२)

एहनो अर्थ - इहा षट्वृद्धिरूप षटस्थानिकनें विषे अनंतभाग ने अनंतगुण सर्व जीवे जाणवा । असंख्य भाग तथा असंख्य गुण असंख्यात-लोकाकाश प्रदेशे, संख्यातभाग तथा संख्यातगुण उत्कृष्ट संख्याते । तथाहि - जे संयमस्थानक अनंतभागवृद्धि पामइ ते पाछिला संयमस्थानकना जे अविभाग तेहनुं सर्व जीवसंख्या प्रमाणें भाग हरते जेतला लाभीइं तावत प्रमाण अनंतभागइं अधिकुं जाणवुं । जे असंख्यातभागवृद्धि ते पाछिला संयमस्थानिकना निर्विभाग असंख्य लोकाकाश प्रदेश प्रमाण भाग हरतइ जे पामीइ तावत् प्रमाण असंख्येय भागे अधिकु जाणिवुं । जे संख्यात भागे वृद्धि ते पाछिला संयमस्थानकना अविभाग तेहनुं उत्कृष्ट संख्यातक राशि भाग हरता जे लाभइं तेतलें संख्यात भागें अधिकुं जाणवुं १ संख्यातगुणे वृद्धि ते पाछिला संयमस्थानना जे निर्विभाग भाग उत्कृष्टसंख्यातगुण राशि गुणता थाय तावत् प्रमाण जे असंख्यातगुणवृद्धि ते पाछिला संयमस्थानना जे अविभाग तेहने असंख्याता लोकाकाशना जे प्रदेश तद्गुणित करीइं । तावत् प्रमाण जे अनंतगुणवृद्धि ते पूर्व संयमस्थानना विभाग सर्वजीवानंतगुणाकारें गुणिइं तावत्प्रमाण इत्यर्थः ।

एह संयमना षट्स्थानिक कहेता संयमश्रेणि गर्भित वीर परमेश्वर स्तवता तथा वली खिमा गुणें करीनें विजय कर्यो छे मोहनो जेणे

"अणुत्तराए खंतिए" (दशा. अ. ८/ सू. ११९)

इति वचनात्, एहवा जिन कहेता वीतराग श्रीवीरस्वामी तेहनी भक्तिथी उत्तम जीव भवसमुद्रनो पार पामे – सिद्ध परमेश्वर थाय ।

एतावता पंडितश्री पं. श्रीखिमाविजय गणि तत् शिष्य पं. श्रीजिनविजयगणि तेहनी भक्तिथी मुनि उत्तमविजय भवनो पार पामें ए पिण जाणवुं ॥२२॥ गु० ॥

॥ द्वितीय ढाल ॥

॥ ढाल – महिनानी ॥

पूर्वोक्त संयमस्थान सुगम थाय ते माटे यंत्रनो ढाल श्रीवीरप्रभुनी स्तवना करता कहीइं छे [१५]॥२२॥ गु० ॥

[१६]*अथ महीनानी देशी लखी छइ ।*

वस्तुस्वभाव प्रकाशक भाशि(सि)त लोगालोग[१७],
वीर जगतगुरु भोगवें रत्नत्रयीनो भोग ।
संयम षट थानिक सूक्ष्मबुद्धि गम्य,
स्व-पर विबोधन हेतें थापु यंत्र सुरम्य ॥१॥

सदसदादिक अनंतधर्मात्मक वस्तुस्वभाव तेहनो प्रकाशक तथा केवलज्ञान आदर्शमां भाश्यो छे लोकालोक जेहनइ [१८]श्रीवीर परमेश्वर जगतनो गुरु भाव रत्नत्रयीनो आस्वाद अनुभवे छे । "सम्यग्ज्ञानं – यथार्थावबोधं, सम्यग्दर्शनं – तत्त्वप्रतीतिः, सम्यक्चारित्रं – निजस्वरूप रमण थिरता रुपं" इति रत्नत्रयी । संयमना षटवृद्धिना स्थानिक तिक्षण बुद्धिइं गम्य छें । ते माटें पोतानें तथा परने समझावानें[१९] काजें असत् कल्पनाइं मनोहर यंत्र थापु छइं ।

तत्र अनंतभागवृद्धि स्थानें मींडा, असंख्यातभाग वृद्धिस्थाने एकडा, संख्यातभागे वृद्धिस्थाने बगडा, संख्यातगुणवृद्धि स्थाने त्रगडा, असंख्यातगुणवृद्धि

---

१५. छे, इति संबन्धः V ।
१६. *....* चिह्नान्तर्गतः पाठः V मध्ये नास्ति ।
१७. लोका... K ।
१८. ०नइ.वीर V ।
१९. समझवानें V ।

स्थाने चोगडा, अनंतगुणवृद्धि स्थाने पांचडा इति, असत् कल्पनाइं च्यार मींडाने अनंतभागवृद्धि कंडक च्यार एकडे असंख्यभागवृद्धि इत्यादि संज्ञा ॥१॥

भाग अनंतह वृद्धिना ठाण छे कंडक सार,
छे यद्यपि असंख्य ठवुं तस बिंदु च्यार ।
असंख्यभागवृद्धिनुं थानिक आगल एक,
तस ठामे ठवु एको मन धरी अतिहि विवेक ॥२॥

अनंतभागवृद्धिना स्थानिक भला कंडकमात्र अंगुलअसंखभागगत आकाशप्रदेशप्रमाण छइ । यद्यपि ते अनंतभागवृद्धिना स्थानिक असंख्याता छें तो पिण असत् कल्पनाइं तेहना च्यार बिंदु थापु छुं एतले अनंतभाग वृद्धिकंडक पुरू थयुं । ते माटे आगल असंख्यातभाग वृद्धिनुं स्थानिक एक आवे । तेहनें ठामे १ एकडो मनमां अत्यंत विवेक धरीने थापुं छुं । पूर्वोक्त स्थानकथी भिन्न पाडवा निमित्ते, इम सर्वत्र जाणवुं ॥२॥

चउ [२०]चउ बिंदु अंतर इंम होय एका च्यार,
तदनंतर चउ बिंदु सघला वीस उदार ।
आगल भाग संख्यातह बुद्धिनो बीजो जाणि,
इम चउ बीया ठवता मींडा शत परिमाण ॥३॥

वली आगल अनंतभागवृद्धिना कंडकमात्र थानिक थाय तेहने ठामें च्यार बिंदु थापीइं । आगल असंख्यभागनुं एक स्थानिक छे माटे वली एकडो थापीइ । ए रीते च्यार च्यार बिंदुने आंतरइ च्यार एकडा थाय । एतले असंख्य भाग वृद्धि कंडक थयुं । तिवार पछी आंतरा रहित अनंतभागवृद्धिनुं कंडक आवें । तेहनें ठाम च्यार बिंदु थापीइं । एतले सघला सरवाले च्यार एकडा नें वीस मींडा थाय । आगल संख्यातभागवृद्धिनुं स्थानिक एक आवे । तेहने ठाणे बगडा थापना जाणि । ए रीते च्यार एकडा गर्भित वीस बिंदु अनंत संख्यात भागवृद्धिनो एक एक बगडो आणतां जिवारे च्यार बगडा आवइ तिवारइ संख्यातभागवृद्धि कंडक पूरुं थाय त्यार पछी वली च्यार एकडा गर्भित वीस मींडा आवइ ॥३॥

---

२०. चउबिंदु अंतरइ महोदय एका च्यार. K ।

चउ बीआ वीस एका मींडा शत समुदाय,
भागनी वृद्धिमांहे थया हवे गुणा वृद्धि कहाय ।
संख्यात गुणनी वृद्धिमां तीओ आदि उदार,
इम सवि मींडा अंका [२१]विचि ठवि तिआ च्यार ॥४॥

संख्यातभागवृद्धि पर्यंत सर्वसमुचइ मींडा १००, एकडा २०, बगडा ४ । एतावता संख्यातभागवृद्धिनुं कंडक १ असंख्यातभागवृद्धिना कंडक ५ अनंतभागवृद्धिना कंडक २५ एतला स्थानिक भागनी वृद्धिमां थया । हवे गुणवृद्धिमांहे जे थाइ ते कहे छइ । हवइ आगल संख्यातगुणवृद्धिनुं एक स्थानिक आवे तेहनें ठामें एक ३ त्रगडो थापीइं । एतलें संख्यातगुणवृद्धिमां प्रथम उत्तमस्थाननो त्रगडो जाणवो । ए रीते वली च्यार बगडा वीस एकडा गर्भित शत मींडा अनंतर बीजो त्रगडो आवे । इम च्यार त्रगडा थाय । ए च्यारे त्रगडे संख्यातगुणवृद्धिरूप कंडक पूरुं थयुं । चोथा त्रगडाने अनंतर वली च्यार बगडा, बीस एकडा, शत मींडा थापीइं ॥४॥

वीस बीआ शत एका पण सय बिंदुमान,
असंख्यात गुण वृद्धिनो चोको [२२]धुरे मंडाण ।
इम [२३]चउ चोका आणता तिस वीस द्विक शत जोय,
पणसय एकडा मींडा पंञ्चवीससइं होय ॥५॥

सर्व मली संख्यातगुणवृद्धिपर्यंत त्रगडा ४, बगडा वीस २०, एकडा १००, मींडा ५०० । एतावता संख्यातगुणवृद्धिनुं कंडक १, संख्यात भागवृद्धिना कंडक ५, असंख्यातभागवृद्धिना कंडक २५, अनंतभागवृद्धिना कंडक १२५ । तिवार पछी असंख्यातगुणवृद्धिरूप प्रथम स्थानकनो चोगडो मांडीइं । ए रीतें च्यार त्रगडा, वीस बगडा, एकडा १०० सहित मींडा ५०० गये थके बीजो चोगडो मांडीइं । ए परिपाटी च्यार चोगडा थाइ एतले असंख्यातगुण वृद्धिनुं कंडक पूरु थयुं । चोथा चोगडाने अनंतर ४ त्रगडा, २० वीस बगडा, १०० एकडा, ५०० मींडा थापीइं । सर्व मली चोगडा ४, त्रगडा २०, बगडा १००, एकडा ५००, मींडा २५०० । एतावता असंख्यातगुणवृद्धिनुं कंडक १, संख्यातगुणवृद्धिना कंडक ५, संख्यातभागवृद्धिना कंडक २५, असंख्यात

---

२१. चित चिंते आ च्यार । २२. धूरि V. । २३. इम चोका K. ।

भागवृद्धिना कंडक १२५ अनंतभागवृद्धिना कंडक ६२५ ॥५॥

हवे अनंत गुण वृद्धि पदे ठवि पंचक चंग;
पुनरवि पूरव रीतें, मींडा अंक सुरंग ।
तिवार पछी पंचक इम पंचक चउ जव थाय,
आगे पिण पंचवीससें मींडा अंक कराय ॥६॥

हवे अनंतगुणवृद्धि पदे० क्र० अनंतगुण वृद्धिरूप प्रथम स्थानकने ठामे एक पांचडो थापीइं । पुनरपि पूरव रीतें चोगडा ४, त्रगडा २०, बगडा १००, एकडा ५०० गर्भित मींडा २५०० थापीइं । तिवार पछी बीजो पांचडो थापीइं । ए रीते अनुक्रमें जिवारें पांचडा च्यार थाइ तिवारें अनंतगुणवृद्धि कंडक पुरुं थाय । आगल पिण चोथा पांचडाने अनंतर चोगडा ४, त्रगडा २०, बगडा १००, एकडा ५०० युक्त मींडा २५०० करीइं । एतलें षट्स्थानक पूरुं थयुं ॥६॥

पांचडा चोगडा त्रगडा बगडा एकडा बिंदु,
षट थानिकना यंत्रनी संख्या कहे जिनचंद्र ।
चउ-वीस-सय-पणसय-पंचवीससय सार,
अंका मींडा गणता, साढा बार हजार ॥७॥

षट्स्थानमध्ये आंक तथा मींडानी संख्या आवीने पश्चानुपूर्वीइं कहीइं छइ । पांचडा तथा चोगडा तथा त्रगडा तथा बगडा तथा एकडा तथा बिंदू तेहना समुदाय रुप षट्स्थानकना यंत्रनी संख्या जिनचंद्र रिषभादिक कहइ । हे वीर परमेश्वर ! तिम तुमें फरसी पांचडा ४, चोगडा २०, त्रगडा १००, बगडा ५००, एकडा २५००, मींडा गणता साढा बार हजार १२,५०० सरवालें थाय। एतावता अनंतगुणवृद्धि कंडक १ असंख्यातगुणवृद्धिना कंडक ५, संख्यातगुण वृद्धिना कंडक २५, संख्यातभागवृद्धिना कंडक १२५, असंख्यातभागवृद्धिना कंडक ६२५, अनंतभागवृद्धिना कंडक ३१२५ । सर्व मली ३९०६ कंडक थया। सरव यंत्र प्रमाणे असत् कल्पनाइं लख्युं छइं । परमार्थ रीते आगली ढालमां कहिस्युं ॥७॥

संयम श्रेणिमां श्रेणिक्षपक लहि शुक्लध्यान,
घातीकरमनो क्षय थकी पांम्यो पंचमज्ञान ।

प्रवचनसारनी वृत्तिमां यंत्रनी ठवणा दीठ,
खिमाविजय जिन वयणथी उत्तम चित्त पविट्ठ ॥८॥

संयमश्रेणि आरोहता अनुक्रमें क्षपकश्रेणिमांहि शुक्लध्यान पामीनें घातीया ४ कर्मक्षय करता यथाख्यात चारित्र, केवलज्ञान, केवलदर्शनरूप रत्नत्रयी पाम्या । तदनुक्रमें यथा [२४]अप्रमत्त गुणठाणें अनंतानुबंधी ४, दर्शनमोहत्रिक[२५] एवं ७ प्रकृतिक्षय करी अपूर्वकरण, अनिव्रत(वृत्ति) गुणठाणें चढी अनिवृत्तना प्रथमभागने अंते १६ खपावइं । तन्नाम–

''थावर तिर(रि) निरयायवदुग, थि(थी)णतिगेग विगल साहारं''
(कर्मग्रंथ – २/२८)

ति । बीजा भागने अंते अप्रत्याख्यानीया ४, प्रत्याख्यानीया ४, एवं ८ प्रकृति खपावें । त्रीजें भागें नपुंसकवेद, चोथे भागे स्त्रीवेद, ततः पंचमे भागे हास्य छक्क ६, छट्ठे भागे [२६]पुरुषवेद, सातमे भागे संज्वलनक्रोध, अष्टमे भागे संज्वलन मान, संज्वलन माया, नवमें भागे एतले नवमे गुणठाणें २० खपावे । पछइं दशमइ गुणठाणइ लोभ । शुक्लध्याननो प्रथक्क(पृथक्त्व) वितर्क सविचार[२७] रूप प्रथमपाद तद्रूप अनलें करी सकल मोहनी[य] भस्मसात् करे । पछइ खीणमोहगुणठाणें चढइं । क्षायिक चारित्रवान् थाय । तिहां एकत्व वितर्क अविचार[२८]रूप शुक्ल ध्याननो बीजो पाद अनुभवी, द्विचरमसमये निद्रादुग खपावी, चरम समयें ज्ञानावरणीय ५ दर्शनावरणी ४ अंतराय ५ एवं १४ प्रकृतिनें क्षयें अनंतचतुष्टयी विभूषित सिद्धवधू योग्य थया इति तत्त्वम्[२९] ।

श्रीसिद्धसेन दिवाकर कृत्य प्रवचनसारोद्धारनी वृत्तिमांहि षट्स्थानकना यंत्रनी स्थापना दीठी । ते खिमाइं उपलक्षि दशविधधर्म तेने करी विशेषइ जयवंता जिन कहेता श्रुतकेवली, अवधिजिन, मनःपर्यवजिन, एहवा सुधर्मास्वामी तेहना वयण कहेता वर्तमान आगम तेहथी उत्तम साधु–साध्वीनें फरसन रूपें तथा उत्तम श्रावक–श्राविकानें श्रद्धा–मनोरथ रूपे संयमश्रेणि चित्तमां पेठी ।

---

२४. प्रथम K ।
२५. मोहनीत्रिक. K ।
२६. पुंवेद. V ।
२७. सप्रविचार. K ।
२८. अप्रविचार K ।
२९. इति V. ।

एतलें पं. श्री**खिमा**विजयगणि शिष्यरत्न पं. श्री**जिन**विजयगणिना वचनथी मुनि-**उत्तम**विजयनां चित्तमां यंत्रनी स्थापना पेठी-स्थिरपणइं रही इति ए पिण सूचव्युं ॥८॥

सरव [सर्व] गाथा ४०

॥ तृतीय ढाल ॥

॥ ढाल - एकवीसा ॥

प्रथम ढाले षटस्थान प्ररूपणा कीधी, बीजी ढालें तेहनी यंत्र स्थापना करता थूलबुद्धिनें पिण सुखइ समझणा । हवइं एकांतरादिक मार्गणाइ कोइ पूछइ तेहनइ सुखइ कही सकीइं ते माटे श्री[३०] वीरप्रभुनी स्तवना करता अधस्तन[३१] स्थान प्ररूपणानो ढाल कहीयइं छइं ।

आतमरामी रे शिवविसरामी नित्य नमुं,
प्रभुजी स्तवता रे, पाप पोताना निगमुं ।
षटथानिक रे, जे अहठाण परूपणा,
सुणो सयणा रे वयणा कल्पनी भाष्यना ॥१॥ ॥ त्रुटक ॥

शुद्ध, निर्मल, निकलंक, आत्मस्वभावरमणशील, निरुपद्रव, स्थानक्षेत्रथी उर्ध्वलोकाग्र, भावथी निरावर्णावस्था, तेहने विषे विसरामी एहवा श्री[३२]वीर प्रभूनइ नित्त्य सदा नमुं । प्रभुजी स्तवता अनेक भवोपार्जित पोताना कर्या क्षीरनीर परइं अभेद रह्या जे पापकर्म ते नीगमुं ।

"प्रभोर्नमस्कार-स्तुतिफलमेतदेव" ।

संयमना षट स्थानिकने विषे जे अनंतर एकांतरादिक अहठाण प्ररूपणा छइ । हे सयणा ! हे सम्यग्दृष्टि ! उत्तम जीवो सांभलो । ए वयणा - वचन बृहत्कल्पभाष्य वृत्तिना छइ ॥१॥

आदि असंख्य अंस वृद्धिथी कहो, भाग अनंत अंश केतला,
हेठ थानिक इम पुछत, कहिइ कंडक जेतला ।

---

३०. माटे वीर. V ।
३१. अधस्थान. V ।
३२. ०वा वीरने. K ।

भाग संख्यातह गुण संख्यातें, असंख्य अनंतह गुण वली,
तस प्रथमथी कहें अधअनंतर, कंडकमानें केवली ॥२॥

॥ इत्यनंतरमार्गणा ॥

असंख्यातभागवृद्धिना प्रथम संयमस्थानकथी हे उत्तमजीवो ! कहो अनंतभागवृद्धिना हेठल स्थानक केतला गया ? इम कोइ जीवें पूछ्या थकां कहीइं – जे एक कंडक जेतला गया छे । जे माटइ अनंतभागवृद्धि कंडकने अनंतरज असंख्यभागवृद्धिनुं प्रथमस्थानक थयुं छे ते माटे । इम संख्यातभागना प्रथम स्थानकथी असंख्यभागवृद्धिना स्थानक तथा संख्यातगुणवृद्धिना प्रथम स्थानथी संख्यातभागवृद्धिना स्थानक तथा असंख्यातगुणवृद्धिना प्रथम स्थानथी संख्यात गुण वृद्धिना स्थानक तथा अनंतगुणवृद्धिना प्रथम स्थानकथी असंख्यातगुणवृद्धिना स्थानिक कोई पूछई तिवारइं सर्वत्र हेठलि आंतरा रहित मार्गणाइं कंडकप्रमाणें संयमस्थानक केवली कहे । यदुक्तं पंचसंग्रहे –

"सव्वासिं वुड्ढि(ड्ढी)णं, कंडकमेत्ता अनंतरा वुड्ढि(ड्ढी) ।

(पंचसंग्रह-बंधनकरण-५२)

॥ इत्यनंतर मार्गणा ॥

एकांतर रे मार्गणा सुणो सवि संत रे,
भाग संख्याते रे मूल थानिकथी तंत रे ।
हेठि थानिक रे भाग अनंतना भाखीइं,
एक कंडक रे कंडक वर्ग ते दाखीइं ॥३॥

हवे एकांतर मार्गणा हे सर्व संतो ! उत्तमो ! सांभलो । एकांतरमार्गणा ते स्युं ? – एक वृद्धि विचाले मूकीनें पूछवु । संख्यातभागवृद्धिना मूल स्थानकथी प्रथम स्थानथी हेठल अनंतभागवृद्धिना स्थानक केतला गया ? इम कोई एकांतरे पूछइ तिवारइ एम प्रकाशीइं – एक कंडक अने कंडकवर्गप्रमाण । जे माटे हेठल असंख्यभागवृद्धिना स्थानक कंडकमात्र गया छें । अने एक एक असंख्यभागवृद्धि स्थानने हेठल एक एक अनंतभाग वृद्धिनुं कंडक गयुं छइ । असंख्यात भाग वृद्धिना स्थानको कंडक मात्र छे । ते माटे कंडक-कंडक साथइ गुणीइं एतले कंडक[३३] वर्ग थाय ।

३३. एतले वर्ग. K ।

"तद्गुणो वर्गः" इति वचनात् ।

अनइं असंख्यभागवृद्धि उपरें अनंतभागवृद्धिनुं एक कंडक थयुं छइं। ते माटे कंडकवर्ग अने एक कंडक प्रमाण अनंतभागना स्थान गया छइ इम कहीइ ॥३॥

दाखीइं गुण संख्यातथी वली असंख्य अनंत गुणथी तथा
पढम ठाणथी एक अंतर, कंडक वर्ग कंडक यथा

॥ इति एकांतरमार्गणा ॥

इम वली संख्यातगुणवृद्धिना प्रथम स्थानकथी असंख्यातभागवृद्धिना स्थानक तथा असंख्यातगुण तथा अनंतगुणवृद्धिना प्रथम स्थानकथी हेठलि संख्यातभागवृद्धिना तथा संख्यातगुणवृद्धिना स्थानक एकांतर मार्गणाइं केतला पामीइं ? इम कोई पूछई-तिवारे इम कहीइं-जे कंडकवर्ग अनइ उपर एक कंडक जिम पूर्वे कह्या छै तिम समझवा । इति एकांतरमार्गणा । यदुक्तं पंचसंग्रहे–

एगंतराओ वुड्ढीए, वग्गो कंडस्स कंडं च ।
(पंचसंग्रह-बंधनकरण - ५२)

एक अंतर मार्ग कही सुणो ह्यं(द्व्यं)तर मार्गणा,
संख्यात गुणथी हेठि थानिक अनंत भागना शुभमना ॥४॥

ए रीतें एकांतर मार्गणा कही । हवेंइ द्व्यंतर मार्गणा सांभलो । द्व्यंतरमार्गणा ते बे वृद्धि विचालें मूकीनें पूछीइं । संख्यातगुणना प्रथम स्थानिकथी अनंतभागवृद्धिना स्थानक केतला ? हे शुभमना ! ते कहियइं छइ ॥४॥

कंडक घन रे कंडक वर्ग दुगुण करो,
एक कंडक रे तस संख्या मनमा धरो ।
दुग अनंत रे असंख अनंत गुणथी लह्या,
अध स्थानक रे पूरव पणे जाणो कह्या ॥५॥

॥ इति द्विकांतर मार्गणा ॥

कंडक घन १ कंडक वर्ग २ अनें *[३३]एक कंडक पामीइं । ए सर्व भेला करता संख्या थाय ते मनमा धरो ।*

इहा संख्यातगुणवृद्धिना प्रथम स्थानकथी हेठल एकएक संख्यातभाग वृद्धि स्थानकनें हेठल प्रतेके एक एक कंडकाधिक कंडकवर्ग अनंतभाग [३३A]वृद्धि स्थानकनो पामीइं अने संख्यातभागवृद्धि स्थानक कंडकप्रमाण छइ । तै वास्ती कंडकवर्ग·जिवारें एक कंडक साथइ गुणीइं तिवारइं कंडकघन थाइ। अने एक कंडक छइ ते कंडक साथइ गुणीये तिवारइ कंडकवर्ग थाय । अने संख्यातभागवृद्धि स्थानकनें हेठल कंडक वर्ग-१ अनें एक कंडक पामीइं । ए सर्व भेला करता सूत्रोक्त प्रमाण थाय । इम आगलि पिण दुगंतर मार्गणाइं असंख्यातगुणवृद्धिना प्रथम स्थानथी तथा अनंतगुणवृद्धिना प्रथम स्थानकथी यथाक्रमें हेठल असंख्यातभागवृद्धिना तथा संख्यातभागवृद्धिना संयमस्थानक पूर्वे जिम कह्या छे तिम जाणो । यदुक्तं पंचसंग्रहे –

"कंडं कंडस्स घनो, वग्गो दुगुणो दुगंतराओ"

(पंचसंग्रह-बंधनकरण - ५३)

॥ ५ ॥ इति द्विकांतर मार्गणा ।

त्रिके अंतर कोई पूछे आदि असंख्य गुणवृद्धिथी,
हेठे भाग अनंत केरा ठाण कहो गुरुवयणथी ।
कंडक वर्गनो [३४]वर्ग कीजे, कंडक घन त्रिक उपरें;
कंडक वर्ग त्रिक एक कंडक होइ ते मनमा धरे ॥६॥

हवइ त्रिकांतर मार्गणाइं कोई पूछें एतलें त्रिण वृद्धि विचालें मूकीनइ प्रथम जे असंख्यगुणवृद्धिनुं स्थानक तेहथी हेठल अनंतभागवृद्धिना स्थानक केतला गया ते कह्यो । सुविहित गीतार्थ गुरुना वचन जाण्या होय तो एककंडक वर्ग वर्ग एतलें जिम असत् कल्पनाइं च्यार आंकने कंडक थापीइं तेहनो वर्ग करता सोल थाइ, तेहनो वर्ग करता २५६ थाइ, ए रीते असंख्यातानो समझवो। उपर वली कंडक घन त्रण ३ तथा वली कंडक वर्ग ३ वली उपर एक

---

३३. *.... * चिह्नान्तर्गतः पाठः K मध्ये नास्ति ।

३३A. ०भाग स्थानकनो. K । ३४. वर्गनो वर्ग वर्ग० V ।

कंडक होय ते सर्व उत्तम श्रद्धा सहित मनमां राखे । ए संख्या किम जाणीइं ? जे माटे प्रथम असंख्यगुणवृद्धिना स्थानथी हेठल संख्यातगुणवृद्धिना स्थानक कंडक[३५] माने गया छइ । तिहां एक एक स्थानकनें[३६] हेठल प्रतेके अनंतभागवृद्धिमानां स्थान कंडकघन १ कंडकवर्ग २ कंडक १ प्रमाण थापीइं । ते माटे ए सर्वने कंडकवर्गणा करीनें सरवालो करी राखीइं । संख्यातगुण-वृद्धि कंडकने उपरि कंडकघन-१ कंडकवर्ग-२ एक कंडक छे ते पूर्वे राशिमां प्रक्षेपीइं । तिवारइ यथोक्त मान थाय । यदुक्तं पंचसंग्रहे –

''कंडस्स वग्गवग्गो, घणवग्गा तिगुणिया कंडं''

(पंचसंग्रह / बंधनकरण - ५३)

इति ॥६॥

छठी वृद्धिना रे पहेला ठाणथी हेठला,
बीय वृद्धिना रे थानिक पूरव जेतला ।

॥ इति त्रिकांतर मार्गणा ॥

इम छट्ठी अनंतगुणवृद्धिना पहेला स्थानकथी हेठल बीजी वृद्धिना = असंख्यातभागवृद्धिना स्थानक पिण पूर्वे जेतला एतलें त्रिकांतर वृद्धिना अनंतर कह्या छइ तेतला जाणवा । [३७]*इति त्रिकांतर मार्गणा ॥*

चउरंतर रे अनंत गुणादिम ठाणथी,
हेठ थानक रे भाग अनंतना माणथी ॥७॥ त्रुटक ॥

चतुरांतर मार्गणानें विषे अनंतगुणवृद्धिना आदिम कहेता प्रथम स्थानकथी हेठला स्थानक अनंत भाग वृद्धिना प्रमाणथी केतला छइं ? ॥७॥

[३८]परिणामथी ते अष्ट कंडक वर्गवर्गा षट घना;
च्यार कंडक वर्ग आगल एक कंडक शोभना ।

॥ इति चतुरंतर मार्गणा ॥

ते परिणामथी ८ कंडकवर्ग = कंडक संज्ञा ४ने तद्गुणो वर्ग १६ वर्ग

---

३५. स्थानक माने० K । ३६. एक एकने K ।

३७. * .... * चिह्नान्तर्गतः पाठः V प्रतौ नास्ति ।

३८. K प्रतौ एषा गाथाऽव्यवस्थिता दृश्यते ।

कंडकगुणोघन ६४, वर्गवर्गो २५६, घनकंडकगुणो पिण २५६ यथोचित स्थानके संख्या करजो ।

वर्ग ८ तथा ६ कंडक घन तथा च्यार कंडकवर्ग ४ उपरि एक कंडक शोभना संयम परिणामरूप छइ । ए किम जाणीए ? जे माटे अनंतगुणवृद्धिना प्रथम स्थाकथी हेठल असंख्यगुणवृद्धिना स्थानक कंडकप्रमाण गया छइ । अने असंख गुणना एक एक स्थानक ते हेठलि अनंतभागवृद्धिना स्थानक कंडक वर्गवर्ग १ कंडकघन ३ त्रण कंडकवर्ग ३ कंडक १ प्रमाण पामीइं । ते माटइं ए सर्वनइं कंडकगुणा करीए । थाय ते सरवालो करी राखीइं । तथा असंख्यगुणवृद्धिने उपरि कंडक वर्गवर्ग १ कंडकघन ३ कंडकवर्ग ३ कंडक १ पामीइं छे । ते पूर्वराशिमां प्रक्षेपीइं त्यारइ यथोक्त मान थाय । यदुक्तं पंचसंग्रहे –

"अड कंडवग्गवग्गा, चत्तारि वग्ग छ घना कंडं ।
चउअंतरवुड्ढीए, हेठठाण परूवणाए ॥१॥ इति ॥
(पंचसंग्रह / बंधनकरण – ५४)

पर्यवसानी मार्गणा ते, षट् स्थानक पूरे करे,
मूलथी संयम ठाण फरसी वीर विभू केवल वरे ॥८॥

हवे पर्यवसाननी मार्गणा कहे छइ । पर्यवसान ते स्युं कहिइं ? छेहडो, तेहनी मार्गणा । ते षट्स्थानक पूरे थयइं जाणवी । मूलथी कहेता धूरथी संयमस्थानक फरसी श्रीवीर परमेश्वर जगतनो नायक केवलज्ञान वरे ॥८॥

उपर मध्यथी रे, संयम थानिक जे भजे,
ते नियमा रे हेठि उतरी पुनरपि सजे ।
अंतर्मुहूर्तनी [रे] वृद्धि-हानि ठाणमां,
हुइ मुनीने रे ज्ञानी देखे ज्ञानमां ॥९॥

उपरिला संयमस्थानिक तथा विचाला संयमस्थानिक अनुक्रमे फरसे । ते नियमा हेठल उतरीने कालांतरइ पुनरपि वली सजे – सावधान थाय । संयमश्रेणिमां पामे । यदुक्तं –

''अंतोमुहुत्तमित्तंपि, फासियं हुज्ज जेहिं सम्मत्तं ।
तेसिं अवड्ढपुग्गल, परियट्टो चेव संसारो ॥१॥
(नवतत्त्व - ५३)

तो संयम पाम्यानुं स्युं कहेवुं ।

अंतर्मुहूर्तकाल प्रमाणे अधस्तन संयमस्थान थकी उपरितन संयमस्थानारोह रूप वृद्धि तथा उपरितन स्थान थकी अधस्तन स्थानावरोहरूप हानि मुनिने थाय । हे ज्ञानवान् ! वीर परमेश्वर ! तुम देखो छो । यदुक्तं कल्पभाष्ये गाथाद्वयं [३९]*ते बे गाथा कहे छइ ।*

''एवं चरित्तसेढिं, पडिवज्जइ हेठ कोइ उवरिं वा ।
जे हेठा पडिवज्जइ, सिज्झइ नियमा जहा भरहो ॥१॥
मज्झे वा उवरिं वा, नियमा गमणं तु हेठिमं ठाणं ।
अंतोमुहुत्त वुड्ढी, हाणि(णी) वि तहेव्व नायव्वा ॥२॥
(बृहत्कल्प भाष्य - ४५१३-४५१४)

अप्पबहुअ विचार करता अनंतगुणना थोडला;
तेहथी गुणह असंख्य केरा, कंडक वर्ग कंडक भला ।
पच्छानुपूर्वि वुड्ढि उत्तर एह न्याइं भावीइं,
खिमाविजय जिन चरण उत्तम भक्ति भावे पाविइं[४०] ॥१०॥
[सर्व गाथा ४०]

अप्प० क० अल्पबहुत्वनो विचार करता अनंतगुणवृद्धिना संयमस्थानक सर्वथी थोडा जाणवा । तेहथी असंख्यातगुण वृद्धिना संयमस्थानक कंडकवर्ग अने एक कंडक जेतला एतले परमार्थे असंख्यातगुणा पश्चानुपूर्वीइं वृद्धि आगलि एह रीते भावीइं सर्वत्र अनंतर वृद्धि स्थान असंख्यातगुणा इति भाव।

खिमाविजय **जिन** कहेता श्रीवीर परमेश्वर तेहना चरण कमलनी **उत्तम** विधि-युक्ति-भक्तिना महिमाथी पामीइं । संयमश्रेणि भवनिस्तार थइए ॥१०॥

---

३९. *.... * चिह्नान्तर्गतः पाठः V मध्ये नास्ति ।
४०. पामे. K ।

॥ कलश ॥

॥ राग – धन्यासी ॥

गायो गायो रे भले वीर जगतगुरु गायो आं०
संयमश्रेणि थानिक षटविध, ठवणा यंत्र बनायो ।
अहठाण परूपणा करता, मनु[अ]जनम फल पायो रे ॥१॥ भ० ॥

संयमश्रेणिना स्तवननी संग्रहगाथा कहेता कलश रचइ छइ । प्रथम ढाले संयमश्रेणिनी षट्स्थान परुपणा, बीजी ढाले यंत्रस्थापना, त्रीजी ढाले अहठाण प्ररूपणा करता मनुष्यजन्मनो फल पाम्यो ॥१॥

शुद्ध निरंजन अलख अगोचर, एहिज साध्य सुहायो ।
ज्ञान-क्रिया अवलंबी फरसो, अनुभव सिद्धि उपायो रे ॥२॥ भ० ॥

शुद्ध – निरावर्ण, निरंजन – राग-द्वेष अंजनरहित, अलख-लिपि अगोचर, अगोचर – जे स्वरूप चरमचक्षूइं जणाइ नही, एहवो परमात्मा स्वरूपानंद विलासी, परभावउदासी, तेहिज अम्हारो स्वरूप अमने साध्य सूहायो – रुच्यों । हे आत्मन् ! – हे जीव ! ज्ञानक्रिया – सम्यग्ज्ञान-सम्यक्क्रिया अवलंबीने फरसो – पाम्यो । स्वस्वरूपना विचारमां मन विशराम पामें अने अपूर्व रसस्वाद उपजे । एहवो जे अनुभव ते सिद्धिनो उपाय छे ।

"णाणक्रियाहि मुक्खो" इति वचनात् ॥२॥

श्रद्धा-ज्ञान लह्या छे तो पिण, जो नवि जाय पमायो ।
वंध्यतरु उपम ते पामे, संयमठाण जो नायो रे ॥३॥ भ० ॥

संयमश्रेणि महिमा कहियइं छइं । सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान पाम्या छे तो पिण जो प्रमादस्थानक न जाय तो वांझीया-फलरहित वृक्षनी उपमा पामे; जो संयमस्थानक न आव्यो । राजा श्रेणिकनी परें तथा सत्यकी विद्याधरनी परें ॥३॥

जिम खर चंदन भारनो वाहक, भारनो भोगी कहायो ।
तिणि परे ज्ञानी संयमहीनो, सद्गतिइं नवि जायो रे ॥४॥ भ० ॥

जिम गर्दभ बावना चंदननो भार वहतो भारनो भजनहार कहीइं पिण सुगंधभोगी नही । यदुक्तं –

जहा खरो चंदणभारवाही, भारस्स भागी न हु चंदणस्स ।
एवं खु नाणी चरणेण हीणो, नाणस्स भागी न हु सुग्गईए ॥१॥
(उपदेशमाला - ४२)

तिणि परे ज्ञानी चारित्र विना ज्ञाननो भागी थाय पिण सद्गति जे मोक्ष तिहां न जाइ ॥४॥

आश्रव त्यागें संवर परिणति, अविरति सरव उठायो ।
स्वस्वरूपमां थिरता तेहिज, संयम शुद्ध ठरायो रे ॥५॥ भ० ॥

संयमनुं मूल स्वरूप कहीइं छइ । आश्र० पंचाश्रवने त्यागें, पंच संवरपरिणतिरूप अविरत १२ -

"मन(ण) करणा नियमु छजीववहो" (चतुर्थकर्मग्रंथ-५१)

ए बार अविरति अभावे, स्व- पोताना स्वरूपमां थिरता रमण निश्चलानुभव तेहिज शुद्ध संयम ठरायो वीतराग आगममांहि ॥५॥

अनुभव सुरतरु फलने काजे, कीजे आतम अमायो ।
सनमुख भावे जेह प्रवर्तन, तेह निवर्तन दायो रे ॥६॥ भ० ॥

अनुभवरूप जे कल्पवृक्ष तेहनो फल जे मोक्ष तेहने काजें । यदुक्तं–

निर्जितमदमदनानां, वाक्कायमनोविकारहितानाम् ।
विनिवृत्तपराशाना– मिहैव मोक्षः सुविहितानाम् ॥१॥
(प्रशमरति - २३८)

आत्मा मायारहित करवो अथवा अनुभवसुखी जीवनमुक्ति छइ । मोक्षने सनमुखभावे प्रभूमार्गानुसारी जे प्रवर्तन तेहज भवनिवर्तननो उपाय छइ ॥६॥

ज्ञान-क्रियादुगचक्रे शोभित, संयमरथ सुखदायो ।
अनुभवधोरी युत शिवनगरे, जाता विघन न थायो रे ॥७॥ भ० ॥

ज्ञान-क्रियारूप जे बे चक्र के० पइडा तेने शोभित संयम रूपरथ सुखदाई छइ । अनुभवरूप धोरीइं जोडो तदारूढ आत्मा चिदानंदने शिवनगरइ जाता = निरावर्ण थाता विघन = अंतराय न थाय ॥७॥

राय सिद्धारथ वंश विभूषण, तिसलाराणी जायो ।
अज अजरामर सहजानंदी, ध्यान भुवनमां ध्यायो रे ॥८॥ भ० ॥

उदितोदित राजा सिद्धार्थना वंशनो विभूषण शोभावनहार शील सम्यक्त्व देशविरति तिसला राणीइं जनम्यो । अनपुनरावर्त्तिइं योनिनिर्गम । हवे सिद्धावस्था कहीइं छइ । जन्मरहित – जरा मर्ण (मरण) रहित, सहज – अकृत्रिम स्वस्वरुपानंदी, एहवो श्री[४१] वीर परमात्मा ध्यानरूप भावघरमां ध्यायो – चिंतव्यो ॥८॥

संवत नंद९-निधि९-मुनि७-चंद्रे१, देव दयाकर पायो ।
प्रथम जिनेसर पारण दिवसे, स्तवना कलश चढायो रे ॥९॥ भ० ॥

नंद० क० ९, निधि० क० ९, मुनि० क० ७, चंद्र० क० १

"अङ्कानां वामतो गतिः" इति वचनात् एतले संवत १७९९ वर्षे देव दयानो करणहार पाम्यो अर्थात् तेहनो शासन पाम्यो । प्रथम जिनेश्वर श्री आदिनाथें वरसीतपनो पारणो इक्षुरसें श्रेयांसने हाथे कीधो, ते दिवसइं संयमश्रेणिगर्भित श्रीवीरप्रभूनो स्तवनरूप प्रसादें कलश चढाव्यो – एतले संपूर्ण कीधो ॥७॥

विजयदेवसु(सू)रीश पटोधर, विजयसिंह सवायो ।
सत्यशिष्याधर कपूरविजय बुध, खिमाविजय पुण्य पायो रे ॥१०॥भ०॥

हवे गुरुपरंपरा लखीइं छइं । श्रीवीरस्वामीनो पंचमगणधर पहेलो पटोधर श्रीसुधर्मास्वामी थीआ । आठ पाटलगे **निर्ग्रन्थ**बिरुदधारी १ । नवमे पाटे सूरिमंत्र कोटिवार जप्या माटे **कोटिक** बिरुदधारी २ । पनरमे पाटे चंद्रसूरि चंद्रवत् घणू सौम्य थया ते माटे **चंद्रगछा** कहेवाणा ३ । सोलमे पाटे सामंतभद्राचार्य घणू निर्मम थया वनवासे रह्या माटे **वनवासी** बिरुद थयुं ४ । छत्रीसमे पाटे सर्वदेवसूरि थया, वडतले आचार्यपद आप्युं अने तेहना साधु घना वटशाखा परें परिवारें [४२]*तथा घणा गुणे* वध्या ते माटे **वडगच्छा** कहेवाणा ५ । चोमालीसमे पाटे आंबिल वर्धमानतप कर्या माटे राणे तपा बिरुद

---

४१. एहवो वीर. V ।

४२. *.... * चिह्नान्तर्गतः पाठः K मध्ये नास्ति ।

दीधो ६, तिहाथी **तपा** कहेवाणा । अनुक्रमें ६२ पाटे आदेयनामधारी श्रीविजयदेवसूरि तत्पट्टप्रभावक सवाईविजयसिंहसूरि तेहना साचा ग्रहणाशिष्या आसेवनाशिष्याधारी अर्थात् पं. श्रीसत्यविजयगणि । गच्छनायकनी आज्ञा मांगी क्रियाउद्धार कीधो। श्रीआनंदघन संघाते वनवासें रह्या । अनेक तप कीधो । अनुक्रमे वृद्धावस्था जाणी अनहीलपुर पाटणमां रहेता धर्मोपदेश देता २ शिष्य थया । पं. श्रीकपूरविजय, पं. कुशलविजय ।

तेहमां पं. श्रीकपूरविजयगणी अर्हत्प्रतिमाप्रतिष्ठादि अनेक धर्मकार्यकारी प्रभावक थया । देशनगरपुरपाटण विहार करता २ शिष्य थया । पं. श्रीवृद्धविजय[१], पं. श्रीखिमाविजयगणि[२] ।

तेहमां पं. खिमविजयगणि देशनागुण-अनेकउपगारी पवित्रचरण-कमलधारी ॥१०॥

सूरतिमांहि सूरयमंडण, **श्रीजिनविजय** पसायो ।
विजयदयासूरिराजें जगमति, **उत्तमविजय** मल्हायो रे ॥११। भ० ॥
॥ भले वीर जगतगुरु गायो ॥

श्रीसूरतबिंदरे श्रीसूर्यमंडणपार्श्वनाथजी स्मृतिप्रणतिमहिमाइं तथा पं. श्री-खिमाविजयगणी शिष्यरत्न संप्रति विद्यमान चिरंजीवी परमोपगारी पं. श्रीजिन-विजयगणिइं उद्यम करी प्रथम अभ्यास कराव्यो । माता-पिता जिम पुत्रने प्रथम पगमंडा तथा बोलवुं शिखावे तिम गुरुवादिके उपगार कीधो । एहवे श्री तपागच्छाधिराज भट्टारक श्रीदयासूरिराजइं जगपति = जगते परमेश्वर श्रीवीरस्वामीजी मुनि उत्तमविजये मल्हायो = स्तवनागोचर कीधो ।

एम स्तवन अमच्छरी, गीतार्थ, सोधज्यो, भणावज्यो । भणता-भणावता संयमश्रीभूषित थइ सहेजानंद पामज्यो इति ॥११॥ भ० ॥

इति श्रीसंयमश्रेणिगर्भित वीरविभोस्तवन लिखितं [४३]सूर्यपूर बिंदिरग्रामे ॥ [४४]संवत १८०९ वर्षे चैत्रमास शुक्लपक्षे ११ एकादशी तिथौ भृगुवासरे लि०
॥ श्रेयोऽस्तु ॥

---

४३. लिखितं पादराग्रामे V. ।
४४. संवत् १८०० वर्षे, आसो वदि ९ शुक्रं V ।

ध्यानविचारादि विचारसङ्ग्रह ।

– सं. सा. मैत्रीयशाश्री-देवयशाश्री

गुरु-शिष्यना संवादने दर्शावती आ कृति सुरम्य अने सरल गद्यात्मक छे, प्रकीर्ण पत्रमांथी प्राप्त थतो आ संवाद परम्परागत घणा विषयोनो बोध आपे छे. जेमां;

१. चार ध्यान अने तेना अवांतर भेदोनुं स्वरूप, २. जीवना ३ प्रकार, बहिरातम - अंतरातम - परमातम, तेनुं स्वरूप, फल व., ३. शुभाशुभ कर्म बंधावाना स्थानक - ८ कर्म - तेनो नाश, ४. तपस्याना १२ भेद - तेनुं मार्गदर्शन, ५. ज्ञानना ५ भेद, ६. ८ कर्मनाशथी उपजता गुण, ७. वैराग्यना २ भेद, उत्पन्न थवाना कारण, अधिकारी, ८. मनराजा - विवेकराजानुं युद्ध - लश्कर / रणभूमि - शीख व. खूब सरल रीते समझाव्युं छे । प्रतिमां उल्लेख न होवाथी आ कृतिना कर्ता कोण ते अज्ञात रहे छे । कृतिनी भाषा मारवाडी छे । प्रान्ते, आ पत्र (झेरोक्स) प.पू.आ.भ.श्री. विजय शीलचन्द्रसूरि म.सा. पासेथी प्राप्त थया छे.. तदर्थे तथा परिमार्जन करवा माटे पूज्यश्रीना अमो ऋणी छीअे.

*

॥ अथ साध ध्यान करै तिणरौ विचार लिखीयै छे : ॥

दोय घडी साधने ध्यान करणो पिण सतगुरै ध्यांनरा च्यार भेद बताया छै ते कहै छै; पहिलो आरत्रध्यांन १, दुशरो रोद्रध्यांन २, तीजो धरमध्यांन ३, चोथो सुकलध्यान ४, ए च्यार नांम कह्या : हिवै सतगुरुनै शिष्य पूछै; 'हे स्वांमी ! ध्यांनरा भेद किता ?' ति वारै गुरु कहै छै, 'एक एक ध्यांनरा च्यार भेद समझणा' । तद् शिष्य कहै; 'हे स्वांमी ! पहलै ध्यांनरा च्यार भेद किसा ?' ताहरा गुरु कहै; 'पहिलो आरत ध्यांन'; तिणरो पहिलो भेदरो इसटविजोग नाम छै । शिष्य पूछै, 'हे स्वामी ! ईष्टविजोग कांई कहीजै ?' तद गुरु कहै; 'हे शिष्य ! तूं शुण' । संसारमे मोहरी उपजावणरो कारण तिको इष्टविजोग कहीजै । माता, पिता, बहन, भाई, अस्त्री, पुत्र, पुत्री, दास, दासी, गाइ, भैस, उंठ, बलद, घोडा, हाथी, मैनां, [१]सूवो, कोयल प्रमुख जिनावर; हीरा,

१. पोपट ।

पना, मण, माणक, सोनो, रूपो, गहणो, कपडो, घर, मंदर, हाट, हवेली, कूवो, वावडी, तलाव, बाग, बगची; भला सब्द सुणनां कांन इंद्री कर, आंख इंद्री कर भली चीज देखणी, जीभ इंद्री कर रसवतिरा स्वाद लैणा ३, काया इंद्री कर आछा कपडा-ग्रहणा पैरणा-अस्त्रीसे बात करणी, ४ नाक इंद्री कर केतकी, केवडो, कुंद, मचकुंद, मोगरा, जाय, जुही, चंपेली, गुलाब, प्रमुख सरस सुगंध फूलनी वासना लै, ईसीतरै पांच इंद्रीरा सुखकर संसारमै मोहनी कम(र्म) उपजै छै। तिणसुं विजोग पडै तद घणो सोच करै, शरीरनै महादूख करै, उदासीमै रहै, इस्या अहिनांणै कर इष्टविजोग नांम समझणो, इतरैकर पहिलो पायो कह्यो १। साधु होइ सो मोहनी संसार [1]सेती न बांधै, संसारसै निरालो रहै अैसी सिख सतगुरु कहै १। दूजो पायैरो सरुप कहै छै; 'दूजै पायैरो नांम अनिष्टसंजोग छै'। सिष्य पूछै; 'हे स्वांमी ! अनिष्टसंजोग कांइ कहीजै ?' तद गुरु कहै; 'शिष्य, बुरी वस्तु देखनै मनमै सुग करै, अणसुहावतो सब्द-अणसुहावतो रूप-अणरुचतो रस-अणसुहावतो गंध-अणसुहावतो फरस-अणचाही जती चीज मिल्या सेती मनमैं उदासी आंणै, बहोत सोच करै इण रीतसुं अनिष्टसंजोग हूवै।' सतसंगती साध हूवै तिकौ अनिष्टसंजोगरी मनमै विचारणा न करै। परम संतोष राखै सो असल साध कहीजै। अनष्टसंजोग मिलै मनमैं भली चीजरी मनसा धारे नही जिसो मिलै तिणसै आपरी आत्मानैं भाडो देईने संतोष करी परम खुसी हुवै, ध्यांनसु मगन रहै ईतरो दुजै पायारो विचार कह्यो २। हिवे त्रीजै पायारो विचार कहै छै; 'त्रीजै पायारो नांम रोगचिंता कहीजै'। सिष्य कहै छै; 'हे स्वांमी ! रोगचिंता कांइ कहीजै ?' गुरु कहै; 'सिष्य ! तूं सुण', सरीरमें पचफोडो ऽलाई, पेट दूखै, वालो नीकले, हरस रोग उठै, माथो दूखै, सरीरमै ताप हुवै, कोढ रोग उपजै, द(? ज?)लोदर, कठोदर, सफोदर प्रमुख रोग सरीरमै उपना रोगरी चिंता करवो करै, तिणरो नांम रोगचिंता कहीजै। साध हुवै सो सरीरमै दूख उपनां सती मनमें चिंता न करै। सरीररी सार करै नही, दुख उपजै सो सहै, एक परमेसररो ध्यांन मनमें करै, मननै डिगावै नही, सो असल परमार्थी जीव कहीजै। इण रीतसै रोगचिंतासरूप ग्यानी बतायो समझणो इति रोगचिंता पायो कह्यो ३। अथ

---

१. थी, थकी।

'चोथै पायैरो नांम आगामचिंता कहीजै' शिष्य पूछै; 'हे स्वांमि ! आगामचिंता कांई कहीजै ।' 'हे शिष्य ! ओ जीव मरणसमै मनमै इसी विचारणा कणा करै; इण भवमैं मै जो तपस्या करी, जोगारंभ साधन कर्यो छे, इण पुन्य कर आगलै भवै देवतापणो पांउ, चक्रवर्ती हुउं, घणो धनवंत हुउं, राजापणो पाउं, ईसी विचारणा मनमै करे तिणरो नांम आगाम सोच कहीजै । हे शिष्य ! परमाथी(र्थी) साध हुवै सो ईसो विचार अंत समे करे नहि, करै सो महाअग्यांनी कहीजै । घणी वार संसारमांहे रुलै, जोगारंभ साध्यो निरफल होइ, इस्या सतगुरुका वचन मनमैं धारकै आगाम सोच न करणो । इतरै आरतध्यांनरा च्यार पायारो सतगुरु सरूप कह्यो । आरतध्यांन मनमै संसो नही छै, ग्यांनीरा वचन साचा कर शमझणा, झूठ मानौ सो बहुवार संसारमै रुलवो करै, ए पहिलो ध्यांन कह्यो ॥१॥

अथ दूजो रोद्रध्यांन कहीजै, 'इण रौद्रध्यांनरा च्यार भेद कह्या छै' । शिष्य पूछै, 'हे स्वांमी ! इण ध्यांनरा च्यार भेद तिणरा नाम किसा ? आप समझायने कहो' । तद गुरु कहै; 'हे शिष्य सिर(हिं)सानुबंधी पहिलो भेद १, मृषानुबंधी दुजो भेद २, चोरजानुबंधी तीजो भेद ३, परग्रहानुबंधी चोथो भेद ४, इण भांत च्यार भेद कहीजै । हिवै पहिलै भेदरो विचार कहुं छुं, [१]मनष जमारो पायकै जीवकुं मारै, जीवांनै बांधै, जीवांनौ बालै, जीवानै पिछाण विना फालीयो तपाय [२]डांभ देवै इण भांत हिंशानुबंधी कहीजै १ । हिवै दूजो मृषानुबंधीरो विचार कहुं छुं; इण भवमें माणस देह पायकै मनमें खोटा प्रणाम[३] धारकै राजा कनै, गांवधणी कनै, [४]मुशदी हाकम कनै जायकर चुगली करै। संसारी जीवांनै डंडावै, धनमाल [५]खुसाय लेवै, निरधन कराय देवै, झूठो कलंक देवै, बंदीखांनै नखावै, झूठी[६] सौंस करीनै लोकानै विश्वासघात करै, ईण रीतशै मृषानुबंधीरो भेद शतगुरु बतायो २ । अथ 'चोरजानुबंधी भेद कहै छै' । सिष्य पूछै; 'हे स्वांमी ! चोरनुबंधी कांइ कहीजै ?' 'हे शिष्य ! संसारी जीव घणी माया-ममतारइं वस-पड्या थका घणा पाप करै, [७]घरमोसा करावै, चोरांनै खरची देकर धन मंगावै, [८]टगाई करी गलै फासी दवरावै, प्राणी जीवरो

---

१. मनुष्य जन्म । २. डाम । ३. परिणाम । ४. मुत्सद्दी । ५. खुंचवी लेशे । ६. (?) । ७. घरमां चोरी । ८. ठगाई ।

विचार न करै, विनास करावै, धाडो करै-करावै, परलोकरो डर न राखै, इहलोकरो स्वाद गिणै, निसंक मन हूवो थको परद्रव्यरी वंछा राखै, तिणरो नांम चोरजानुबंधी कहीजै ।

हे सिष ! साधु इत्यादिक कांमरी मनमैं चिंतवनां कदेही करै नही, जे कदास करै तो उ साधु न कहीजै, संसारी जीवांसो मिलतो ही ज छै । आप संसारमै डुबै-उणरो उपदेश शुणै तिकेही ज डुबै । पथररी नाव समान साध जांणनो । इति त्रीजो भेद कह्यो ३ । हिवै 'परग्रहानुबंधी चोथो भेद' । सिष्य पूछै; 'हे स्वांमि ! परग्रहानुबंधी कांई कहीजै ? गुरु कहे छै; 'हे शिष्य ! संसारी जीव परगृह भेलो करणवे ई महाकूड-कपट करै, लोभलहर वधारी थांपणमोसा करै, परजीवरा घात करै, धनरो शंचो[१] करै, पांच इंद्रीरा सुखमै मगन रहै, इत्यादिक मनमें चिंतवन राखै, तिकौ परगृहानुबंधी नांम कहीजै' । 'हे शिष्य ! महारंभी संसारी जीव-महाअनरथरा करणहार तिणांरो आचार देखी साधु इसी विचारणा कदेही मनमें ल्यावै नही, एक ध्यांन लयलीन रहै । संसारी आचार छोडीनै योगीशररै मारगनै ध्यावै । संसारसें सदा विरक्त रहै, तिको साधु कहीजै' । परग्रहानुबंधीनो भेद कह्यो । इतरैकरी रौद्रध्यांनरा च्यार भेद कह्या । रौद्रध्यानै करी जीव मरीनै नारकि जावै २ ।

हिवै त्रीजो धर्मध्यांन तिणरा च्यार भेदनै सिष्य पूछै; 'हे स्वामी ! धर्मध्यानरा च्यार भेदरा नाम (किसा? । तद गुरु) कहै छै; आज्ञाविचय पहिलो नाम १, उ(अ)पायविचय दूजो नाम २, विपाकविचय तीजो नाम ३, संस्थानविचय चोथो नाम ४ । हिवै शिष्य पूछै; 'हे स्वामी ! आज्ञाविचय कांई कहीजै ?' गुरु कहे; 'हे सिष्य ! सुण' श्रीमत-कल्याणकारी-श्रीपरमेशर तिकांरी आज्ञा माफक कांम करणो, तिका(री)आज्ञा सास्त्रसूं समझ लैणी, आग्या प्रमाण चालै तिणरो नांम आज्ञाविचय कहीजै, ए पहिलो पायो कह्यो १ ।

हिवै दूजै पायैरौ विचारः शिष्य पूछै; 'हे स्वामी ! उ(अ)पायविचय कांई कहीजै ?' गुरु कहै; 'तुं शुण' । संसारमै राग-द्वेष-कलह-कषाय-संसारीविषयशुख इत्यादिकमै संसारी राच रह्यो छे तिका जीवा उपर दया विचारीनै उपगाररि [२]बुध मनमै धारै तिणरो नांम उ(अ)पायविचय कहीजै २ ।

---

१. संचय । २. बुद्धि ।

हिवै त्रीजो विपाकविचयः शिष्य पूछै, 'हे स्वामी ! विपाकविचय कांई कहीजै ?' 'हे शिष्य ! संसारी जीव भलाभुंडा कर्मारा फल भोगवै छै तिकांरो समरण करै, कर्म छोडणरो उपाव करै, कर्मारौ नाश करै, सो विपाकविचय कहीजै ३ ।' हिवै चोथो संस्थानविचयविचार कहै छे; 'हे सिष्य ! संसारमैं जमी, आकास, पवन, पाणी, तरुवर, पहाड प्रमुख सगली वस्तनौ सरूप देखै तिणरो नांम संस्थानविचय कहीजै । इण भांत धरमध्यान धारै । तिको जीव मरनै देवतारी गत पावै, शुखी हुवै । इण भांत धरमध्यांनरो सरूप कह्यो ३ ।

अवै शुक्लध्यांन कहै छै : शुक्लध्यानरा च्यार भेद छै, सो कहै छे : शुक्लध्यानरो पहिलो भेद कहै छै; 'हे शिष्य ! पृथकत्ववितर्कसप्रवीचार १ ।' शिष्य पूछै; 'हे स्वामी ! ईणरो विचार कांई ?' तद गुरु कहै; 'हे शिष्य ! अंतरंग धुन उठै, तद एक वस्त देखतो अनेक वस्तु देखै, एक नांममे ध्यांन गुणमै ध्यांन वर्ततां अनेक गुण देखै, एक नांममै ध्यांन जावै तद वस्तुरा अनेक नांम जाणै, ए शुक्लध्यांनरो पहलो भेद कह्यो १ । हिवै बीजो ध्यांन कहै छै; '(ए)कत्ववितर्कअप्रवीचार नाम छै' । सिष्य पूछै; 'हे स्वांमी ! ईणरो विचार कांई छै?' तद गुरु कहै छै; 'हे शिष्य ! ईण ध्यांनमै वर्तै ताहरां एक द्रव्यमै ध्यांन रहै, ओर द्रव्यमै जावै नही । येक गुण छोडी दूजै गुणमै रमै नही जीव । एक नांममै वरततो जीव बीजो नांम न धारै । इसी तरैसुं ध्यांन करै सो दूजो भेद कहीजै २ । हिवै त्रीजो भेद कहै छै; 'सूक्ष्मक्रीयाअप्रतिपाति नांम कहीजै'! शिष्य पूछै; 'हे स्वांमी ! ईणरो विचार कहो' । तद गुरु कहे, 'हे शिष्य ! शुक्लध्यांनमै पैश कर पछै अंतरध्यांन करै तिणरो शरूप कहुं छुं' । पहिलि तो आपणी कायानै वज्र सरीखी करै । पछै बोलणो बंध करै । पछै मनरी लहर शगलै फैलै तिकैनै आपणी आतमा सेती बाहर आणीनै चालण देवै नही– रोक लेवै । पछै निराकार देहीमै आकार थापै । पछै सासोसासनै बंध करी, सकल करमनो नास करै । ईण रीतसुं तीजै पायैरो भेद कह्यो ३ । हिवै चोथा पायारो भेद कहै छै; 'शमुर्छम[१] क्रीया अनुव्रती नांम' । शिक्ष कहै; 'हे स्वांमी ! ईणरो विचार कांई ?' तद गुरु कहै; 'हे शिक्ष ! सूषम क्रीया करनै करम मूचत करी शुंन[२] शकर्मी हूयनै मोखमें जावै । इतरै चोथो शुक्लध्यांनरो

१. समुच्छिन्नक्रियानिवृत्ति । २. शून्यस्वकर्मी (?) ।

शरूप कह्यो ४ ।' शिष्य पूछै; 'हे स्वांमी ! इणां च्यारा ध्यांनामै कुण कुण ध्यांन साधु ध्यावै ? किसा छोडै ?' तद गुरु कहै; हे शिष्य ! आरतध्यांन पहिलो १, रोद्रध्यांन दुजो २, अै दोय ध्यांन संसारीक छै । सो साधु न करै-छोड देवै । धर्मध्यांन ३, चोथो शुक्लध्यांन, ए दोय ध्यांन साधु करै तो निश्चै मोष्य जावै, ईणमै संदेह नही छै । **इति श्रीच्यारध्यांनसंपूर्णम्: ।**

अथ सिष्यनै गुरु समझावण भणी धर्मचरचा कहै छै : हे शिष्य ! संसारी जीवरा तीन प्रकार छै । एक तो बाहरआतमावाला जीव १, एक अंतरध्यानआतमा जीव २, एक परमात्माशरूपी जीव ३ ईण प्रकारै जीवांरा तीन शरूप छै । तिणमै शिष्य ! बाहरद्रष्टी जीवांरो शरूप तनै शमझावणनै कहुं छुं, तूं शुण ओ जीव महाअज्ञानरे जोरहुंती करमारै वश पड्यै थकौ अनंता काल संसारमै रुलै पछै, किणहीक भवरो उपायो-भलो कर्म तिण करमरै उदैकर अनंतै संसारथी नीकलनै माणसरो जन्म पायो । पिण महाअज्ञानरै वश पडीयो थको संसारीक पदारथ छै तिण ऊपर राग घणो राखै; ते कहुं छुं ॥ 'तन, धन, परवार, मंदिर, नगर, देश, मित्र इत्यादिक वस्तां ऊपर घणो राग राखैं' । दूशमण देखीने द्वेष राखै । असार पदारथनै साचा करनै मानै । राग-द्वेष करै । इसा महाअज्ञानी-ज्ञानबुधकरहीन ईसा संसारमै जीव छै तिके बारद्रष्टी[१] जांणवै । घणां भवतांइ शंशारमै रुलसी, नारकीरा दूख घणा शहसी । इति बाहरआत्मारो शरूप मै कह्यो १ ॥ हिवै अंतरआत्मारो शरूप तूं शुणः ज्ञांनरै उदै शेती घटमै आत्मा ज्ञान राखै, संसारी जीव कर्म बांधे तिणांरो शरूप चिंतवन करै, ईण संसारमै अज्ञान बुधै कर कर्म बांधै, लोभ [कर] कर्म बांधै, मनसुं कर्म बांधै, वचनसुं कर्म बांधै, कायासूं कर्म बांधै, इतरा कारण कर ओ जीव मोटा करम बांधै । बांध्या करमांरो भुक्ता कुण ? ओ कर्म ही ज छै। आपरा उपजाया कर्मानै ओर कोई भोगवै नही, आपनै ही ज भोगवणा हूवै, ईसो विचार आत्मज्ञांनी रै हुवै । फेर कहै छै; 'काई चीजवस्त जाती रहै तद मनमै विचारै ईण चीजवस्त सेती मारै इतरा दीनरो शीर[२] थो, अबै सीर नही, तद ओर जायगा[३] गई ईसी विचारणा करै, पिण मनमै दूख न करै । वले भाग[४] उदैकर किणहीक वस्तरी जोगवाई आय मिलै ताहरां मनमै विचारैः इण

---

१. बाह्यदृष्टि । २. सम्बन्ध के ऋण (?) । ३. (१) । ४. भाग्य ।

वस्तसूं मारै सीर हुंतो तिणसूं मारै कनै आई ईसी विचारणा राखै, पिण वस्त देखनै लालची न हुवै, तिको आत्मज्ञांनी कहीजै' ॥ फेर कहुं छुं; 'जिण आत्मज्ञानीरै सरीरमै दूख उपना शेती हाय-तोबा न करै, मनमै धीरज राखै, ईण देहनै अपणी जांणै नही, देहनै छोडणरी मनसा राखै, देहरो मोह करै नही, राग उपज्यां सेती सरीररी सार छोडनै एकचितशै अपणी आत्मामै परमेशररो ध्यांन करै, संसारी ध्यांन छोडै, हे शिष्य ! जिण जीवमै इतरा गुण हुवै तिकेनै अंतरद्रष्टी कहीजै' । इतरै कर मै आत्मद्रष्टी जीवरो शरूप तनै बतायो । हिवै परमात्मा जीवांरो शरूप कहुं हे शिष्य ! तूं एकचित्त करनै सुणः एक भवरै आंतरै परमधांम-जावणवालां-जीवारै ओ शरूप हुवै तद मनमै विचार करै 'इण जीवरै कर्म महादुखदाई छै, ईणारो नास कीजै तो जीवनै महाशुख उपजै' । ईसो जांणी घणी तपस्या करै । शित-ताव-डा(श) शहै । भुख-तिश सहै । सरीर संबंधी कष्ट सगला सहै । सरीरनै तोडै । मननै वस करी परमात्मारो शरूप चिंतवन करतो थको करमनाश करी आप परमात्मा शरूपी हूय जावै। ईण रीतशै परमात्मारो शरूप कह्यो : ।

हिवै आत्मग्यांनीरो शरूप कहै :

दूहा : परमानंद आनंदमय, मगन भयो तिण वार;
काचै कुंभ जिसो सदा, मानै ओ शंसार. १
पूरवपुन्यप्रसादथी, कल्पवृच्छ श्रीकार;
ईशो जगमै को अछै, वंछे निरश अहार. २
राता आत्मज्ञानसुं, विरता इह संसार;
ते नर निहश्चे होइसी, मुक्त बुध भरतार. ३

हे शिष्य ! संसारी जीव आत्मज्ञांनी छै तिकांनै ओ संसार अथर लखावै। संसारनै मलीन मांनै छै । तन-धन-जोवन कारमा छै । जेशै आंखरो धणी कूवामै पड शकै नही तैशै आत्मबोधी जीवनै संसार संबंधी सुखांरी इंछा दोडै नही । जेशै अमृतजल पिवणवाला जीवांनै खारै जल पीवणरी इंछा न दौडै तेशै आत्मज्ञानी[री] दसा जाणंवी । संसारी जीवानै आत्मसरूपरो अज्ञान छै तिके जीव-मनुष्य रै जकारै जिनावर शरिखा छै । पशु माणशरो एक धर्म छै, तिको कहै छै; 'आहार मनुष्य करै पशुही पिण करै, निद्रा मनुष्यनै आवै

जिनावरनै पिण आवै, भय मनुष्यनै लागै भय जिनावरनै लागै, विषयशेवा माणश करै विषयशेवा जिनावर पिण करै,' ईतरी वातांमै तो जिनावर-माणश दोवे बराबर छै; पिण एक ज्ञानमारग माणशमै हुवै जिनावरनै ज्ञान गुण नही तिण कारणसे ति ज्ञानी पुरुषनै मोटो कह्यो । जिणै जीवनै ज्ञान नही तिण जीवनै मोक्ष उदै नावै । अज्ञानी जीवरै आसानदी सदा अपूरण रहै । संसारथी तिरै नही । मोहरूप शुभट जीतणो महादुरलभ छै । कषाय जीतणो दुरलभ छै । अै शगलाई अज्ञानी जीवांनै दूरलभ छै; पिण आत्मज्ञानी जीवरै शगली वात शहल छै । ईषातरै शेती आत्मज्ञानी समझणरो शरूप कह्यो : **इति श्री आत्मज्ञांन संपूर्णम्: ।**

हिवै शिष्य गुरुनै पूछै : हे महाराज ! इण संसारमै जीवनै रुलावै कुण छै ? तद शतगुरु कहै छै : हे शिष्य ! संसारमै जीवनै रुलावणरो कारण तो कर्मारो ही ज छै । जिके जीव संसारमै शुखी दीशै छै तिकां जीवां लारलै भवमै परमेशररी भक्ति-गुरुभक्ति कीधी थी, धर्मध्यांन भली युक्त शेती कर्यो थो, ग्यांनमारगरी सेवा करी थी, प्रभुगुण गाया था, मोटा-महात मुनिराजरी टहल-बंदगी चित लगायनै करी थी, तिरथ-व्रत भलै भावसुं कीया था, जीवदया पाली थी, पर-उपगार घणां जीवांसुं कर्या था, इसा मोटा पुन्य कर भलो करम बांध्यो; ऊण पुन्यरै प्रसादथी इण शंसारमै मनुष्यपणो पामकर बहुत शुखी हुवै, भला पुत्र हुवै, आज्ञाकारी रहै, अस्त्री सुखदाई मिलै, लिछमी मोकली पावै, राजापणो पावै, बडी ठकुराई पावै, शो एक पुन्यरो ही कारण छै । शुभ कर्म शेती पुन्यरो बांधाण हुवै ए शुभ कर्मनो फल कह्यो । फेर गुरु कहै; 'हे शिष्य ! जिण जीवै लारलै भवै घणा जीवांनै मार्या हुवै, महापापारंभ कर्या हुवै, जीवानै दूख दीना होइ, चाडी-चुगली करी होय, धणीरो होकम पायकर गरीबांनै संताप्या होय, परस्त्रीयांसुं भोगविलास करी बहुत सुख मान्या होय, चोरी करनै परद्रव्य हर्यो होय, ईसा पापकर्मनै उदैकर जीव कोढी हूवै, रोगकर शहत हुवै, फेर वंश वधे नही, मलीन जात हुवै, माता-पितारो, भाई-बहनरो, पुत्र-स्त्रीरो, धनरो, खांवणरो, पीवणरो शुख हुवै नही । हे शिष्य ! ईणतरै सेती अशुभ कर्मरो बंध हुवै- इसीतरै आठ कर्म शंसारी जीव बांधै, ऊंणा करमारै उदैकर जीव संसारमांहे रुलै, महाशंकट भोगवै । इसी कर्म रूप वैरी जांणकर मोटा दुखीश्वर कर्म रूप वैर्यानै मारकर मोक्षमै जाय बैठा महा

शुखी हुवा-संसाररो जन्म-मरण टाल्यो, अखय पद पामीनै महाजोत हुवा। हिवै शिष्य गुरुनै कहै छै; 'हे स्वांमी ! आठ कर्म आप कह्या तिणांरो नांम कहो'। तद गुरु कहै नांम 'पहिलो ज्ञानावरणी कर्म १, दूजो दरशनावरणी कर्म २, तीजो वेदनी कर्म ३, चोथो मोहनी कर्म ४, पांचमो नांम कर्म ५, छठो गोत्रकर्म ६, शातमो आऊखो कर्म ७, आठमो अंतराय कर्म ८, से आठ कर्माँरा नाम कह्या ।

हिवै शिष्य पूछै; 'हे स्वामी ! अै आठ कर्म तो महाजोरावर छै तिकां कर्मांरो विनाश क्यों कर हुवै ?' तद गुरु शिष्यनै कहै छै; 'हे शिष्य ! कर्मांरो नाश तपस्या किया विना न हुवै-तपस्या सेती करमबल जलनै भस्म हुवै । तद शिष्य कहै; 'हे स्वांमी ! तपस्यारा भेद कितरा ?।' तद गुरु कहै; 'हे शिष्य ! तपस्यारा भेद १२ छै ।' तिणमै छ भेद बाह्य तपस्या हुवै, छ भेद अभंतर तपस्या हुवै, ईण भांत तपस्यारा बारे भेद शत्यगुरु कह्या छै । तद गुरुनै शिष्य पूछै; 'हे स्वांमी ! बाह्य तपस्या किसी ? अभंतर तपस्या किसी कहीजै ? आप क्रपा करनै मै मंदबुधीनै शमझायनै कहो' । तद गुरु तपस्यारा भेद शिष्यनै कहै छै; हे शिष्य ! पहिलो भेद तपस्यारो अनशन कहीजै-जि-को साधु २।४।५।१०।२० दिन-अनपांणीरो त्याग करै, खावै-पीवै नही तिणरो नांम अनशन तप कहीजै १ । दूजो भेद तपस्यारो उनोदरी नांम कहीजै २ । तीजो भेद तपस्यारो वृतशंक्षेप कहीजै- हे शिष्य ! [1]निशप्रेही साधु होय, सो वसतीमै भीखनै[2] जावै तद सावती[3] वसती न फिरै । आशण बैठो घर मनमै धार लेवै: आज मनै वसतीमै ५।७।१०।२० घर मोकला छै । ईतरा घरामै भिक्षा मिलै तो मनै लैणी । कदास भिक्षारी जोगवाई मिलै नही-संतोष करी बैश रहै, और घरांमै न फिरै । इसीतरै विरतसंखेप तपस्यारो नांम कहीजै ३ । चोथो रसत्याग नांम तपस्या हे शिष्य ! तूं शुण, दूध १ दही २ गुड ३ घृत ४ तेल ५ मिठाई ६ ऐ षट् रस कहीजै । ईणामै मनसायै करी छोडै तिकैरो नांम रसत्याग तप कहीजै ४ । हिवै अपणी कायानै कष्ट दैणो तिणरो नांम कायकलेश तप कहीजै ५ । हिवै छिठो शंलीनता तप कह्यो : हे शिष्य ! मन-वचन-काया वस राखै-डोलावै नही तिणंरो नाम संलीनता कहीजै । ए छ तपस्या कहीजै – ईण तपस्यारो नांम बाहिर तपस्या कहीजै ।

१. निःस्पृही । २. भिक्षार्थे । ३. समग्र-आखी(?)

हिवै अभंतर तपस्यारा छ भेद शुण, हे शिष्य ! आपणा किया कर्म गुरुनै कहै-पाप प्रकाशै गुरु कनै आयनै । पछै गुरु पाप लागै तिण माफक तपस्यारो दंड दै, तिको करै, तिको गुप्तिपापनै प्रायछित नांम पहिलो भेद तपस्यारो छै १ । हिवै बीजो भेद कहै छै विनय नांम तप । आपशै मोटा साधु हुवै, गुरु हुवै तिकांरो विनय करै ते विनय तप कहीजै २ । वेयावच नांम तीजो भेद - हे शिष्य ! शरव साधानै भिख्खा मागीनै खवावै, शगलांरा आशण करै, चांपै, दावै, ईण रीतशै अपणै मनै कर भक्ति करै तिणरो नांम वेयावच नांम तप कहीजै ३ । हिवै चोथो शिज्झाय नांम तप हुवै - हे शिष्य ! गुरु संजोग करनै बिद्या पढी छै तिण बिद्यानै याद करै, नवी विद्या सीखै तिणरो नांम शिज्झाय तप कह्यो ४ । पांचमो ध्यांन तप कहीजै - हे शिष्य ! एकचित्त हुयनै परम जोतीसरनै अपणै मनमै ध्यांवै तिणंरो नांम ध्यांन तप कह्यो ५ । छठो काउशग नांम तप - हे शिष्य ! साध मुनिराज हुवै सो एकांति ठिकाणै रहिनै अथवा बैसीनै काउशग उभो रहै, अपणै दिलमै निराकाररो शमरण करै, मन डोलावै नही, कायानै चलावै नही, मुखशै किणहीनै भुडो-भलो वचन काढै नही, ईण रीतसुं तप करै, तिको काउशग तप कहीजै । ईण रीतशै छ भेद अभंतर तप कह्यो । ईण भांत बारै भेदे तप करै तिण तपरै बलै करी कर्मांरो नास हूयै, कर्म शगला भस्म हुवै, भस्म करीनै मोख पोहचै, संसारमै फेर आवै नही, महाशुखी हुवै, परमजोतमई आप हूय जावै। **इति तपस्या अध(धि)कार संपूर्णम॥**

हिवै शिष्य पूछै; 'हे स्वांमी ! ज्ञांनरा भेद कितरा छै ?' तद गुरु कहै छै; 'ग्यांनरा पांच भेद छै' । तिकै शुण आपणी बुध सेती वात शमझै तिकैरो नांम मतज्ञांन कहीजै १ । सास्त्र सेती बात समझणीमै आवै तिणरो नांम श्रुतज्ञांन कहीजै २ । तीन कालरी वात जांणै तिकैरो नांम अवध ज्ञांनी(न) कहीजै ३ । अपणै मनसुं पारकै मनरी वात जांणै तिणरो नांम मनपर्जव ज्ञांन कहीजै ४ । चवदै राजलोकनै परतिखपणै देखै, मनमै शंशो रहै नही, तिणरो नांम केवलज्ञानी(न) कहीजै ५ । अै पांच ज्ञांनरा नांम कह्या ॥

हिवै शिष्य पूछै; 'हे स्वांमी ! तपस्या करी आठ कर्मांरो नाश करै तिणशै कांइ गुण पैदा हुवै ?'तिको कहो। हिवै गुरु कहै; हे शिष्य ! पहिलो

ग्यानावरणीकर्मरो नाश कर्या शेती केवलज्ञांन पैदाश हुवै १ । दरशनावर्णीकर्मरो नाश किया केवलदरशण पावै २ । वेदनीकर्मरो नाश किया शेती शर्व पिडा करि रहत हुवै ३ । मोहनी कर्मरो नाश किया शेती शर्व क्लेश संताप मिटै ४-जन्म-मरण संबंधी क्लेश मिटै ४ । आऊ कर्मरो नाश कीया शेती अखय पद पामै ५ । नांमकर्मरो नास किया शेती अरूपीपणो पांमै ६ । गोत्रकर्मरो नाश किया शेती [उंच] नीच कुलमै ऊपजणरो विवहार मिट जावै ७ । अंतराय कर्मरो नाश किया शेती अनंता संसारी पदारथांनै देखै ८ । गुरु कहै, हे शिष्य! तपस्यारै जोर शेती कर्मारो नाश हुवै, कर्मारै नाश होणैकर इस्या आठ गुण ईण जीवरै ऊपजै । **इति आठ कर्म स्वरूप कह्यो ॥**

अथ शिष्य गुरुनै पूछै, हे स्वांमी ! वैराग भेद कितरा ? किण रीत शेती वैराग ऊपजै जीवनै ? तिको आप वैरागरो शरूप शमझायनै कहो । हिवै गुरु शिष्यनै शमझावै छै; हे शिष्य ! वैरागरा दोय भेद छै-एक तो मंद वैरागी जीवनै उपजै-एक अमंद वैरागी जीवनै उपजै, ईण रीतै दोय वैरागरा नांम छै। तिणमै पहिलै मंदवैरागरो शरूप कहुं छुं; तूं शुण । हे शिष्य ! मूरख, विवेक कर हीन, मंदबुद्धी इसा जीवांनै मंद वैराग उपजै । तिण उपजणरो कारण कहुं छुं तूं शुणः खाश-शाश-जुरादि[१] रोगै कर वैराग उपजै, मातारै-पितारै-पुत्ररै-अस्त्रीरै-बहन-भाईरै विजोग कर वैराग उपजै, अथवा मारैकर, पकडनैकर द्रव्य जाणकर वैराग उपजै । तद मनमै ईसो विचारै–ईण संसारमै कोई किणही जीवरो शहाय नही, एकलो जीव आयो छै, एकलो ही ज परलोकनै जासी, ईसी विचारणा मनमै ल्यावै । संसारनै असार कर जांणै, शगलो पदारथ खोटा करनै जांणै; पिण हे शिष्य ! जितरै रोग शरीरमै रहै तितरै वैरागरी दसा रहै-रोग मिट जावै तद वैराग पिण चल्यो जावै । फेर शंशारी शुखांमै अलुज[२] जावै, वैरागनै कदेही याद न करै । शुपनैमै कदेही वैरागदसा उपजै नही । ईन रीत शैती जिण जीवनै वैरागदसा आवै तिण वैरागरो नांम मंद वैराग कहीजै-इण रीत शेती मंद वैरागरो शरूप कह्यो ।

हिवै अमंद नांम वैरागरो शरूप कहुं छुं; हे शिष्य ! तूं शुणः जिण जीवरै अमंद वैराग उपजै सो वैराग ऊपना पछी जावै नही । अमंदवैराग कर क्रोध,

---

१. खांसी, श्वास, ज्वरादि । २. उलझ ।

मान, माया, लोभ अै च्यार कषाय रूप वैरी तिकांनै मारनै निरजीत कर नाखै। कर्मारो फेर जोर चालै नही । कर्मारै जोर विना संसारमै जीव भटकै नही । कर्मरहत जीवरै आवागमण न हुवै, लख चोरासी [१]जोन टल जावै । शरव कर्म मुच्यत हुवै । महाआनंद शुखमै मगन हुवै । संसारसौ न्यारौ हुवै । ईसो वैराग तो सरल प्रणामी जीव हुवै अेसै जीवनै अमंद वैराग उपजै । अमंद वैराग छै सो धर्मरो मूल छै, भावनारूप डाल छै, तपस्या रूप पांन छै, ध्यांन रूप [२]मींझर छै, ज्ञांन रूप फल छै, अमृतमई मोक्षरूप स्वाद छै। हे शिष्य ! जीवांनै अमंद वैराग उपजै तिके जीव धन्य छै । शंशारशमुद्रसूं तरीनै वैकुंठ प्राप्त जाय हुवै ईस्या जीवांनै म्हांरो शदा नमस्कार हुवो । उणा जीवारै ध्यांने करी मांरो शदा कल्याण हुवो, इतरै कर अमंद वैरागरो सरूप शंपूरण कह्यो ॥

अथ मनरो-विवेकरो युद्ध लिख्यते :

मनराजारो लशकररी शंख्या बतावै छै; 'मनरै मुसदी च्यार; तिकांरा नांम कहै छै; 'पहिलो तो मोह नांमा परधांन १, क्रोध नांमा परधांन २, लोभ नांमा परधांन ३, काम नांमा परधांन ४, ऐ च्यार मनराजारा कामदार छै। मनराजारै पाटरांणीरो नांम [३]परविरति छै । परविरतिरै क्रोध १ मोह २ लोभ ३ कांम ४ ऐ च्यार पुत्र छै । अैही ज मुंह आगै कामदार छै । मनराजारै अहंकार रूप हस्ती छै, मानरूप महावत छै, कुसील रूप खड्ग, अग्यांन रूप शेना, आठ कर्म सामंत, अविचार रूपी शेनानी, कपट रूप कोटवाल, अमिथ्या[४] रूप गुरु, वाद रूप तुरंग, विरोध रूप बगतर[५], हिंसा रूप टोप, कोप रूप ताल, मदमस्त रूप गोलो, ऊंनमाद रूप [६]जांमकी, सोग रूप गोलमदार[७], मिथ्या रूप लसकर सझनै मनराजा चढकरनै भरम रूप रिर्णभुंमकांमै आयकर डेरा दीना छै । महाजोरावर थको निरदय नांम दूतनै तेडीनै विवेक नांमा राजा कनै मेलतो हूवो। ताहरा दूत जायनै विवेकराजासुं बीनती करतो हूवो : हे राजा ! मारै धणी आप कनै मेल्यो छे, कहायो छै थानै 'थे मोटा राजा कहावो छो, थांरो जश लोक कहै छै । पिण मारै देशमै उजाड-विगाड करतांनै घणा दिन हूय गया छै । मै तो घणी बाती करी । तूं बरोबररो राजा छै तिणसुं मै जांण्यो

१. योनि । २. मंजरी-मांजर-म्होर । ३. परवृत्ति(?) । ४. मिथ्या । ५. बख्तर । ६. जामगरी । ७. गोळा फेंकनार । ८. रणमेदानमां ।

ओ शमझ जासी । पिण कठोर चित हूवै - निरदई हूवै - अविवेकि हूवै- मंद बुधी हुवै-प्रणांमां करम लीन हूवै- धाडा करनै धन भेलो कीयो हूवै, ईस्या गुण जिणमै हुवै तिको दुष्ट कहीजै । तिण कारण शेती अरे ! दुष्ट राजा ! तूं समझ कर चाल । मारै राजा कनै चालकर पगे लाग । निज रांणो कर। जीवणरी आस राखै छै तो मारो कह्यो मांन । थारी आबरु रह जासी । नहीतर नाहक मारयो जासी । फेर तने आसा हिवी मिलसी नही । तूं दिलमै चेतो कर । अबै कांम सांकडो बण्यो छै थारै । मारो राजा सिंह संमान छै, तूं हस्ती संमान छै । पिण मारै राजा आक्रम करी-अवाज करी जिण दिन तूं लीदही ज कर देसी, पिण थारा पग मंडसी नही । ईस्या वचन सांभलनै विवेकराजानै रिस उपनी । तद आपणा पुरसांनै कहै छै : ईणनै द्वारपाल देनै परो काढो, ईणरै धणीरो बल कितरो एक छै सो देखणो छे । विवेकराजा उंण दुतनै कह्यो, अरे ! दुष्ट ! थारै धणीनै जाय कर कह देजे-तूं अशल सूरवीर बन्नी कहावै छै, तो तयार हुय रहजे । मारी वाट ऊडी क[र]जे, मै शतावी जऊं छुं, ढील एक घडीकी न छै, ईसी मत करजै, मारी शेना देख कर भाज(ग?) जावै, पछै नासतो बुरो लागसी । ईसो कही दुतनै अनादरसुं सीख देनै काढौ । हिवै विवेकराजा आपणो लशकर ईण भांत तयार करै; राजा तो विवेक । निरत नांमां राणी । तिण रांणीरै च्यार पुत्रः बडो तो वैराग १, दूजो ज्ञांन २, तीजो त्याग ३, चोथो संतोष ४, ये च्यार बेटा छै । सुमति नांम परधांन, सतरूप हस्ती, मन रूप महावत, सील रूप बगतर, जत रूप टोप, क्षमा रूप खडग, ग्यांन रूप सेन्या, अष्टांगजोग रूप सामंत, शकत रूप सेनानी, विचार रूप कोटवाल, सत रूप गुरु, ध्यांन रूप तुरंग, सुरत रूप ताल, स्मरण रूप गोलो, तत्त्वरूप जांमकी, शुद्ध रूप तंबू, नीर[त?] भेरूडो, रसगतरूप खूंटीशं[१] ताकै पाश आय डेरा कीया । हेत रूप भोजन, भावना रूप भवन, [२]अणभवरूप नगारो, प्रेम रूप तूरी, तन रूप वांकीयो, शबद-स्परस-रूप-रस-गंध-बुध चित्त बांधकै विवेकरो पुत्र वैराग, ईश्वररूप घोडो तिण उपर चढकर, मोहशुं युद्ध कीनो । मोहनै मार नांख्यो । मोह मूवो । रे संसार खारो छै । मृगतृष्नाको जल साचो तो संसार साचो । सीपीमै रूपो साचो तो संसार साचो । जेवंडीमै

१. 'रसगतरूप खूंटी । शंतोष के पाश आय०' । अथवा - 'खूंटी शंतोष, ताकै पाश०' आम होई शके । २. अनुभव ।

साप साचो तो संसार साचो । जेवडीमै तो साप तीना कालांमै साचो नही तो संसार साचो नही । तो मोह मार्या हूवां इती वात कूडी दिसी । सांप काचलीनै छोडकर पूठो न देखै तिम ही वैरागवांन पुरुष संसार सांमो न देखै ।

अब ज्ञांनको क्रोधको लिखुं छुं ज्ञानयुधः । ज्ञान उठ क्रोधने जीत्यो । क्रोध मरतां घट अंत बीच एक ही ज अरथ दीशै । त्याग पायनै लोभनै जीत्यो । लोभनै जीतता माया खारी लागी, ऊपजै खपै सो सरब झूठी । त्याग देखतां जहर छै शंतो(ष?) ऊठ कांमनै जीत्यो, ब्रह्म वीच तीणै वीच एक दीशै पांच इंद्रीयांरो रश जीतै, ए च्यार जीततां अनेक प्रकारका कलेश मीट गया। जद मन आयनै विवेकनै अरज करी; 'म्हांरा च्यार पुत्र मुंवा । मै संसार सो जीत लीयो छै । थांरा पुत्रां मारो कूटंब जीत्यो, मनै निरधारो छोड दीनो । मै जांणो मैसुं मोटो कोई नही । तद विवेक कहै छै; हे मन ! 'तूं सतो(संतोष?) गुण राखै, अमंद वैरागवान साधुशुं डरतो रहै, नही तो फेर मार्यो जायलो । पिछै ओ संसार थारो ही ज छै' । **इति युद्ध संपूरणम् :** ॥

तेऽसंगविद्या तपो न दानं, न चापि शीलं गुणो न धर्मं ।
ते मृत्युलोकेऽभू भारभूता, मनुष्यरूपे मिरघाचरंति ॥१॥[३]

३. पद्य अशुद्ध छे.

तपागच्छादि ४ गच्छोना आचार्योनी ४ अप्रसिद्ध कृतिओना सुधारा

गुरुवाहण चोमासु

गाथा १२	पंक्ति ४	भमइए	भमइ ए
गाथा १३	पंक्ति ६	(जोड०	जोउ०
ढाल-२		ए [ह ज]	ए [हज]

श्रीपूज्य[जिनसिंहसूरि]रास

ढाल ४	–	राग-दे{व?} साख	भेगु करवुं
गाथा ४० थी ४५		'सूरीसर...' आंकनी	उमेरवी
गाथा ५३	पंक्ति २	सीलवनी	सीलवती
गाथा ८६	'' ४	पोढांनइ	पोढां नइ
गाथा १०६	'' २	मनिनइं	मुनिनइं
गाथा १०८	'' १	मोहत[३]	मोहतउ
गाथा ११२	'' २	सारीखा	सारी(रि)खा
गाथा ११२	'' ४	०सूरी(रि)स	०सूरीस
गाथा ११४	'' १	लबध{ह} (धि)इं	लबध{ह}(धि)इं
गाथा ११५	'' २	लहश्री	लहुश्री

श्रीविमलचंदसूरिरास

गाथा १०	'' ४	परि	पार
गाथा १७	'' ४	(उत्तम) करणी...	कौंसमां उत्तम नहीं पण करणी आवशे.
गाथा ३६	'' ३	धर्म{श्री}	धर्मश्री
गाथा ५७	'' १	ऋषि[वर्द्ध]मान	ऋषि [वर्द्ध]मान
गाथा ५८	'' २	अजीआ(जे)ज	अजीआ ज(जे)
गाथा ५९	'' १	संति प्रगति	संति-प्रगति
गाथा १००	'' १	धटी	घटी
गाथा ११२	'' १	धटी	घटी

गाथा ११४	''	१	[कीधा]जे	[कीधा] जे
गाथा ११६	''	४	आणंद	आणंदउ
शब्दकोश ५९	''	१	संति-प्रगति	शांतप्रकृति(?)
शब्दकोश १००	''	१	धटी	घटी
शब्दकोश १००	''	१	धडी	घडी

हीरविजयसूरीश्वर छंद

गाथा क्र० १		४	इमथ भखं	आ पद त्रीजा चरणनुं अन्त्य पद छे.
१९		४	प्रवाहो	प्रवादो
५४		४	लीलतरं	लीलतर
७९		४	तु(इ)	तुइ
८५		४	बि	वि
१०२		२	चतु[र] सुजाणं	चतु[र] सुजाणं
१६८		४	रेहि	रहि
१७३		१	०एह एक	०एह(एक)
दुहो ३	पंक्ति	२	हद्दसर(रं?)म	हद्द सर(रं?)म
३		४	हद्दगंम	हद्द गंम
शब्दकोश ६	पंक्ति	२	गुडहेर	गुहडेर
९८		२	जारु	बाळु

अनुसन्धान-८६ सप्टेम्बर - २०२१मां प्रकाशित 'केटलाकस्तोत्रो' अंतर्गत साधारणस्तवनम् (३)नां [१]प्रकरणरत्नाकर भा.२ अने जैन आत्मानंदसभा - भावनगर ज्ञानभंडारनी हस्तप्रतनां आधारे केटलाक पाठभेद एवं पाठशुद्धिनी नोंध अहीं प्रस्तुत छे तथा ते बन्ने स्थळे आकृति मन्त्रस्तवननां नामे दृष्टिगोचर थाय छे. साधारणस्तवननां नामे नहीं, त्यां कृतिने अंते लखायुं छे के 'इति श्री जिनप्रभविरचितं मन्त्रस्तवनं समाप्तम्' ।

१. प्रकरणरत्नाकर, भा. २ प्रका. भीमसी माणेक, पेज नं. २५१ पर आ कृति प्रकाशित छे.

गाथा	पाद	अनुसन्धान-८६	प्रकरण रत्नाकर-२	भावनगर हस्तप्रत
१	१	सः	स्वः	स्वः
१	१	श्रीयं	श्रियं	श्रियं
१	२	सिद्धिपुरी	सिद्धिपुरी	सिद्धिः पुरी
१	३	आचार्याः	आचार्याः	आचार्यः
१	४	वाचनां	वाचनां	वाचना
२	४	०षां प्रधानं	०षामाद्यं	०षामाद्यं
३	३	नामा (नमो?)	नाना	नाना
३	३	स्वरूपं च	स्वरूपं च	स्वरूपं [च]
३	४	धि(ध्ये)यं	ध्येयं	ध्येयं
४	३	स्तुतिबीजं	स्तुतेर्बीजं	स्तुतेर्बीजं
५	३	ये स्मरन्ति	ये स्मरन्ति	य(ये) स्मरन्ति
५	३	सदैवेनं	सदैवेनं	सदैवेन (नं)

अनुसन्धान-८६ सप्टेम्बर - २०२१मां प्रकाशित 'केटलाकस्तोत्रो' अन्तर्गत चतुर्विंशतिजिनस्तवनम् (४)नां जैनस्तोत्रसन्दोह भा.१नां आधारे केटलाक पाठभेद अने पाठशुद्धि अहीं रजू कर्या छे तेमज ८ पद्यनी आ कृतिनुं आठमुं पद्य कविनामगर्भकमलदलबन्धमां छे, जेनुं चित्र पण तैयार करी अहीं आपवामां आवे छे, जेनाथी स्पष्ट थाय छे के आ कृतिनां सर्जनकाळे कर्तानुं नाम मुनि 'धर्मकीर्ति' हतुं. 'जैन स्तोत्रसन्दोह' भा. १नी प्रस्तावनामां मुनि श्रीचतुरविजयजी महाराजे पण आम लख्युं छे के '...श्रीविद्यानन्दमुनेर्दीक्षानन्तरं धर्मकीर्तिरिति नाम्ना गृहीतवानसौ दीक्षाम्...' मतलब अेम थाय के दीक्षासमये आचार्यश्रीनुं नाम धर्मकीर्ति हतुं अने आचार्य थया त्यारे धर्मघोषसूरि नाम थयुं हतुं.

कमलबन्धकाव्यं कविनामगर्भं

इत्थं धर्मवचोवितानरचितं वर्यं स्तवं मुद्युतः,
सद्धर्मद्रुमसेकसंवरमुचां भक्त्याऽर्हतां नित्यशः ।
श्रेयःकीर्तिकरं नरः स्मरति यः संसारमाकृत्य सोऽ,
ऽतीतार्तिः परमे पदे चिरमितः प्राप्नोत्यनन्तं सुखम् ॥८॥

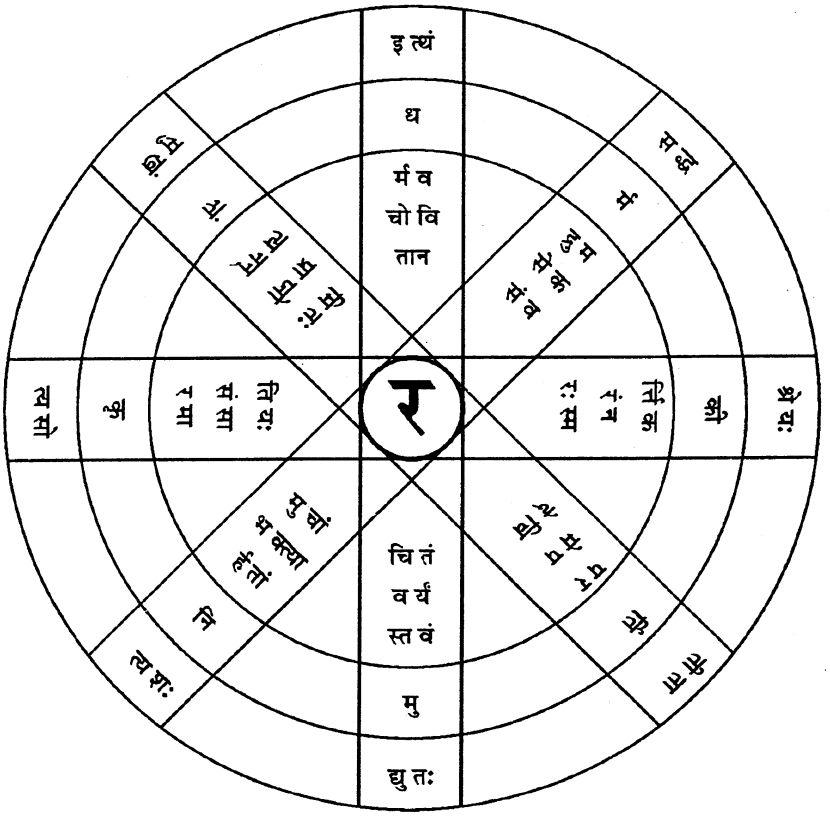

अनुसन्धान-८६ सप्टेम्बर - २०२१मां 'केटलाकस्तोत्रो' अन्तर्गत प्रकाशित चतुर्विंशतिजिनस्तवनम् नां जैन-स्तोत्रसन्दोह भा.१नां आधारे तैयार थयेल केटलाक पाठभेद एवं पाठशुद्धि ।

गाथा	पाद	अनुसंधान	जैनस्तोत्रसन्दोह-१
१	२	सान्द्रानन्द	सान्द्रामन्द
१	३	श्रीगुरून्	शङ्करान्
२	३	पुनात्वविभव	पुनातु विभवः
३	१	लोके शं	लोकेशः
३	१	श्रेयश्रियं	श्रेयःश्रियं
३	१	सन्मतिः	सन्मतिं
३	२	दम्भद्रोः	दम्भद्रौ
३	२	मदेभसरभं	मदेभशरभं
४	१	०प्रधे	०प्रधे!
४	२	श्रीमान् जिनः	श्रीमाञ् जिनः
५	२	ऽनन्तानन्त	ऽनन्तोऽनन्त
५	३	द्यताच्छि०	छयताच्छि०
५	४	कृताथक्षितिः	कृताधक्षितिः
६	१	मेघर(भ?)वो	मेघरवो
६	३	श्रीमल्लेरवनत(?)	श्रीमल्लेखनत
७	१	०म्भोजत(न?)मे०	०म्भोजतमे०
७	१	देहि	धेहि
७	४	लताया	लतायां
८	३	मात्कृत्य	मातकृत्य
८	४	विरमतः	चिरमितः

चार लघु रचनाओ

– सं. विजयशीलचन्द्रसूरि

जूना ह.लि. पत्रोमांथी प्राप्त चार गुर्जर रचनाओ अहीं आपवामां आवी छे :- तेमां पहेली रचना 'नेमनाथनो बारमासो' छे. २६ कडीमां पथरायेली आ रचना 'गुजराती'मां छे, अने तेना कर्ता 'कवियण' तरीके अन्तिम कडीमां निर्दिष्ट छे; कर्तानुं नाम स्पष्ट मळतुं नथी. नेम-राजुल साथे सम्बद्ध अने बार मासा प्रकारनी-एवी अनेक कृतिओ पूर्वे प्राप्त तथा प्रकाशित छे; आ कृति प्रायः अप्रगट छे एम विचारीने अहीं प्रगट करी छे. कृतिना अन्ते सं. १८४३ अने 'कसूबी' (गाम) एम वंचाय छे. आ संवत कृति-रचनानो पण होई शके. जो आ कृति आ विषयनी अन्य कृतिओना समूहमां नोंधायेली होय तो कदाच आ संवत् रचनानो छे के लेखननो - ए जाणी शकाय.

बीजी रचना '१४ गुणठाणास्तवन' छे. जैन धर्मसाधनानी पद्धति प्रमाणे आत्माना गुणविकासनी १४ भूमिकाओ १४ गुणस्थानक के गुणठाणाना नामे जाणीती छे. ते १४नुं जैन परिभाषामां ज पण गुर्जर भाषामां अहीं निरूपण थयुं छे. त्रण ढाळो अने पांच अन्य छन्द तथा २ दूहा-एक कळश–एम कुल २१ कडी प्रमाण आ रचना छे. क्लिष्ट गणाय तेवी परिभाषामां रचायेली होवाथी तेनो शब्दकोश आपवानुं जरूरी नथी मान्युं. आत्मविकासनी आ कर्मशास्त्रीय जटिल प्रक्रिया जो समजाय तो जैन दर्शननो एक महत्त्वपूर्ण दृष्टिकोण समजाई जाय. आना कर्ता उपाध्याय पुण्यसागरशिष्य वाचक पद्मराज होवानो उल्लेख २१मी कडीमां थयो छे. आ कवि खरतरगच्छीय आ. जिनेश्वरसूरि - जिनहंससूरि - पुण्यसागरना शिष्य छे; तेमणे सं. १६२४मां - 'रुचितदण्डकजिनस्तुति' पर वृत्ति रच्यानो उल्लेख प्राप्त थाय छे. (जैसासंइ. पृ. ५८४-८७). जोके जैपइ. भाग २, पृ. ३४४ प्रमाणे १६४४ के १६३४ जणाय छे. परन्तु तेमनो सत्तासमय १७मा शतकनो पूर्वार्ध हतो ते तो बन्ने उल्लेखो थकी सिद्ध थाय छे.

त्रीजी रचना 'जिनकल्याणक रास' नामे छे. आवुं नाम कविए स्वयं १९मी कडीमां आप्युं छे. जैन धर्मना २४ तीर्थङ्करोनां च्यवन-जन्म-दीक्षा-ज्ञान-निर्वाण एम पांच पांच कल्याणको-कल्याणकारी घटनाओना तिथि अने मासनुं शास्त्राधारित विवरण अहीं करवामां आव्युं छे. जरूर पडी त्यां आगमोना हवाला पण आप्या छे, तो क्यांक मतान्तर विषे पण उल्लेख छे. दा.त. कडी ३मां १९मा मल्लिनाथ

जिनना त्रण कल्याणक मागशर शुदि ११ना होवानुं कह्युं, साथेज छठ्ठा (ज्ञाताधर्मकथा) अंगमां (ते नामे एक आगमग्रन्थमां) ते 'पोष' मासमां होवानो निर्देश छे, ते वात पण लखी छे. आ विषे चोथी कडीमां कर्ताए नोंध्युं छे के ''कां तो आ लहियानो के लेखननो दोष संभवे छे; अथवा अन्य कोई कारण पण होई शके; आ विषे गीतार्थ गुरुओ ज जाणे छे; (आपणे तो) श्रुतधरना वचनने प्रमाणवुं जोईए.''

कवि खरतरगच्छीय छे, तेथी तेमणे भगवान महावीरना गर्भापहरणनी घटनाने पण 'कल्याणक' गणावेल छे (क. १८). आ बाबते सकल सङ्घथी खरतरगच्छ जुदो पडे छे. वा. पुण्यसागर आ. जिनहंससूरिना शिष्य हता. तेमणे जिनवल्लभकृत प्रश्नोत्तरकाव्यनी वृत्ति (सं. १६४०) तेमज १६४५मां जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति पर वृत्ति रची छे. ते परथी तेमनो सत्ताकाल १७मो शतक होवानुं प्रमाणित थाय छे. अहीं जैन परिभाषानुं ज प्राधान्य होवाथी शब्दकोश आपवो जरूरी नथी मान्यो.

चोथी रचना 'दण्डक स्तवन' छे. जैन सिद्धान्तमां जीवने २४ दण्डकमां भ्रमण करवानुं होय छे. तेनुं निवारण करे तो ज मोक्ष मळे. ए २४ दण्डकोनी सिद्धान्तमान्य विगतो आ रचनामां वर्णवाई छे. जैन परिभाषाथी खचित आ रचनानी २६ कडीओ छे. तेना कर्ता 'धर्मसुन्दरगणि' छे. जैपइ-३ (पृ. १७९) मुजब तेओ तपगच्छपति आ. सोमसुन्दरसूरिनी पाटे चोथी शाखामां २०मा आ. धर्मशेखरसूरिना शिष्य आ. धर्मसुन्दरसूरि नामे थया छे. तेमणे सं. १५३१मां 'श्रीपालनाटकगत रसवतीवर्णन' नामे कृतिनी रचना करी हती. तेमनो सत्ताकाल १६मा शतकनो पूर्वार्ध होवानुं निश्चित्त छे.

प्रकीर्ण पत्रोमांथी ऊतारेली आ ४ रचनाओ विषे कोई पासे कांई विशेष जाणकारी होय तो जणाववा विनंति.

*

नेमनाथनो बारमासो

अथ नेमनाथजीरो बारैमासो लिख्यते–
श्रावणमासै सामि मेली चाल्या रे,
कांई लाल रंगीला नेम न रहै झाल्या रे ॥१॥
ध्यावौ सहीयर साथ नाह मनावौ रे,
जिमतिम करयिनै प्यार प्रीतम ल्यावौ रे ॥२॥
वरसै **भाद्रव**मास मेहला माता रे,
आसूमै मांड्यो वाद विरह(हे?) राता रे ॥३॥
विरहानल तिहां बिज खीज करावै रे,
कांई ए दुख सहु मिट जाय जो प्रीऊ आवै रे ॥४॥
आसूजी आस्या मोह प्रीतम मिलस्यै रे,
आ दीवाली राति सुखमै विलसै रे ॥५॥
आ हूंस रही मनमांहि केहनै कहीयै रे
केहनै दीजै दोस, लहणौ लहीयै रे ॥६॥
आ **काती** काती जेम कालज्यौ कापै रे
कंतविहूणी नारि विरहो व्यापै रे ॥७॥
ओछा जल जिम मीन ते तिम तलफै रे
प्रीऊ विण नारी तेम मनमै कलपै रे ॥८॥
मिगसर मासै – मुझ नींद न आवै रे,
कांई कामनीने एकंत काम सतावै रे ॥९॥
हां जी अमे अबला अवतार ते किम जीवौ रे,
तेहनो दाय उपाय कोई वतावौ रे ॥१०॥
पोसै छाड्या रोस काया पोसै (सो) रे ।
कांई लाल रंगीला नेम म करो रोसो रे ॥११॥
दिवस तो जिम तिम जाय विरहा सहियै रे,
आ रयणी केम विहाय केहनै कहियै रे ॥१२॥
आयो **माह** ज मास नेम न आयो रे,
कांई दूती लागी कांन तिण भरमायो रे ॥१३॥

विरह अंगीठी झाल हीयडौ बालै रे
जायवौ विण अपराध ते मुझ सालै रे ॥१४॥
फागुण मासै फाग राग न जागै रे,
जो संग हुवै नाह तो दुख भांजै रे ॥१५॥
म्हारा रिदानी झाल केम उलाहै रे,
नयणे देखु नेम तो सुख थायै रे ॥१६॥
चैत्र जु मासै आंबा मोर्या रंगे रे
कांई कोयल करै रे केल मधुकरि संगै रे ॥१७॥
आ फूली सब वनराय सहू नर राजी रे,
कांई कंत विना न सुहाय विरहै दाझी रे ॥१८॥
वैशाखै पाकी साख द्राखा नीली रे
कांई तंबोलीना पांन – परि थई पीली रे ॥१९॥
[१]सूवाजी कहिज्यो जाय सैसावनमै रे
म्हारी देहतणी गति एह धारो मनमै रे ॥२०॥
जेठ तडक्यौ लूव उन्हा वाजै रे,
म्हारी चंपकवरणी देह अतिही दाझै रे ॥२१॥
करुणा नावै केम तुमनै वाल्हा रे,
कांई अमनै निरास थया मतवाला रे ॥२२॥
आयो **आसाढो** मास, बीजली चमकै रे,
कांई धरतीनो भरतार मेहलौ गाजै रे ॥२३॥
नायो मुझ भरतार नेम निरागी रे,
कांई मुगति धूतारि नारि भोलव्यो रागी रे ॥२४॥
बोल्या **बारै मास** इण परि सारा रे
कांई जाय मिल्या प्रीऊ नारि मुगति मझारा रे ॥२५॥
कहि **कवियण** करजोडि नमु सिर नामी रे,
कांई भणतां गुणतां एम नविनिधि पामीरे ॥२६॥

इतिश्री नेमनाथजी रो बारैमासीयो संपूर्णम् ॥

सं. १८४३ मिती श्रावण सुदि ५ । लि. कसूबीमध्ये ।

१. सूडो – शुक ।

वाचकपद्मराजकृत

१४ गुणठाणास्तवन

जगि पसरंत अनंत कंति गुणगणमणिरोहण
रिसहजिणेसर चरणकमल पणमी मणमोहण ।
श्रुत अनुसारइ कहिसुं चउद गुणठाण विचार
जेण अनुक्रमि लहै जीव भवसायरपार ॥१॥
पहिलउ गुणठाणउ मिथ्यात१ बीजउ सास्वादन२
तीजो मिश्र३ चउत्थ तेम अविरतसमकितगुण४ ।
देसविरत पंचम५ प्रमत्त मुनि छट्ठ६ सत्तम
अप्रमत्तसंजत७ अपुव्वकरणाभिध८ अट्ठम ॥२॥
अनिवृत्त नवमउ ९ दशम सहुमसंपराय भणीजइ १०
इग्यारमउ उवसंतमोह ११ गुणठाण सुणीजइ ॥
खीणमोह बारस १२ सजोग केवल गुणठाणउ १३
तेरसमउ चऊदमऽजोग १४ अनिक्रमि वखाणउ ॥३॥
आदिमगुणथानकि सरूप जिनमति इम कहियइ
कुगुर कुदेव कुधर्म तत्त्व करि जिहां सद्दहियइ ।
मद्यपानवसि जेम जीव हित-अहित न जाणइं
तेम न बूझइ तत्त्ववात मिथ्यात्व प्रमाणइं ॥४॥
ते मिथ्यात अभव्यमांहि अनादि अनंत
भव्य मझारि अनादिसंत पभणइ अरिहंत ।
इम अनंत पुदगलपरट्ट पहिलइ गुणठाणइ
वस बीजइ गुणठाण लहइ निरुपम सुहझाणइ ॥५॥

ढाल : जीव अनादि मिथ्यात्वकरमह उपसमइ, उपसमसमकित समकित लहइ ए
तिहांथी पढम कषायवसि करि पडिवज्जओ, जां मिथ्यात्व न संग्रहइए।
तां सासादिन होइ इक समयादिक-षट आवलिका थिति भंजइ ए
हिव त्रीजउ गुणठाण मिश्र जिहां भाव मिश्रमोहवसि संपजइ ए ॥६॥
अंतरमहूरत सीम शिव जिनशासन-हरिहर जिन सरिखा गिणइ ए
तिहांथी मिथ्यादृष्टि अथवा समकितदृष्टि हवइ श्रुतधर भणइ ए ।

अविरतसमकितदृष्टि चउथउ थानक तसु सरूप सुणिइ इण परइ ए
बीजी(जा?)जेह कषाय तेहतणइ उदइ विरतिरहित समकित धरइ ए ॥७॥
जिणवरभाषित भाव सूखम बादर ते निस्संकित सरदहइ ए
करुणा तिहां संवेग उपसम निर्वेद आस्तिक भाव हियइ वहइ ए ।
देव सगुरु [१]श्रीसिंघ-भगति सुदृढचित्त जिनशासन उन्नति करइ ए
स्थिति सागर तेत्रीस साधिक एहनी उतकृष्टी जिन उच्चरइ ए ॥८॥
पंचम हिव गुणठाण तईय कषायनइ-उदय विरति देस तव हवइ ए
पालइ श्रावकधर्म षटकर्म बारह व्रत प्रतिमादिक साचवइ ए ।
पूर्वकोडि देसूण गरूई स्थिति इहां छड्डउ थानिक इम लहइ ए
मुनि संजलणकषाय - तीव्रउदयवसि पणि प्रमाद-परवसि रहइ ए ॥९॥

ढाल : हिव गुणठाणउ सत्तम, अप्रमत्त यति उत्तम
निरुपम धर्मध्यान निश्चल धरइ ए ।
तिहां संजलणकषायनइ उदय मंदपण संपन्नइ
तनु मन्नइ मुनि प्रमाद सवि परहरइ ए ॥१०॥
कूड कपट सवि छंडइ ए उपसम दमगुण मंडइ ए
खंडइ ए अतीचार चारित्रतणा ए ।
हिव अट्ठम गुणठामइए चढतइ शुभ परिणामइ ए
पामइ ए गुण अपुव्व मुनिवर घणा ए ॥११॥
उपसम खिपंक सुहामणी श्रेणिं आढवइ ते मुणी
अति घणी विसुद्धि तिहां निरमली ए ।
नवमो गुणथानक जणइ क्रोध मान माया हणइ
निरजणइ कर्म अनेक तिहां वली ए ॥१२॥
गुणथानक दशमो इम, शत्रु-मित्र तृण-मण सम
अंतिमसमइ लोभ अणु नीठवइ ए ।
हिव गुणठाण इग्यारमइ, मोहप्रकृति सवि उपसमइ
भव पूरइ अहमिंद हवइ ए ॥१३॥
अह परिणामतणइ वसइ, मिथ्या-गुणथानक वसइ
तउ तिसइ ऊणो अर्द्धपुदगल भमइ ए ।

१. श्रीसंघ

जउ दशमइथी बारमइ, गुणथानकि आवइ किमइ
अनुक्रमइ च्यार करम ते नीगमइ ए ॥१४॥

ढाल : छट्ठाथी बारम लगइ, सात जिके गुणठाण ।
प्रत्येकइ स्थिति जाण इक, अंतरमहूरत माण ॥१५॥
सुकलध्यान चउभेउ तसु, दुन्नि भेय अवसाण ।
तेरम गुणठाणा धुरइ, पामइ केवलनाण ॥१६॥

ढाल : ताम सुरासुर करइ तास, उच्छव अतिसुंदर
उत्कृष्टइ देसूण कोडि-पूरवथिति जिणवर ।
हिव लघु पण अक्षर उचार चवदम गुणठाणइ
करि सेलेसीकरण जोग रुंधइ सियझाणइ ॥१७॥
च्यारि करम चूरी करी ए न्यानादिक गुणवंत
अजर अमर पदने लहइ जिहां छइ सुक्ख अनंत ॥१८॥
अविरत सासादन मिथ्यात गुण लीधइ परभव
जीव लहइ न मरइ सजोग बारम मिश्र थइ सवि ।
देव नरय गतिमांहि च्यारि गुणथानक आदिम
तिरियमांहि पंचेव पढम नरमाहे सवि तिम ॥१९॥
संखेपइ करि इम कह्या ए ए गुणठाण अशेष
श्रुतसागरथी जाणिज्यो एहना अवर विशेष ॥२०॥
इम सगुणसुंदर नित पुरंदर रिसह जिणवर संथुण्यउ
गुणठाण चऊद विचार लेस्यइ तासु उपदेसइ भण्यउ ।
उवझायवर श्रीपुन्यसागर सुगुरु सुपसाइं मुदा
वीनव्यउ **वाचक पद्मराजइ** पूरवउ सुखसंपदा ॥२१॥

इति चवद १४ गुणठाणा स्तवनं ॥

*

श्रीपुन्यसागरकृत
जिन कल्याणक रास

नमिय पयकमल सुभ भाव सवि जिणतणा
पंचकल्लाण दिण भणिसु जिणवरतणा ।
कसिण कातिगतणइ पक्खि पंचमदिणइ
नाण संभवतणउ खयकरम चिहुंतणइं ॥१॥
नेमिजिण चवण सुरभवनथी बारसइ
पउमपह जम्म वलि दिक्ख तसु तेरसइ ।
वीर सिवमा वसइ पक्खि हिव ऊजलइ
नाण सिरि सुवधि अर त्रीज बारसि मिलइ ॥२॥
भास : मगसिर वदि रे सुवधि पंचमी जनमीउ
सो छड्डइ रे संयम धुर सिरि पणमीओ ।
दसमी दिण रे वीरइ संयम आदर्यउ
इग्यारसि रे पउमप्पह सिव सिर वर्यउ
सिर वर्यउ मगसिर सुदि दसम दिणरयण अरजिन जनमीउ
वलि मुगति पुण तिण दिवसि पत्तउ व्रत इग्यारसि पामीउ ।
इग्यारसइ वलि मल्लिजिननइ जम्म-दिक्ख-सुनाणया
वलि मल्लि दिक्खा-नाण छड्डइ अंग पोस वखाणया ॥३॥
इह कारण रे लिखित दोष संभावीयइ
कइ कोई रे अवर हेतु पुण भावियइ ।
तें पर सवि रे गीतारथ सहु गुरु लहइ
श्रुतकेवली रे वचन सहू इम सद्दहइ
सद्दहइ सहु ए ते प्रमाणइ वलि इग्यारसि नमितणउ
श्रीनाणकल्याणिक चवदिसि जनम संभवनउ थुणउ ।
पूनिमइ संभव दिक्ख पामी दयाधर जगिजीवनी
हिव पोस वदि दसमी इग्यारसि जनम दिक्खा पासनी ॥४॥
बारस तिथि रे चंदप्पह जिण जाईयउ
वलि तेरसि रे संजमि रंगसु पाईयउ ।

चवदिस दिन रे श्रीसीतल थया केवली
पोसह सुदि रे छट्ठि विमल नाणी वली ॥
नाणी वली थया नवमि संती अजित नाण इग्यारसइ
चउदिसइ अभिनंदनह केवल पूनम इम धम्मइ वसइ ।
माहाइ छट्ठइ पउम चवीयउ बारसइ सीतल हूओ
वलि तासु संयम किसण तेरसि रिसहजिण सिवपुर गयउ ॥५॥
अमावसि रे दिवस नाण इग्यारमइ
जिन पामी रे माह सुदिइ हिव अनुक्रमइ ।
सित बीजइ रे अभिनंदन वासपूजनउ
कल्याणिक रे दिवस नाण अनुक्रमि मानउ ॥
अनुक्रमइ मानउ बिहुं त्रीजो विन(म)ल धरमसु जामिया
श्रीविमल दिक्खा चउथि अट्ठमि अजित उतपति पामीया ।
नवमीय दिक्खा अजित पामी बारसइ अभिनंदनइ
श्रीधरमनाथइ सार संयमसिरि वरी तेरसिदिनइं ॥६॥

ढाल : फागुण वदि छट्ठइ सुपास केवलिसिरि पत्तउ
सत्तमि वलि तसु मुगति चंद्रप्रभ नाणइ जुत्तउ ।
नवमि सुविहिजिण चवण रिसह इग्यारसि केवल
बारसे सुव्वय नाण जम्म सेयंस सह निम्मल ॥७॥
तेरसि व्रत सिज्जंस तणओ चवदिस वासपुज्ज
जनम हूओ अम्मावसीए तसु संयम-रज्ज ।
सुकिल बीज चउथि अट्ठमीए अर मल्ली संभव
चवण सु बारसि मल्लि मुगति सुव्वय व्रत उच्छव ॥८॥

ढाल : चैत्र पढम पखि चउथि नाण चवणं पासस्स
पंचमि शसिपहु चवण जम्म अट्ठमि रिसहिस्स ।
वलि संयम पुणि रिसहसामि अट्ठमि आदरीउ
धवली त्रीजइ कुंथनाथनइ केवल फुरियउ ॥९॥
पंचम अजित अनंत अनइ संभवनइ मुगति
नवमि इग्यारसि मुगति नाण वलि पाम्यउ सुमति ।

त्रिसलादेवी वीरनाह तेरसि निसि जायउ
पूनिम दिन श्रीपद्मनाभ(ह) केवलिसिरि पायउ ॥१०॥

ढाल : हिवइ वैशाख वदि पडिवा दिन, कुंथ सिद्ध सीतल बीजइ दिन
पंचमि कुंथ चरित्त ।
छट्ठइ श्रीसीतल अवतरीउ, दसमि नमिजिण सिवसिरि वरियओ
तेरसि जनम अनंत ॥११॥
चउदसि दिक्खा नाण अनंतह, जनम हूयउ श्रीकुंथ जिणंद
वंदउ सिवपुर सत्थ ।
सेत चउथि अभिनंदन उत्तम, धरमनाथ चवीयउ वलि सत्तमि,
अट्ठमि सिद्ध चउत्थ ॥१२॥
सुमतिनाथ अट्ठमियइ जायउ, नवम संयम सामी पायउ,
गायउ धरि आणंद ।
दसमै नाण वीरजिण पामी, बारसि चव्यउ विमल जगिसामी,
तेरसि अजिय जिणंद ॥१३॥

ढाल : जेठ किसण पखि छट्ठि चवीयओ सेयंस, अट्ठम सुव्वय जनमियउ ए
नवमि मुगत संपत्त, तेरसि चवदिस संति जम्म व्रत सिव हूउ ए ।
धरमनाथ सिव पत्त, धवली पंचमि नवमइ वासपुज्ज अवतर्यउ ए
श्रीसुपासजिण जम्म बारसि तेरसि जगगुरु संयमसिर वर्यउ ए ॥१४॥
हिव आसाढ वदि चउथ रिसहेस चवण सत्तमि सिरविमल मुक्ख
नवमि नम(मि) वइगहण सेय छट्ठइ चवण वीरनइ अट्ठमइ नेम मुक्ख ।
चउदिसइ श्रीवसुपुज्जजिणंद छ सय वर साधु करि परवर्या ए
बहुत्तर वरस लक्ख पूरि चंपापूरी करम हणि सिद्धरमणी वर्या ए ॥१५॥
श्रावण वदि हिव त्रीज मुगति श्रेयांसह पामी
सत्तमि चव्यउ अणंतनाह अट्ठमि नमि जामिय ।
नवमि कुंथजिण चवण हूयओ अह निम्मल बीजइ
सुमति चवण पंचमिय नेम जिण जम्म भणीजइ ॥१६॥
छट्ठइ मुनिवर नेम हूयओ अट्ठमि सीधउ पास ।
मुणसुव्वय पूनिम रयण चविउ गुणमणवास ॥१७॥

भाद्रव वदि सत्तमिहि संति ससि चवण भवक्खय
अट्ठम चविय सुपास नवमि सुहि सुविध सिवंगय ।
हिव आसूवदि तेरसीय श्रीवीरजिणेसर
गब्भहरण अमावसीय नाणी नेमीसर ॥१८॥
पूनिम नमिजिणवर चविय, इण परि बारह मास
श्रीआवश्यक दाखवी, **जिणकल्याणक रास** ॥१९॥
जिणचवण जन्म चरित्र केवलनाण सिवप्रापति दिणइ
अरिहंत भत्तइ सुद्ध चित्तइ तप करइ जे इकमनइ ।
कल्याणनी ते कोडि पामइ अनुक्रमइ सिवसुख लहइ
ए हेत जाणी सगुरुवाणी एह कल्याणिक कहइ ॥२०॥
इम पंच भरतइ ऐरवति करि एक दिने जिनवरतणा
दस दस कल्याणिक हवइ अनुदिन सुर करइ उच्छव घणा ।
जिम हूआ ते तिम वली होस्यइ पंच कल्याणक सदा
श्रीपुन्यसागर कहइ भवियां एह आराहउ मुदा ॥२१॥

इति पंचकल्याणिकस्तवनं ॥

*

श्रीधर्मसुन्दरगणिकृत
दंडकस्तवन

आदीसर हो सोवनकाय तेजइ रवि जिम दीपतउ ।
सुर किंन्नर हो सेवइ पाय मोहमहाभड जीपतउ ॥१॥
जे अहिनिसि हो प्रणमइ स्वामि त्यां घरि सदा वधामणा ।
चउगइ दुख हो टालणहार जिणवर नाम सुहामणा ॥२॥
वीनतडी हो इक अवधारि कर जोडी कवियण कहइ ।
तुं समरथ हो इणि संसारि तुझ कीरति जगि महमहइ ॥३॥
चुलसीलख हो योनि मझारि चउवीसे दंडके भम्यउ ।
तुम्ह दरिसण हो नवि लाधउ स्वामि सूधउ समकित नवि रम्यउ ॥४॥

हिव पहिलउ हो दंडक जाणि संसारइ नारकीतणउ
भुवणाहिव हो दसइ वखाणि थावर पिण पंचे भणउ ॥५॥
विगलिंदी हो तीने जाणि नर तिरि वंतर जोइसी ।
वेमाणी हो इम चउवीस बोल्या प्रवचन मनि वसी ॥६॥
गर्भज नर हो नइ तिरियंच विणसी नरगइ ऊपजइ ।
नारकगति हो तिहां छंडेवि तिरि नरमांहे संपजइ ॥७॥
भुवणाहिव हो दसे वखाणि आगति नर तिरियांतणी ।
गति पंचइ हो थावर त्रिण्हि नर तिरियां गुरुमुखि सुणी ॥८॥
पुढवी पुणि हो इयां दस मांहि करमइ आवी संक्रमइ ।
इम आऊ हो वणसइकाय गति आगति दसविह भमइ ॥९॥
भू दग तरु हो तेऊ वाउ विगलिंदीत्रिक जांणीयइ ।
नर तिरियां हो जीव मरेवि करमइ भूमांहि आणीयइ ॥१०॥
इम तेऊ हो वाऊकाय नव गति दस आगति सही ।
जिण कारणि हो तेऊवाउ मानवमांहि आवइ नही ॥११॥
गति आगति हो दसविह एम जाणेवी विगलांतणी ।
जिणसासणि हो ऐह विचार पन्नवणासूत्रे भणी ॥१२॥
नारक विणु हो दंडक त्रेवीस भू दग तरुमांहि अवतरइ ।
इणि कारण हो आगति त्रेवीस दस गति भवमांहि संचरइ ॥१३॥
हिव मणुआं हो आगति बावीस पणवीस गति सूत्रे भणी ।
गति आगति हो इम चउवीस पंचेंद्री तिरियांतणी ॥१४॥
सोलसविह हो विंतर देव चंद्रादिक जे जोइसी ।
गति आगति हो सोहम ईसाण भुवणेसर सुर सारिसी ॥१५॥
आदि देई हो सनतकुमार सहसारांत विचारीयइ ।
पंचेंद्री हो तिरिनरमाहि गति आगति हुइ धारीयइ ॥१६॥
ऊपरिला हो चिहुं सुरलोय ग्रीवेकइ अनुत्तर तिहां ।
गति आगति हो इक नरमांहि सुरसंपइ अधिकी जिहां ॥१७॥

ढाल : इम चउवीसे दंडके फिर्यउ अनंती वार ।
दस दृष्टांते दोहिलउ लाधउ नरभव सार ॥१८॥

लाधउ आरिजदेस पुण लाधउ कुल अवतार ।
पांचे इंद्री परवडा लाधउ धर्म विचार ॥१९॥

ढाल : मुझ सूधउ धरम न रमीयउ रे, लहि समकित आलइ गमीयउ ।
मइं मान विनयगुण गमीउ रे, तिण अरिहंतदेव न नमीउ ।
मन मत्तगयंद न दमीउ रे, तउ भवसायरमांहि भमीउ ।
हुं क्रोध लगी धमधमीयउ रे, गुरुवचने नवि उपसमीउ ॥२०॥
मइं कपट करी जन व(वं)च्चयउ रे, तिण बहुलउ पातक संच्चयउ ।
हुं लोभ करी हा हूतो रे, जीव फिरतउ घणुं विगूतउ ॥२१॥
अड कर्मे घणुं विगाह्यउ रे, तुम्ह दंसण कईयइ न पायउ ।
पुन्ययोगइ नर भव आयउ रे, तिहां कुगुरु कुदेवे वाह्यउ ॥२२॥
वलि मोहनिद्रायइ सूतउ रे, बहु पातक-पंकइ खूतउ ।
भवि भमतां भमतां भागउ रे, तुम्ह चरणे आवी लागउ ॥२३॥
रिहसेसर जिणवर आया रे, तुं समरथ त्रिभुवन ताया ।
मया करी प्रभु तारउ रे, वलि वेगइ पार ऊतारउ ॥२४॥
तुं त्रिभुवन सामी दीठउ रे, तउ अंगि अमीघण वूठउ ।
धर्मसुंदरगणि इम बोलइ रे, तुम्ह दरसण सुरतरु तोलै ॥२५॥

इति दंडक स्तवनं समाप्तम् ॥

आपघड्या संशोधक!

– कुमारपाळ देसाई

३३ वर्षना संशोधनयज्ञने परिणामे मोहनलाल दलीचंद देसाई पासेथी 'जैन गूर्जर कविओ'ना त्रण भाग प्राप्त थया. पंदर वर्षना संशोधनकार्य बाद ई.स. १९२६मां 'जैन गूर्जर कविओ'नो प्रथम भाग अने अनो त्रीजो भाग ई.स. १९४४मां प्रगट थयो.

आजथी ९७ वर्ष पहेलांना वर्षनी कल्पना करीअे. गुजरात-राजस्थानमां अनेक नानां-मोटां गामोमां विखरायेला ज्ञानभण्डारो, अेमां सचवायेली प्राचीन गुजराती साहित्यनी असंख्य हस्तप्रतो - एनी ज्ञानपूजा थाय, पण एने खोलीने जुअे कोण ? एनी अशातना न थाय ते माटे अेने जापतामां राखवानी. विचार जागे के मोहनलाल देसाई आ बधां गामोमां केवी रीते फरी वळ्या हशे ? केवो विश्वास जगावीने ज्ञानमन्दिरोनां वर्षोथी लागेलां ताळां खोलाव्यां हशे ? केवी धूणी धखावीने बेठा हशे ने असंख्य पोथीओमांथी पोताना ग्रन्थमां उतारेली प्रचुर माहिती नोंधी हशे ! ए जमानानी केटलीय अगवडो अेमणे वेठी हशे अेनी तो आपणे कल्पना ज करवानी रहे छे.

मोहनभाईअे पोथी जोई नथी अने कागळ-कलम लईने बेसी गया नथी. साहित्यपरिषदना संमेलनमां हस्तप्रतोनुं प्रदर्शन थाय तोये मोहनभाई एमांथी गुजराती कृतिओनी माहिती उतारी ले. आग्रा गया होय तो त्यांना हस्तप्रतभण्डार शोधे, कलकत्ता (कोलकाता) गया होय तो त्यांना केटलोग ऊथलावे अने राजस्थानना कोई गाममां गया होय तो पेटीपटारा ऊघडावे. अनेक मुनिमहाराजो, श्रावको, श्रेष्ठीओ अने अभ्यासीओनो पण सम्पर्क करे. अेमनी निष्ठा अने साहित्यप्रीति एवी के सामान्य रीते ज्यां जाकारो मळे, त्यां सौ अेमने प्रेमपूर्वक पोतानी पासेनी सामग्री आपे.

मोहनलाल दलीचंद देसाई (ज. ६ एप्रिल १८८५, लूणसर, जि. राजकोट; अ. २ डिसेम्बर, १९४५, राजकोट)अे राजकोटमां माध्यमिक शिक्षण अने मुम्बईमां उच्च शिक्षण लीधुं. १९०८मां बी.अे. अने १९१०मां एलएल.बी. थया बाद मुम्बईनी स्मोल कोझ कोर्टमां वकील तरीकेनी कामगीरीनो प्रारम्भ

कर्यो. अेमने आ साहित्य अने इतिहासनी सेवानो नाद क्यांथी लाग्यो हशे अे आजेय कोयडो छे. पच्चीसी वटावी न वटावी त्यां प्राचीन साहित्यनी सामग्री अेकठी करवानी धून अेमने वळगी पडी, जेणे जीवनना अन्त सुधी अेमनो केडो मूक्यो नहि. अे धून अेमने चित्तभ्रमनी अवस्था सुधी पण खेंची गई.

कोई संस्था के युनिवर्सिटी घणां वर्षो सुधी जेवुं संशोधनकार्य करे तेवुं कार्य अेमणे अेकले हाथे अत्यन्त परिश्रमपूर्वक तथा संशोधननी चोक्कस व्यवस्था प्रमाणे तेमज वैज्ञानिक अभिगम साथे कर्युं. आने माटे तेओ जाते प्रवास खेडता. अेक बाजु वकीलातनो व्यवसाय चालतो होय अने बीजी बाजु अेमनी अखण्ड साहित्ययात्रा पण चालती रहेती.

विशेष तो कोर्टमां दिवाळीनी, नातालनी के पछी उनाळानी रजाओ आवती, के तरत ज तेओ प्रवासे नीकळी पडता अने कोई गाम के शहेरमां जईने हस्तप्रतभण्डारोमां पलांठी लगावीने बेसी जता. आ रीते मोहनलाल देसाईअे अनेक सदीओना आपणा साहित्यनी अंधारी गुफामां मशाल प्रगटाववानुं कार्य कर्युं. सेंकडो कविरत्नोने अने अेमनी असंख्य काव्यकृतिओने प्रकाशमां आण्यां.

१९२६मां 'जैन गूर्जर कविओ'नो प्रथम भाग बहार पाड्यो त्यारे मोहनभाई देसाईनुं दीर्घकाळथी सेवेलुं स्वप्न साकार थयुं अने गुजराती साहित्यना इतिहासने अेक नवुं परिमाण मळ्युं.

मुनि जिनविजयजीअे लख्युं : ''जे वखते अमने कलमेय झालतां नहोती आवडती ते वखतना अे जैन इतिहास अने जैन साहित्यना विचारघेला अने अनन्यं आशक बनेला छे. क्यां वकीलातनो वहेतो धंधो अने क्यां आ अखण्ड साहित्यसेवा ! केवळ साहित्यप्रवृत्ति अे ज जेमना जीवननिर्वाहनो खास उपाय अने अे ज जातनुं जीवन जीववा माटे जेओ सरजाया होय तेवा पुरुषो पण, जे कार्य मोहनभाईअे करी बताव्युं छे ते करी बतावववा भाग्ये ज भाग्यशाळी नीवडे छे. मोहनभाई जो न जन्म्या होत तो कदाच जैन कविओनी झांखी करवा जगतने २१मी सदीनी वाट जोवी पडत.''

पण आ तो मोहनभाईना साहित्ययज्ञनुं प्रथम पगरण हतुं. १९४४ सुधी आ साहित्ययज्ञ अविरत चालु रहे छे अने 'जैन गूर्जर कविओ'ना ४०००

उपरांत पानांना कुल त्रण भागो (अने चार ग्रंथो) प्रगट थाय छे.

'जैन गूर्जर कविओ' छे तो अेक सूचिग्रन्थ, पण महाभारत महामूलो सूचिग्रन्थ. अेमां बारमीथी वीसमी सदी सुधीना १००० जेटला जैन कविओ ने अेमनी २५०० जेटली लांबी कृतिओ (लघु कृतिओ जुदी)नी माहिती समाविष्ट छे. आ माहिती आपणने आपणा साहित्यवारसानो रोमांचक परिचय करावे छे. अे साहित्यवारसामां कविओनुं पाण्डित्य छे, पवित्र धर्म छे, रसज्ञता छे, छन्दकौशल छे ने भाषाप्रभुत्व छे; वार्तानो अद्‌भुत खजानो छे, पौराणिक चरित्रो छे, इतिहास छे, समाजदर्शन छे, तत्त्वज्ञान छे ने धर्मबोध छे.

मोहनभाईअे अनेक पूरक सामग्रीथी पोतानी आ ग्रन्थश्रेणीने वधारे समृद्ध करी छे. अेमां अेमणे जैन कथानामकोश, देशीओनी सूचि, गुरु पट्टावलीओ ने गुजरातीनी पूर्वपरम्परानो इतिहास ! अेवी घणी सामग्रीनो समावेश कर्यो छे. जैन साहित्य अने इतिहासनो जाणे अेक ज्ञानकोश !

खरेखर तो मोहनभाई पोते ज अेक हरता-फरता, जीवता-जागता ज्ञानकोश समा हता. अेमना मगजमां अेटली बधी माहिती ऊभराया करती के अे टूंकुं तो कदी लखी शकता ज नहीं. 'जैन गूर्जर कविओ'ना पहेला भागमां अेमणे प्रस्तावनारूपे गुजरातीनी पूर्वपरम्परानो इतिहास जोड्यो अने अे थई गयो २३०० उपरांत पानांनो ! बीजा भागमां अेमणे प्रस्तावनारूपे जैन साहित्यनो इतिहास छेक आगमकाळथी आपवानुं धार्युं अने लेख अेटलो विस्तरतो गयो के अन्ते अेनो स्वतन्त्र ग्रन्थ ज थयो. 'जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास', नाम छे 'संक्षिप्त', पण १००० उपरान्त पानांनो अे ग्रन्थ छे अने प्रत्येक पृष्ठ माहितीथी समृद्ध छे.

मोहनभाईअे कोर्टना वेकेशनो आ साहित्यसंशोधन पाछळ खर्च्यां. ते उपरान्त रात्रे मोडे सुधी अेमनी आ कामगीरी चालती. अेमां वकीलातनो भोग पण लेवायो हशे; परन्तु मुम्बईनी खोलीमां अेकले हाथे आवा आकर ग्रन्थोना निर्माणनुं कार्य केवी रीते थयुं हशे ते कौतुकनो विषय छे. आवां काम करतां विद्वानोनी फोज धरावती युनिवर्सिटी जेवी संस्थाओ पण हांफी जती होय छे. असाधारण स्मृतिशक्ति विना, मगज कम्प्यूटर जेवुं बनाव्या वगर आवां काम अेकले हाथे न बने. अने मोहनभाईअे पोताना मगजने आवुं बनाव्युं हतुं अेनी

साक्षी अेमनो अेकेअेक लेख पूरे छे. देवचन्द्रजी विशे अे लखवा बेसे त्यारे अेने अनुषंगे जे जे व्यक्तिओ ने कृतिनो निर्देश करवानो आवे अेना विशेय पूरती माहिती ठालव्या विना अेमने चेन पडे नहीं.

मोहनभाईनो साहित्यसेवानो साचो – पूरो अन्दाज मेळववो घणो मुश्केल छे. श्री जैन श्वेताम्बर कॉन्फरन्स जेवी घणी जैन संस्थाओमां नवी युगचेतना प्रवर्तावी. सविशेष तो अेमनी ऊंडी विद्यानिष्ठा अने व्यापक विचारसृष्टिने कारणे अेमणे 'श्री जैन श्वेताम्बर कोन्फरन्स हेरल्ड'ना (अेप्रिल, १९१२थी जान्यु.-फेब्रु. १९१९ सुधी) तथा 'जैनयुग'ना (१९२५-१९३०) अङ्कोमां जोवा मळे छे. अेमणे पांच वर्ष 'जैनयुग' नामनुं मासिक चलाव्युं छे. अे पांच वर्षमां अेमनो फाळो ८००-९०० पानांनो छे ! 'जैन अैतिहासिक रासमाळा भाग १' (१९१२ के १९१३), 'यशोविजयरचित गूर्जर साहित्यसंग्रह भाग १' (१९३६) तथा 'सिद्धिचन्द्रविरचित भानुचन्द्रगणिचरित' (१९४१) अेमनां महत्त्वनां सम्पादनो छे. 'गिरनार तीर्थोद्धार रास तथा रासमाला' (संपा. १९२०), 'नयकर्णिका' (संपा. गुजराती तथा अंग्रेजी आवृत्ति, १९१० तथा १९१५ के १९१६), 'जैन काव्यप्रवेश' (संपा. १९१२), 'जैनाचार्य श्री आत्मानन्दजी जन्मशताब्दी स्मारक ग्रन्थ' (संपा. १९३६), 'सम्यकत्वना सडसठ बोलनी सज्झाय' (संपा. १९१२), 'सुजसवेली भास' (संपा. १९३४), 'स्वामी विवेकानन्दना पत्रो' (अनु. १९१२), 'जिनदेवदर्शन' (१९१०), 'सामायिक सूत्र' (१९११) वगेरे अेमना अन्य ग्रन्थो छे. आ उपरान्त, 'बौद्ध अने जैन मतना सिद्धांतो अने इतिहास' विशेनो अेमनो सुदीर्घ इनामी निबन्ध (१९१४) छे. सामयिकोमां प्रगट थयेलां अेमनां संख्याबंध सम्पादनो अने लखाणो हजी अप्रकाशित छे; परन्तु अेमनी अप्रतिम साहित्यसेवाना कीर्तिकळश तो 'जैन गूर्जर कविओ' (१९२६ थी १९४४) अने 'जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास' (१९३३) अे बे ग्रन्थो छे. आ सन्दर्भमां कवि-विवेचक नरसिंहराव दिवेटियाअे लख्युं.

'आवा आकर ग्रन्थोनुं अवलोकन लखवुं अे मारा जेवाना सामर्थ्यनी बहार छे.' (ता. ९-८-१९३१).

मोहनभाईनां लखाणोनो उपयोग करीने घणा लोको विद्वान तरीके प्रसिद्धि पामी गया, पण मोहनभाई पोते अन्धकारना आवरणमां ढंकाता गया.

जैन साहित्यने निमित्ते अेमणे साहित्यसेवा करी, पण दुर्भाग्ये लांबा समय सुधी अे जाणे सम्प्रदायसेवामां खपी गई !

मोहनभाईने साहित्यसेवानो नाद लाग्यो अेना करतांये विशेष अगत्यनी बाबत तो अेमणे प्राप्त करेली सज्जता छे. जूनी गुजराती उपरान्त संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंशमां पण अेमनो प्रवेश जोवा मळे छे. आ ज्ञान अेमणे क्यांथी लीधुं ? कोई पाठशालामां के कोई मुनिमहाराज पासेथी अेमणे शिक्षण मेळव्युं होय, ते जाणवामां आवतुं नथी. उपरांत अेमनां सर्व लखाणोमां, 'जैन गूर्जर कविओ' जेवा ग्रन्थमां खास अपूर्व शास्त्रीय शिस्त अने वैज्ञानिक रजूआत देखाय छे. अेमनी विस्तृत शब्दसूचिओ जुओ, पॅरेग्राफो ने कविओ-कृतिओने क्रमाङ्को आपवानी अेमनी रीत जुओ, छेक सुधी शुद्धिवृद्धि करता जवानी अेमनी चीवट जुओ, सर्व आधारो ने दस्तावेजी माहिती नोंधी लेवानी अेमनी दीर्घदृष्टि जुओ ! गुजराती साहित्यना क्षेत्रे तो आ घटना घणी विरल जणाशे. आनी तालीम अेमणे क्यांथी लीधी ? पोताने मदद करनार अनेक व्यक्तिओनो नामोल्लेख करनार मोहनभाई आ विशे कशुं कहेता नथी तेथी समजाय छे के अे आपघड्या विद्वान हता ! सेल्फमेइड मॅन हता. अेणे आजुबाजु जोयुं हशे, युरोपीय विद्वानोनां कार्योनो परिचय कर्यो हशे, पण तैयार थया छे जाते.

मोहनलाल दलीचंद देसाईअे 'जैन गूर्जर कविओ'ना प्रथम ग्रन्थनी आवृत्तिनो कॉपीराइट जैन श्वेताम्बर कॉन्फरन्सने आप्यो हतो, कारण के अेनी उदारता अने कार्यदक्षताने कारणे आनुं प्रकाशन थयुं हतुं. पण साथोसाथ मोहनभाई मात्र साहित्य ने इतिहासना धूळधोया नहोता; अेमणे धर्म, तत्त्वज्ञान अने जीवननीतिना लेखो पण लख्या छे. अेमां अेमनी दृष्टि विशाळ छे, नवा युगथी अने राष्ट्रभावनाथी रंगायेली छे. तेओ स्वभावे धार्मिक, सरळ, सेवाभावी ने निःस्पृही हता. साहित्यसेवानो अेमनो सर्व श्रम प्रेमपरिश्रम हतो. राजकोटमां मामा प्राणजीवन मोरारजी शाह पासे अे उछर्या ने अेमनी पासेथी सादाईना, धार्मिकताना, देशसेवाना पाठ अे शीख्या. नानामां नाना माणसमां अे रस लेता अने अेनी साथे रस्तामां बे-अढी-त्रण कलाक ऊभा रहीने पण अेना जीवननी झीणामां झीणी माहिती मेळवता. पोते घसाईने उपयोगी थवा प्रयत्न करता. कोईने मददनी जरूर होय त्यारे अेवो संकल्प करता के आजे सांजे ४ थी

८ के ५ थी ७ दरमियान वकीलातमां जे रोकड आवक थशे, ते हुं आ जरूरियातमंदने आपी दईश.

१९४५मां राजकोटमां अेमनुं सन्मान गोठवायुं हतुं. अेमने थेली अर्पण थवानी हती. मुम्बईथी जैन समाजना अग्रणीओ अे माटे आववाना हता. पण अेना बेचार दिवस पहेलां ज अे अवसान पाम्या. अे पछी अेमना कुटुम्बीजनोअे आ पचास-साठ हजारनी रकमनी थेली लेवाने बदले अेमां रकम उमेरीने परत करी. गुजराती साहित्यनो इतिहास आ संशोधकनी कामगीरी विना अधूरो गणाय, नोंध अने विशेष तो गुजरातना विद्वान संशोधक अने मध्यकालीन साहित्यना अभ्यासी अेवा श्री जयंत कोठारीअे जैन गूर्जर कविओना ग्रन्थो उपलब्ध करावीने गुजराती साहित्यना भूलायेला अे भेखधारीना विराट विद्यापुरुषार्थनो परिचय आप्यो अने अेक संशोधकना दृष्टान्तरूप कार्यनी ओळख पण करावी.

(बुद्धिप्रकाश ओगस्ट २०२१ना
अङ्कमांथी साभार उद्धृत)

विहंगावलोकन

– उपा. भुवनचन्द्र

अनुसन्धान - ८६मां सम्पादक आचार्यश्रीए संशोधनक्षेत्र साथे संकळायेली एक बहु मोटी वात सम्पादकीयमां करी छे – एक कडवुं सत्य कहेवानुं 'साहस' कर्युं छे. कोई विद्वान, लेखक के संशोधक भळता पुरावा रजू करीने, भळता अर्थघटन करीनें आपणा ज धर्म/सम्प्रदायने चमकाववानुं, एनी महत्ता देखाडवानुं काम करे त्यारे ए ज धर्म / सम्प्रदायना संशोधनधर्मी विद्वाने शुं करवुं ? ए तिकडम चालवा देवुं, चुप रहेवुं के संशोधनसिद्ध तथ्योने आधारे ए दावाने निराधार जाहेर करवो ? जे प्रमाणोथी दावो करवामां आव्या होय ते जो संशोधनथी अन्यथा सिद्ध थता होय तो ए प्रमाणो / दावाओने खोटा कहेवानुं साहस संशोधक पासे होवुं जोइए. आम आदमीनी प्रामाणिकता पण एटलुं मागे छे, तो एक संशोधक पासे ए साहस तो होवुं ज जोइए.

सम्पादकजीए जेनी अप्रमाणता विशे लख्युं छे ते ग्रन्थ 'प्राचीन भारतवर्ष'ना खण्डो ज्यारे सर्व प्रथम जोया त्यारे हुं पण अभिभूत/रोमांचित थई गयो हतो; आगळ जतां ज्यारे विजयेन्द्रसूरिनां पुस्तको जोयां त्यारे ए मिथ्या गौरव छूटी गयुं. ए पुस्तको वांचीने आजे जे लोको प्रभावित थाय छे तेओ आ क्षेत्रे मुग्धावस्थामां छे. तेथी ए ग्रन्थमांना भ्रान्तिपूर्ण / भ्रामक दावाओना आधारे स्वपक्षनी सरसाई जाहेर करवानुं 'साहस' करी रह्या छे. कह्युं ज छे ने के अज्ञान करतां अर्धज्ञान वधारे अनर्थकर छे. सम्पादकश्रीए कह्युं छे तेम, जे ते क्षेत्रनी खूबी / खामीओने समजवा माटे वर्षोनो महावरो जोइए छे.

आ अङ्कमां प्रकाशित 'केटलांक स्तोत्रो' रसप्रद छे. प्रथम स्तोत्र, श्लो. ४०मां 'म न (म)' एम सुधारो सूचव्यो छे ते ठीक ज छे. नकारनो भाव दर्शावता 'म म' एवी द्विरुक्ति प्रचलित हती. श्लोक ५८, चोथा चरणमां '...जेसु धाणुषु रणमत्थए' ए रीते वांचवाथी बेसे छे. चोथा स्तोत्रमां श्लो. २मां 'श्रेयांसमा[न]ततनुः' कल्पी शकाय एम छे. त्रीजा चरणमां 'मल्लि[जि]नाधि नाथौ' कल्पवुं पडे. पांचमा स्तोत्रना श्लो.५मां 'ऽनन्तोऽनन्तगुणः' जेवो पाठ होवो घटे. श्लो. ६मां 'मेघरवो' एवो पाठ ज ठीक छे. अर्थ थशे – 'मेघ

जेवा ध्वनिवाळा'. 'श्रीमल्लेरवनत'मां गोटाळो थयो छे. 'श्रीमल्लेखनत' पाठ हशे. आम होय तो अर्थसंगति थशे अने वर्ण वधशे नहि. 'लेख'मां जे ख छे ते कदाच रव एम वंचायो छे. ख नी बाबतमां आवुं बनतुं होय छे.

'अर्बुदगिरिः'मां घणां स्थान अस्पष्ट रहे छे. अन्तिम कडीमां शत्रुंजय अने गिरनारनी वात आवी छे ते तीर्थपट विशे होय एम सम्पादकजी नोंधे छे. कविए देलवाडा अने अचलगढनी सरखामणी शत्रुंजय तथा गिरनार साथे करी होय एवी सम्भावना पण खरी.

भोगी० श्लोक आटलो प्राचीन छे ए आजे जाण्युं. 'यदा लोकनतो' ने स्थाने 'यदालोकनतो' पाठ वधु संगत थाय. यद्+आलोकनतः = जेना दर्शनथी नाग पातालाधिपति बन्यो.

पद्मसुन्दर मध्यकालना एक प्रसिद्ध ग्रन्थकार छे. तेमनी एक महत्त्वनी कृति 'प्रमाणसुन्दर' आ अङ्कमां प्रगट थई छे. पद्मसुन्दर एक प्रखर चिन्तक / सर्जक छे. सम्राट अकबर एमनाथी प्रभावित हतो. एमनी कृतिओ मोटा भागे अप्रगट छे. सम्पादक मुनिवरो ए काम आगळ धपावे एवी आशा अने अपेक्षा. प्रस्तुत कृति शुद्धप्रायः छे. भूमिका अंग्रेजीमां आपी ते योग्य ज कर्युं छे. आ ग्रन्थकारनी कृतिओनी सूचि आपी छे ते अधूरी छे. अहीं नोंधी छे ते सिवायनी बीजी कृतिओ पण एमना नामे छे - **'जंबू अज्झयण'** वगेरे.

जीवितस्वामी रासः शब्दकोश- १५/४ : 'अड्युं' बरोबर छे. अर्थ छे 'अरक्युं. २४/३. 'जंजीरो' आनो अर्थ 'खाडी' नहीं, 'खाडी के समुद्रमां रहेलो किल्लो' आवो कंइक होवा संभव. महाराष्ट्रना दरियामां 'जंजीरा'नो दुर्ग छे. मराठी कोश तपासवो पडे. 'खंभात' साथे पण समुद्रनो सम्बन्ध छे. आथी 'जंजीरो' वहाणवटा साथे जोडायेल शब्द छे अने गुजरातमां पण प्रचलित हशे. ३२/९ : 'उपहरती' : 'ऊंचकती', 'उचकीने लावती' एवो अर्थ संगत थाय. 'आगळ धरती' (मूकती) ए वात पण आगळ छे ज.

रासनी भाषा खम्भात प्रदेशनी छे. कविए ते वखतनी प्रादेशिक बोलीमां रचना करी छे. ए युगमां कोई मान्य गुजराती भाषा-Standard निश्चित थई नहोती. कवि पोताना जनपदनी रूढ भाषामां ज रचना करे. आ रासमां जोडणीमां फेरफार देखाय छे ते फेरफारो लहियाए कर्या छे. एवुं मानवुं ठीक

नथी. आखी रचनामां जो कोई चोक्कस लढण जोवामां आवतुं होय तो ते कविनी प्रादेशिक बोलीनो प्रभाव छे एम मानवुं पडे. 'आव्यो' ने स्थाने काठियावाडमां 'आयवो' आजे पण बोलाय छे, तेनी जेम. आधारभूत प्रति कर्त्ताना विद्यमान काळनी छे अने लिपिकार एक साधु छे तेथी लेखनभूलोनी शक्यता अल्प गणाय. कविए 'जेवुं बोलाय एवुं लखाय' ए सूत्रनुं अनुसरण कर्युं छे, तो लिपिकारे 'यादृशं पुस्तके दृष्टं, तादृशं लिखितं मया' ए परिपाटी निभावी छे, ज्यारे सम्पादके 'जोडणीने जेमनी तेम राखवी' एवा सम्पादक धर्मनुं पालन कर्युं छे.

'**योगसार बालावबोध**' आ अङ्कनी प्रमुख कृति गणाय. मूल ग्रन्थ तो पूर्वप्रकाशित छे परन्तु तेना उपर बालावबोध अहीं सर्व प्रथम वार प्रगट थाय छे. योगीन्दुदेवनी कृति समजवा माटे आ बालावबोध सहायक थशे. पाठ शुद्धप्रायः छे, पण बाला०मां थोडां स्थान सुधारवापात्र देखाय छे.

पृ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
४७	नीचेथी २	ते पिण	ते-पणि

(अहीं पिण(परंतु) शब्द अपेक्षित नथी, परन्तु '-पणुं' ना अर्थमां 'ते-पणुं'नुं तृ-ए.व. 'ते-पणि' (ते रूपे) सुसंगत थाय छे.

५७	३	गुरुहु	गुरुह
५७	१६	णएइ	ण एइ
५९	१०	दोहामां 'मणु' पछी 'गलइ वधारानुं जणाय छे.	
५९	१०	अप्पहउ	अप्पहिउ
६१	६	फुड्डु	फुडु
६१	नीचेथी १	णासग्रे	णासग्गे
	(संयुक्त ग्ग, कोई जमानामां ग्र जेवो लखातो)		
६२	७	सुसरीरु	ससरीरु

६२ दोहा ६१ना उत्तरार्धनो बाल० गाथानुसारी नथी. ''मिथ्या मोहनो परित्याग कर, मूर्तिने-शरीरने पोतानुं न मान'' – एवो अर्थ समजाय छे, बाला०मां एथी उलटुं छे.

६४	४	मरइक्क	मरइ (क्क वधारानो छे)
६४	१२	जाइ सिहि	जाइसिहि
६४	नीचेथी २	सुणिम्मिय	सुवण्णमय (?)

गाथामां लोहमय अने सुवर्णमय बेडीनी वात छे, पण गाथामां 'सुवर्णमय' अर्थसूचक शब्द नथी; लागे छे के 'सुवण्णमय'नुं 'सुणिम्मिय' थइ गयुं होय.

६५	नीचेथी ५	अणु	अण्णु

त्रण पद्यरचनाओ : प्रथम रचनामांनो 'सलतुल' (क. ८) शब्द भूलथी आव्यो लागे छे. सन्दर्भ जोता आनो अर्थ 'तुल्य, समान' स्पष्ट समजाय छे. संभव छे के अहीं समतुल शब्द होय अने पछी भूलथी 'सलतुल' वंचायो (के लखायो) होय. क. १२मां 'वहुर' छे ते 'बहुरि'नुं रूपान्तर छे; आगळ जतां आनुं 'बेर' थयुं. (अवसर बेर बेर नहि आवे.) क. १५ अने २१मां 'परीसा' छे ते 'परिषह'नुं भ्रष्ट रूप छे. क. १५मां 'परीसा पडि सो' वांची शकाय. क. २१मां 'परीसा पडै सो' स्पष्ट ज छे. क. २५नुं त्रीजुं चरण 'तेरे चरण पर बल बल गया हुं' ए रीते होवानी शक्यता छे. 'बल जाऊं' (बारी जाऊं) एवो हिन्दी प्रयोग छे ज.

जैन देरासर
नानी खाखर
(कच्छ)

बे प्रकीर्ण रचनाओ

– शी.

फुटकळ पानांमांथी मळेली बे संस्कृत लघु रचनाओ अहीं आपी छे. पहेली 'उक्तिकारिका' छे, ते सं. व्याकरण-सम्बद्ध अने १३ पद्यप्रमाण रचना छे. व्याकरणमां 'उक्त-अनुक्त' कारकनी वात आवे छे. कर्ता, कर्म अने भाव – आ त्रण उक्त के अनुक्त होय त्यारे कई विभक्ति प्रयोजाय, ते विषयने आमां निरूप्यो छे. अभ्यासीओने आनाथी आ विषय सुगमताथी समजाय तेम छे. १२मा पद्य प्रमाणे 'हेरम्ब'ना भक्त **'हरि'** नामना पण्डिते आ कारिकाओ रची छे. १३ मा पद्यानुसार सं. १८०९ मां आ रचना थई छे. १२मा श्लोकमां प्रयुक्त 'कुंची' शब्द ध्यानार्ह छे.

बीजी रचना 'श्रीविजयक्षमासूरिस्वाध्याय' छे. पं. जीवविजयजीए रचेल गेय पद्यात्मक आ रचना तपगच्छपति आचार्यना गुणगानस्वरूप रचना छे. आठ कडीनी गेय रचना प्रासादिक छे.

*

हरि–पण्डितरचिता

उक्तिकारिकाः

कर्ता कर्म च भावः, प्रोक्ता विद्वद्भिरुक्तयस्तिस्रः ।
आख्यातेन कृतापि च, द्वौ द्वौ भेदौ प्रकीर्त्तितौ तासाम् ॥१॥
कञ्चिद्धात्वभिधेयं, यः कुरुते स तु निगद्यते कर्त्ता ।
कर्म क्रियाफलं स्याद् धात्वर्थो भाव इष्यते शुद्धः ॥२॥
यत्रोक्तः स्यात् कर्ता-ऽनुक्तं कर्म प्रयुज्यते तत्र ।
उक्ते कर्मणि सद्भिः, कर्त्ताऽनुक्तः प्रयोक्तव्यः ॥३॥
कर्त्तरि कर्मणि चोक्ते, प्रथमाऽनुक्ते पुनस्तृतीया स्यात् ।
क्रमतस्तथा द्वितीया, विवक्षया तत्र वचनानि ॥४॥
संख्यां वाच्यनिविष्टां, कर्तरि कर्मणि च वाचको याति ।
यत्र प्रकृतिविकृत्यो – रुक्तिस्तत्रान्वियात् प्रकृतिम् ॥५॥
कर्तरि कर्मसनाथाः, कर्मविहीनाश्च धातवो ज्ञेयाः ।
कर्मणि भावे च बुधैः, पुनरप्येते क्रमादूह्याः ॥६॥
कर्त्तरि पदद्वयं स्यात्, कर्मणि भावे तथोत्तरं नियतम् ।
नाम्नि च युष्मदि चास्मदि, पुरुषाः स्युः कर्तृकर्मणोः प्रथमात् ॥७॥

तेषामव्यवधानात्, पुरुषविशेषः प्रयोजनीयोऽत्र ।
नाम्न व्यवहितमाभ्यां, मध्यं चान्त्येन, तन्न केनापि ॥८॥
भावस्य त्वेकत्वा-देकवचनमेव पूरुषस्यादेः ।
कर्मणि गौणे प्रथमा, दुह्यादेः स्यादथापरे न्यादेः ॥९॥
धातोर्ज्ञानाद्यर्थ ञ्य(?स्य) तस्य स्यादिहेच्छया वक्तुः ।
तस्मादन्यतरस्य ञ्यं(?च?) तस्याथ प्रयोज्य एव स्यात् ॥१०॥
कस्माच्चिदपि गुणाच्चेत् स्वयमिह कर्मैव कर्तृतां याति ।
तर्ह्यपि तत्र प्रथमा, कर्मोक्तेरेव भेदोऽयम् ॥११॥
इति शिशुबोधाय मया, **हरिणा हेरम्बभक्तेन** ।
उक्त्युद्घाटनकुंची, किञ्चिदियं कारिकाऽकारि ॥१२॥

इत्युक्तिकारिकाः ॥

अङ्कव्योमेभभूवर्षे (१८०९)शुचौ मासे शुचौ दले ।
कारिका उक्तिसंवित्ते-र्लिखिता उक्तिकारिकाः ॥१३॥

*

श्रीविजयक्षमासूरिस्वाध्यायः ॥

कर्ता : श्रीजीवविजयः

भजत **विजयक्षमासूरिभट्टारकं**, चरणकरणक्रियासाधुकारम् ।
रञ्जिताशेषसामाजिकं मधुगिरा, रामणीयकगुणश्रेण्यगारम् ॥१॥ भ० ॥
श्रद्धया विद्यया ब्रह्मचर्येण च, वज्रमुनिस्थूलभद्रावतारम् ।
नृपतिपुण्याढ्यवत् प्रगटपुण्योदयं, धन्यमुनिवत्तपःशक्तिधारम् ॥२॥ भ० ॥
श्रीसुधर्माऽऽर्यजम्बूप्रभुप्रमुखसत्-सम्प्रदायागताम्नायसारम् ।
श्रीविजयरत्नसूरीशपट्टाम्बर,- प्रोल्लसत्तिग्मकिरणानुकारम् ॥३॥ भ० ॥
दुःखदौर्भाग्यदीनत्वनिर्नाशनं, व्यापदापल्लतावनकुठारम् ।
सेवकोद्यन्मनोऽभीष्टशिष्टार्थदं, शीललीलानलप्लुष्टमारम् ॥४॥ भ० ॥
श्रीजिनोक्ताज्ञया नैगमाद्यैर्नयै-र्भङ्गसङ्गैर्धृतागमविचारम् ।
प्रत्यहं शुद्धधर्मोपदेशान्नृणां, ध्वस्तनिःशेषकुमतान्धकारम् ॥५॥ भ० ॥
शुद्धबुद्ध्या धृतैः सत्तपोभिः पुरा, सञ्चिताशेषसुकृतैकभारम् ।
तैरुदीरितवता स्फीतभाग्योदये, प्राप्तमिह वीरपट्टाधिकारम् ॥६॥ भ० ॥
रोहणं रत्नजातैर्नभस्तारकै-र्जलसमूहैरिवाऽवारपारम् ।
अमितसंख्यं गरीयस्तरैर्गुणगणैः, **श्रीतपागच्छे** मुख्यं सितारम् ॥७॥ भ० ॥
कुमुदिनीकान्तकलकीर्त्तिशुक्लीकृत-क्षितितलं निर्जितेन्द्रियविकारम् ।
भूरिभूपालनतपत्कजं भक्तिभृ-**ज्जीवविजयो**दितः(त)स्तुतिमुदारम् ॥८॥ भ० ॥